असम साहित्य-सभाका इतिवृत्त
असम साहित्य-सभा

असम साहित्य-सभाका इतिवृत्त

असम साहित्य-सभा

असम साहित्य-सभाका इतिवृत्त

लेखक — बापचन्द्र महन्त

प्रकाशक — असम साहित्य-सभा
जोरहाट-७८५००१ असम

प्रिण्टर्स — अन्नदा प्रिण्टिंग हाउस
जोरहाट, असम

मूल्य — ६ रुपया

प्रथम प्रकाश
ई० १९७६

प्रकाशन के सम्बन्ध में

असम साहित्य-सभा के सम्बन्धमें असमके बाहरके लोगोंको भी कुछ पता चले—इस उद्देश्यसे असम साहित्य सभाका एक इतिहास हिन्दीमें प्रकाश करनेका सिद्धान्त साहित्य सभाकी तरफसे किया गया और श्रीबापचन्द्र महन्तको 'असम साहित्य-सभा का इतिवृत्त' लिखने का भार सौंपा गया। प्रस्तुत पुस्तक श्री महन्त ने असम साहित्य सभाके प्राक्तन सभापति श्रीअतुलचन्द्र हजारिकाकी पुस्तक 'असम साहित्य सभार रूपलेखा', डॉ० महेश्वर नेओग की 'Annals of Asam Sahitya Sabha' तथा आब्दुल छत्तार और श्रीवसन्त कुमार गोस्वामी की 'असम साहित्य सभार अभिलेख' के आधार पर प्रस्तुत की है। श्रीमहन्त और सहयोगियोंके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। पुस्तक के प्रचार से ही हम अपना श्रम सफल मानेंगे।

श्री लीला गगै
प्रधान सम्पादक
असम साहित्य सभा
जोरहाट ३-३-७६

लेखक के दो शब्द

असम साहित्य-सभाकी कार्यपालिकाने हीरकजयन्तीके उपलक्ष्यमें कुछ ग्रन्थ प्रकाशित किये। उन ग्रन्थोंके साथ असम साहित्य सभाका इतिवृत्त असमीया और हिन्दी दोनों भाषाओंमें प्रकाशित करनेका विचार था। उसके अनुसार असमीया भाषामें "असम साहित्य सभार रूपलेखा' प्रकाशित हुआ। "Annals of Asam Sahitya Sabha' नामसे साहित्य सभाका इतिवृत्त अंग्रेजी भाषामें ई: १९७६ में ही प्रकाशित हुई थी ; पर हिन्दी पाण्डुलिपि हीरक जयन्ती उत्सव-तक नहीं बनी। १९७७ के दिसम्बर २६ और २७ तारीखको हीरक जयन्ती उत्सव-पालनके बाद १९७८ के जनवरी महीनेमें ही असम साहित्य सभाका इतिवृत्त हिन्दीमें लिखनेका दायित्व मुझे लेना पड़ा ; किन्तु उसके लिए मेरे पास सामग्री मौजूद नहीं थी। अतः Annals of Asam Sahitya Sabha और 'असम साहित्य सभार रूपलेखा' इन दो पुस्तकोंके सहारा लिए विना और अन्य उपाय नहीं था। साहित्यसभाके प्रधानसचिव श्रीआब्दुल छत्तार और सहायक सचिव श्रीवसन्त कुमार गोस्वामी द्वारा सम्पादित 'अभिलेख' [असम साहित्य सभाका] से भी थोड़ी सामग्री ली गई। इन तीनों पुस्तकोंसे तथ्योंका संग्रह कर पुस्तकके रूपमें उपस्थित करने तथा सन्तुलित रूप देनेके लिए जो कष्ट उठाना पड़ा, उसका श्रेय श्रीमती केशदा महन्त-को मिलना चाहिए। मैंने अधिकांश श्रीमती महन्तके द्वारा संगृहीत तथ्योंका हिन्दी अनुवाद ही किया है।

अनुवादमें एक बातकी ओर ध्यान रखा गया है कि— व्यक्तियोंके तथा स्थानोंके नाम यथा सम्भव असमीया वर्तनीके अनु-सार रखनेकी कोशिश की गई ; पर हिन्दीमें प्रचलित वर्तनी कहीं

कहीं उससे कुछ भिन्न रूपमें मिलती है। जैसे— असमीया गुवाहाटी, तिनिचुकीया, फुकन, धुबुरी आदि शब्दोंके उच्चारण हिन्दीमें प्रायः गौहाटी, तिनसुकीया, फूकन, धुबड़ी होते हैं और उसी प्रकार लिखते भी हैं। इस पुस्तकमें असमीया रूपही रखा गया। 'जोरहाट' का असमीया रूप 'योरहाट' है; किन्तु 'य' का उच्चारण असमीयामें 'ज' होता है; इसलिए वह अंग्रेजीमें Jorhat लिखा जाता है। हिन्दी वर्तनीमें 'योरहाट' लिखा जाय, तो उच्चारणमें 'Yorhat' की गड़बड़ी होगी। अर्थके अनुसार हिन्दीरूप जोड़हाट हो सकता है; पर यहाँ य>ज मात्र कर असमीया रूपको अधिक बिगड़ने नहीं दिया। हाँ असमीया 'डिब्रुगड़' शब्दको 'डिब्रूगढ़' कर हिन्दी वर्तनीके अनुसार ही लिखा गया। क्योंकि इस वर्तनी-परिवर्तनसे अर्थ परिवर्तन या व्युत्पत्ति विषयक गड़बड़ीकी सम्भावना नहीं। 'डिब्रु'-शब्द संस्कृत मूलका नहीं। इसलिए 'डिब्रू' लिखनेपर भी किसी प्रकारका अर्थ विपर्यय नहीं होगा। 'गड़' शब्द भी हिन्दीके 'गढ़' से आया है। अतः 'गड़'के स्थानमें 'गढ़' अधिक अर्थसूचक है। असमीया वर्णविन्यासके अनुसार 'नगाओं' शब्द भी यहाँ 'नगाँव' रखा गया। तो भी इस प्रकार की उच्चारण तथा वर्णविन्यास विषयक बातोंमें मतानैक्य होना अस्वाभाविक नहीं।

असम साहित्य सभाका इतिवृत्त विषयक असमीया पुस्तक जिन पाठकोंके लिए है, हिन्दी और अंग्रेजी पुस्तकें उन पाठकोंके लिए नहीं हैं। अंग्रेजी और हिन्दीके पाठकोंकी असमकी सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति तथा असम साहित्य-सभा सम्बन्धी जानकारी नहीं होती। अतः उनके लिए कुछ व्याख्याओंकी और टिप्पणियोंकी आवश्यकता होती है। इस पुस्तककी रचना कम समयमें की गई; इसलिए गैरअसमीया पाठकोंके लिए जिन बातोंकी ओर ध्यान रखना उचित था, उन बातोंकी ओर ठीक ठीक ध्यान नहीं रख सका। भौगोलिक स्थितिको समझनेके लिए एक मानचित्र अवश्य दिया है। तो भी त्रुटियाँ बहुत सी रहेगी; — उसमें सन्देह नहीं। अनिच्छा-जनित उन त्रुटियोंके लिए पाठकोंसे क्षमा चाहता हूँ।

जोरहाटके राष्ट्रभाषा विद्यालयके सहायक प्रधान शिक्षक श्रीरमाशंकर रायने इस पुस्तक के भाषापुनरीक्षणका दायित्व वहन किया। इसलिए लेखक श्रीरायजीके पास कृतज्ञ रहेगा। असम साहित्य-सभाका इतिवृत्त जाननेके लिए साहित्य सभाने भी मुझे इस कामके द्वारा वाध्य किया है। अतः साहित्य सभाके प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ। इति—

बापचन्द्र महन्त
गोहाँइ टेकेलागाँव
जोरहाट—२
पिन—७८५००२
जिला—शिवसागर, असम।
जनवरी—३१, १९७८

सूचीपत्र

पंचम अध्याय :

षष्ठ अध्याय :

असम साहित्यसभाका इतिवृत्त

प्रथम अध्याय

असम साहित्यसभा :—असम साहित्यसभा असमकी सांस्कृतिक तथा सामाजिक सभी संस्थाओंमें सबसे जनप्रिय है। कुछ वर्षोंसे इसकी जनप्रियता इतनी बढ़ रही है कि लाखोंकी संख्यामें लोग इसके वार्षिक अधिवेशन को देखने आते हैं। इस अवसर-पर जितनी बड़ी संख्यामें लोग इकट्ठे होते हैं, असमके और किसी दूसरे अवसरपर हर साल इस प्रकार इकट्ठे नहीं होते। साहित्य सभाके वार्षिक अधिवेशनके इस जनसमावेशके मूलमें सभाकी जो जन-प्रियता छिपी हुई है, वह आकस्मिक नहीं। उत्तरोत्तर बढ़नेवाली इस जनप्रियताके मूलमें असमभूमिकी जनताके सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रयोजन काम कर रहा है। इसलिए असम साहित्यसभाके इतिवृत्तको असमके जनसमूहके सामाजिक तथा सांस्कृतिक संगठनका इतिवृत्त कहना अनुचित न होगा।

साठ वर्ष पूरे होनेपर गत २६।२७ दिसम्बर १९७७ को साहित्य-सभाकी हीरकजयन्ती बड़ी धूम-धामसे मनाई गई। जोरहाट शहरके केन्द्रीय कार्यालयके अतिरिक्त असम राज्यके भिन्न भिन्न स्थानोंकी साहित्यसभाकी शाखाओंके द्वारा भी यह उत्सव मनाया गया। इस हीरकजयन्ती समारोहके अवसरपर आनन्द उत्सव मनानेके साथ साथ इसके बीते हुए साठ वर्षोंके विविध कार्योंका स्मरण तथा पुनरीक्षण

भी आवश्यक समझा गया है, जिससे हमें आगे बढ़नेके लिए प्रेरणा मिल सके। असम साहित्यसभाका इतिहास असम भूमिके जन-समूहकी आत्मप्रतिष्ठाके लिए किए गये संग्रामका भी इतिहास है। असमवासियोंकी दृढ़ता, ऐक्य तथा त्यागकी एक सुदीर्घ परम्परा इनमें छिपी हुई है। विविध कठिन परिस्थितियों तथा अनिश्चित परिणामोंके घात-प्रतिघातोंको सहते हुए आगे बढ़नेवाले असम साहित्य-सभाके सबल पदक्षेप असमके जनसमूहके हृदयोंको भी सबल बनानेमें समर्थ प्रमाणित हुआ है और सामूहिक प्राणोंके स्पन्दनके लिए साहित्यसभा दुर्जेय प्राणशक्तिका काम कर रही है। इसकी वाणीमें असमभूमिके जनसमुदायके हृदयकी वाणी सुनाई पड़ती है।

किसी विशेष राजनैतिक दल तथा धर्मीय सम्प्रदायके प्रभावसे मुक्त रहकर प्रारम्भसेही अबतक साठ वर्षोंतक यह संस्था असमके साहित्य और असमकी भाषा-संस्कृतिकी सर्वांगीण उन्नतिके लिए भरसक प्रयत्न करती आ रही है। समूचे उत्तर-पूर्व भारतके राष्ट्रीय संहति-साधन और आवेगिक ऐक्य स्थापनके क्षेत्रमें इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। यहाँ उल्लेखनीय है कि अबतक बहु संख्यक गैरअसमीया भाषाभाषी लोग भी इस संस्थाके साधारण सदस्यही नहीं, आजीवन सदस्य भी बन चुके हैं। पूर्वोत्तर भारतमें बसे हुए विविध धर्मीय सम्प्रदायों और भिन्न भिन्न जनगोष्ठियोंके बीच पारस्परिक मेल-मिलाप तथा सम्बन्ध बढ़ानेकेलिए भी साहित्य-सभाकी तरफसे यथासम्भव प्रयत्न किया जा रहा है। अपने राज्यक्षेत्रकी तथा राज्यिक भाषाकी सेवाके द्वारा सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीयताकी सेवाके लिए असमवासियोंको निरन्तर प्रेरित करना असम साहित्यसभाकी एक श्लाघनीय विशेषता है। ऐसी असम साहित्यसभाके साठवर्षीय दीर्घकालीन इतिवृत्तमें

संस्थाके साहित्य-संस्कृति विषयक प्रयासोंका एक साधारण चित्र प्रस्तुत किया जा रहा है; पर असम साहित्य-सभाके जन्मके पूर्व असमकी भाषा और साहित्यकी सामाजिक पटभूमि कैसी थी, इतिहासके आधारपर उसका एक संक्षिप्त परिचय पाठकोंके सामने रखना आव-श्यक जान पड़ता है।

ऐतिहासिक पटभूमि :—ई० १८२६ के यंडाबु समझौतेके अनुसार ब्रह्मपुत्र उपत्यकाका आहोम राज्यक्षेत्र वर्माके राजासे इष्टइंडिया कम्पनीको मिला। १८ वीं शताब्दीके प्रथम भागसेही आहोम राज्यकी स्थिति बिगड़ने लगी। राजवंशके लोगोंमें गृहकलह और प्रजाविद्रोह आदि बहुत से कारणोंसे राज्यमें अराजकताकी अवस्था भी कभी कभी हुआ करती थी। अन्तमें एक आहोम कर्मचारी बदन बरफुकनके बुलानेपर वर्माके राजाने ई० शती १६ वीं के पहले भागमें अपनी सेना भेजकर असमके आहोम राज्यपर आक्रमण करवाया। उस समय वर्माके लोगोंको असमके लोग 'मान' कहते थे। मानोंके आक्रमण तथा लुंठनके समयमें असमकी प्रजापर कैसा पाशविक अत्याचार हुआ था, उसकी याद दिलानेपर आज भी भयसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। नादिरशाहकी दिल्ली-लुटनेकी कथासेही उसकी तुलना की जा सकती है। आहोम राज्यपर अपना अधिकार जमानेके बाद अत्युत्साही वर्माकी सेनाने आस-पासके इष्टइंडिया कम्पनीके अधीन कुछ स्थानोंपर भी चढ़ाई कर दी। उसके फल स्वरूप वर्मा और अंग्रेज-कम्पनीके बीच झगड़ा शुरू हुआ। अन्तमें १८२६ ई० के यण्डाबु समझौतेके अनुसार आहोम राज्य इष्ट इंडिया कम्पनीके शासनमें आया।

मानोंके अत्याचारसे बचकर अंग्रेजोंके शासनकालमें आहोम राज्यकी साधारण प्रजाको प्रशासनीय शान्ति मिली ; किन्तु अंग्रेजके

नामपर कम्पनीके शासनके साथ साथ जो बंगाली कर्मचारी आए, उनके बहकावेमें आकर अंग्रेज शासकोंने असमकी अपनी भाषा हटा कर उसकी जगहपर प्राथमिक स्तरकी पाठशालाओंतक में और अदालतोंमें भी बंगाली भाषाके प्रयोगका आदेश दे दिया। बंगाली कर्मचारियोंने शासकोंको समझा दिया था कि—असमकी प्रजा जो भाषा बोलती है, वह बंगाली भाषाकी एक बिगड़ी हुई बोली या अपभ्रंश सी है। उसमें कुछ भी लिखित साहित्य नहीं। कम्पनीके अंग्रेज शासकोंने कर्मचारियोंकी यह बात मान ली, जिसका परिणाम यह हुआ कि—आहोमोंके शासन-कालसे बिगड़ी हुई असमकी शिक्षा-संस्कृति तथा साहित्य और समाजकी स्थिति अधिक बिगड़ने लगी। साथही साथ आर्थिक स्थितिपर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ने लगा।

ई० १८३५ को पहले पहल अमरीकी बैपटिस्ट मिशनके कर्मी असम पहुँचे। मिशनके कर्मियोंने उस समय असमीया भाषा और साहित्यकी जो सेवा की, वह असमवासियोंके लिए चिरस्मरणीय बनी रहेगी। इस क्षेत्रमें उन्होंने तीन मुख्य कार्य किये।

(१) असमीया भाषामें पहला व्याकरण और पहला शब्दकोश प्रकाशित किया।

(२) ई० १८४६ से 'अरुणोदय' नामक असमीया मासिक पत्रिका शिवसागर शहरसे निकालकर असमीया भाषामें सर्वप्रथम संवाद-साहित्यका श्रीगणेश किया।

(३) असमकी भाषा बंगाली नहीं। यहांकी भाषा बंगालकी भाषासे भिन्न है और यह भाषा शिक्षा तथा प्रशासनीय कार्योंमें व्यवहारके योग्य और नवीन युगके उपयोगी साहित्य-रचनाके लिए उपयुक्त व समृद्ध भी है—यह तथ्य शासकोंको समझानेका प्रयत्न भी उन्होंने

ही पहले पहल किया। इस प्रसंगमें रेवरेंड माइलस ब्रन्सनके शब्द-कोशकी भूमिकामें लिखी हुई यह उक्ति मिशनरियोंके अच्छे विचारोंके उदाहरणके रूपमें ले सकते हैं। माइलस ब्रन्सनने लिखा है—"एइ दरे प्राय ३० बछर ग'ल ; किन्तु असमिया भासा ब्रह्मपुत्र नदिर सोँतर निचिनाकै राज्यर माजत एके दरे चलि आचे आरु आगलैको थाकिब। [इस प्रकार करीब ३० वर्ष बीत गये ; किन्तु असमीया भाषा ब्रह्मपुत्र नदके स्रोतकी भाँति इस राज्यमें पहलेकी तरह चल रही है और बादमें भी चलती रहेगी]

असमीया भाषामें मिशनरियोंने कुछ उपन्यास भी लिखे हैं। अरुणोदय पत्रिकामें मिशनरियोंके दिखाये गये रास्तेपर कुछ असमीया भाषाभाषी लेखक भी आगे बढ़ने लगे। आनन्दराम ढेकियाल फुकनको इन मिशनरियोंसे काफी प्रेरणा और सहयोग मिली। ये आनन्दराम ढेकियाल फुकनही सर्वप्रथम असमवासी हैं, जो सरकारी नौकरी करते हुए भी सरकारकी भाषा-नीतिकी आलोचना करते थे और छद्म नामसे असमकी समस्याओंके सम्बन्धमें प्रचार करनेके लिए पुस्तक भी निकालते थे। सचमुच ढेकियाल फुकन उस समयके असमवासियोंके सर्वप्रथम नेता थे। फुकनजीके बाद असमीया भाषाके सर्वप्रथम प्रामाणिक शब्दकोश तथा व्याकरणके प्रणेता हेमचन्द्र बरुवा, गुणाभिराम बरुवा, लम्बोदर बरा प्रभृति दो-चार और व्यक्तियोंने इस दिशामें महत्त्वपूर्ण कार्य किया। बैपटिस्ट मिशनरियोंके साथ इन सज्जनोंके अथक परिश्रमके फल स्वरूप ई० १८७३ में पुनः असमके विद्यालयोंमें और विचारालयोंमें असमीया भाषाके प्रचलनकी आज्ञा मिली ; पर उसको कार्यान्वित होनेमें और करीब तीस वर्ष लगे।

प्राथमिक शिक्षाके माध्यमके रूपमें असमीया भाषा स्वीकृत होनेपर इसमें पाठ्य पुस्तकोंकी रचना आदि कुछ प्रारम्भिक दायित्व

सामने आया और उस दायित्व का निर्वाह असमीया लेखकोंने सफलता पूर्वक किया। पर गंभीर मानवीय उपलब्धिके उपादानोंसे समृद्ध साहित्य-सृष्टिकी नवीन प्रेरणा तबतक असमीया भाषाके लेखकोंमें बहुत कम थी।

अ० भा० उ० सा० आदि संस्थाएँ और 'जोनाकी' पत्रिका :—ई० शती १६ वीं के अन्ततक असम राज्यमें एकभी कॉलेज नहीं था। असमके विद्यार्थी तब जाकर कलकत्तेमें पढ़ते थे। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा, चन्द्रकुमार आगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी, पद्मनाथ गोहाञिबरुवा, राधानाथ फुकन प्रभृति उस समयके विद्यार्थी कलकत्तेमें पढ़ने गये थे। असमीया भाषा और साहित्यकी उन्नति-केलिए उन विद्यार्थियोंने भरसक कोशिश की। 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी सभा' (संक्षेपमें वह अ० भा० उ० सा० कहलाती थी) की स्थापना इसी उद्‌देश्यसे उन्होंने ई० १८८८ के अगस्त महीनेमें की। जिस उद्‌देश्यसे प्रेरित होकर तत्कालीन कलकत्तानिवासी विद्यार्थीगण अ० भा० उ० सा० के काममें कटिबद्ध होकर जुट गये, मानो उसी उद्देश्यकी सिद्धिमेंही बादको असम साहित्यसभा भी संकल्पबद्ध हुई। अ० भा० उ० सा० के उद्देश्यके सम्बन्धमें उसके प्रतिष्ठापक सम्पादक [असममें मन्त्री अथवा सचिवके अर्थमें भी 'सम्पादक' शब्दका प्रयोग होता है] लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाने अपने जीवनके संस्मरण-प्रसंगमें इस प्रकार लिखा है—"एइ सभार उद्देश्य हैछे असमीया भाषार उन्नति साधन करा। सेइ उद्देश्य रूप महामन्त्रक ठाइ दि एइ सभाइ 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी' नाम लै उपजिछे। केँचुवा मातृभाषा केनेकै डाङर-दीघल ह'ब, केनेकै सि पृथिवीर आन आन धनी उन्नतिशील भाषार समान है आपोन गौरवर बेलिर पोहर चारिओफाले पेलाइ

दुखीया आरु एन्धार असमर मुख उजलाब पारिब ; केनेकैं सि दुर्बल रुगीया आरु जीर्ण अवस्थार परा सबल सुस्थ आरु शकत अवस्था पाब, तार उपाय साधनेइ एइ सभार उद्देश्य।"

उद्धृत अंशका भावानुवाद ऐसा है—"असमीया भाषाकी उन्नतिके लिए काम करनाही इस सभाका उद्देश्य है। इस उद्देश्यकी ओर ध्यान रखकर ही सभाका जन्म हुआ और नामभी 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी' उसका रखा है। नन्ही सी मातृभाषा किस प्रकार बड़ी बन सकेगी, किस प्रकार वह संसारकी दूसरी समृद्ध तथा उन्नत भाषाओंकी भाँति अपने गौरव-सूर्यकी किरणें चारों और फैलाकर निर्धन तथा अन्धेरेसे घिरे हुए म्लान असमका मुख समुज्ज्वल बना सकेगी, किस उपायसे वह दुर्बल, रुग्न और जीर्ण अवस्थासे मुक्त होकर सबल स्वस्थ तथा परिपुष्ट अवस्था पा सकेगी, उस उपा-यकी खोज करना और उपायके अनुसार काम करनाही इस सभाका उद्देश्य है।"

भाषाके शुद्ध रुपकी ओर ध्यान रखना, असमकी पाठशाला-ओंमें असमीया भाषाका प्रचलन अनिवार्य करनेके लिए आन्दोलन करना, पुरानी पोथियोंकी खोज तथा टिप्पणी सहित प्रकाश करना आदि बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य सभाकी कार्यपन्थाके अन्तर्भुक्त थे। सभाने नयी-पुरानी दोनों प्रकारकी असमीया पोथियोंकी एक तालिका भी निकाली। ई० १८८६ के प्रारम्भसे चन्द्रकुमार आगरवालाकी[1] अपनी

---

[1] असममें कम्पनीशासनके प्रारम्भमेंही राजस्थानसे 'नवरंग' नामक एक गरीब व्यक्ति व्यवसायकी इच्छालेकर आये थे। उन्हों ने असममें यथेष्ट आर्थिक उन्नति की। उसके बेटे हरिबिलास आगरवालेने पुरानी असमीयाकी बहुतसी पोथियाँ प्रकाशमें लाकर असमीया समाज तथा साहित्यकी बड़ी सेवा की।

व्यवस्था और सम्पादनामें 'जोनाकी' नामक मासिक पत्रिका कलकत्तेसेही निकलने लगी। ई० १८८८ से पहले ही 'अरुणोदय'का प्रकाशन बन्द हो चुका था और मिशनरियोंका प्रयास भी क्षीण होने लगा था। अतः 'जोनाकी' पत्रिकाके प्रकाशनसे एक नये युगका प्रारम्भ हुआ। उसी समय [अ० भा० उ० सा० की स्थापनाके बाद] ए० एस० एल० क्लब (Assam Students Literary Club) नामक दूसरी एक संस्था भी कलकत्तामें बनी। ई० १९०० में जब गुवाहाटीमें कॉटन कॉलेजकी स्थापना हुई, तब इस क्लबकी एक शाखा गुवाहाटीमें भी खोली गई।

उन्नीसवीं शतीके अन्तिम दशकमें 'जोनाकी' पत्रिकाके व्यवस्थापक और सम्पादक तथा अ० भा० उ० सा० के कर्मी सदस्यगण पढ़ाई पूरी करके अपने अपने स्थानको कलकत्तेसे वापस आये। तब जोनाकी पत्रिकाका प्रकाशन तीन वर्षोंतक गुवाहाटीसे होता रहा। उस पत्रिकाके द्वारा रोमाण्टिक काव्यधाराका प्रवर्तन असमीया साहित्यमें किया गया। चन्द्रकुमार आगरवाला, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और हेमचन्द्र गोस्वामी इस धाराके मुख्य प्रवर्तक कवि माने जाते हैं।

साहित्यसभाकी पूर्वप्रस्तुति :—बीसवीं शतीका प्रारम्भ होते ही 'जोनाकी' पत्रिकाका प्रकाशन बन्द हुआ ; उस समय तक असमके अन्यान्य शहरोंसे भी असमीया भाषामें कुछ पत्रिकाएँ निकलने लगी थी। अतः सामाजिक चेतनाका विकास हो रहा था और असमीया साहित्य भी धीरे धीरे भिन्न भिन्न दिशाओंमें विकसित

चन्द्रकुमार आगरवाला हरिविलासके पुत्र थे। नवरंगके अन्यान्य बेटोंके वंशज आनन्दचन्द्र और ज्योतिप्रसाद भी असमीया साहित्य और समाजके सेवकके रूपमें बहुत उच्चस्थानके अधिकारी बने। कविताके क्षेत्रमें चन्द्रकुमारको संगीत तथा नाटकके क्षेत्रमें ज्योतिप्रसादको पथप्रदर्शक माना जाता है।

होने लगा था। ऐसी स्थितिमें असमके कुछ मुख्य शहरोंके शिक्षित लोगोंके मनमें ब्रह्मपुत्र उपत्यकाके सभी जिलोंको समेटकर भाषा-साहित्य विषयक एक संगठनकी आवश्यकता अनुभव होने लगी। ई० १९१४ को गुवाहाटीमें अ० भा० उ० सा० सभाकी एक बैठकमें असमके राष्ट्रीयतावादी नेता चन्द्रनाथ शर्माने इस विषयपर एक प्रस्ताव भी रखा। प्रस्तावकी आलोचनामें कालिराम मेधि, अम्बिकागिरि रायचौधुरी आदि प्रतिष्ठित साहित्यकारोंने भी भाग लिया ; पर किसी निश्चित निर्णयपर न पहुँच सके।

ई० १९१५ के जुलाई महीनेमें जोरहाटमें असम उपत्यकाके कमिशनार कर्नेल पी० आर० टी० गर्डनके प्रयत्नसे राज्यिक स्तरपर एक प्रदर्शनीकी व्यवस्था हुई थी। उस उपलक्ष्यमें असमके विभिन्न स्थानोंसे आये हुए साहित्य-प्रेमियोंकी एक सभा रायसाहब फणिधर चलिहाकी अध्यक्षतामें हुई, जिसमें प्रादेशिक स्तरपर असमीया साहित्यकी एक सभा बुलानेका विचार-विमर्श हुआ था ; पर वह भी सफल न हो सका। इसके बाद उसी वर्षके भीतर गुवाहाटीकी अ० भा० उ० सा० सभाकी एक बैठकमें कॉटन कॉलेजके संस्कृत विभागके अध्यापक महामहोपाध्याय पद्मनाथ भट्टाचार्य विद्याविनोदने एक प्रस्ताव पेश किया कि—एक असम साहित्य-सन्मिलन संगठित कर, उसके प्रतिनिधि बंगीय साहित्य सम्मेलनको भेजना चाहिए। उस प्रस्तावके परिणाम स्वरूप सन १९१५ को बर्धमानमें [बंगालमें] अनुष्ठित बंगीय साहित्य-सम्मेलनके अधिवेशनमें हेमचन्द्र गोस्वामी, चन्द्रनाथ शर्मा, सर्वेश्वर शर्मा कटकी और उस समय कॉटन कॉलेजके विद्यार्थी यतीन्द्रनाथ दुवरा प्रतिनिधि बनकर उपस्थित हुए थे। बादको असमके अन्यान्य प्रवीण साहित्यकारोंके विरोधके कारण यह व्यवस्था भी टिक न सकी।

सन् १९१५ के दिसम्बर महीनेमें डिब्रुगढ़ शहरमें असमकी तत्कालीन सुप्रतिष्ठित राजनीतिक संस्था 'आसाम एसोसिएशन' का वार्षिक अधिवेशन कर्मवीर नवीनचन्द्र बरदलैकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। अधिवेशनके उपरान्त फणिधर चलिहाके सभापतित्वमें असमीया साहित्यके सम्बन्धमें एक अभिवर्तन (Conference) हुआ। अभिवर्तनमें सत्यनाथ बरा, पद्मनाथ गोहाञि बरुवा, नवीनचन्द्र बरदलै, वेणुधर राजखोवा, दुर्गानाथ चांकाकति, तफज्जुल हुसेन आदि नेतृस्थानीय बहुत से लोग उपस्थित थे। उसके बाद स० १९१६ में भी गुवाहाटीमें गंगागोविन्द फुकनकी अध्यक्षतामें अनुष्ठित आसाम एसोसिएशनके अन्तमें उसी सभामंडपमें चन्द्रनाथ शर्मा, अम्बिकानाथ बरा, ज्ञाननाथ बरा, सर्वेश्वर शर्मा कटकी, उमेशचन्द्र चौधारी, दैवचन्द्र तालुकदार प्रभृति साहित्य-प्रेमियोंके प्रयत्नसे असमीया छात्रोंका एक साहित्यसम्मेलन बुलानेका निश्चय हुआ। छात्रोंके इस साहित्य-सम्मेलनमें भाग लेनेके लिए असमके विद्यालयों तथा महाविद्यालयके विद्यार्थियोंके अतिरिक्त नवीन और प्रवीण साहित्यकारोंको भी आमन्त्रित किया गया। इसके सम्बन्धमें यतीन्द्रनाथ दुवराने अपनी जीवनीमें लिखा है कि—उस समय कलकत्ताके 'ए० एस० एल० क्लब'के सदस्य वाणीकान्त काकति बी० ए० और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाकी प्रेरणासे गुवाहाटीमें इस 'छात्र-सन्मिलन'का जन्म हुआ। अतुलचन्द्र हाजरिका द्वारा लिखित 'असम साहित्यसभार रूपलेखा' शीर्षक ग्रन्थमें बताया गया है कि—इस छात्रसम्मिलनके मूलमें कलकत्तेके ए० एस० एल० क्लब और गुवाहाटीकी 'एकता सभा' का गहरा प्रभाव था। गुवाहाटीमें अनुष्ठित इस छात्र-सम्मिलनके लिए लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा सभापति चुने गये। वहीं 'असम छात्रसम्मिलन' नामसे एक संस्थाकी नींव डाली गई। महात्मागान्धीके असहयोग आन्दोलनके द्वारा राष्ट्रीय भावनासे अनुप्राणित असमके युव-

कोंकी यह संस्था इस शतीके तीसरे दशकतक अपनी सक्रियताके कारण काफी महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी।

'असम छात्रसम्मिलन'की अभूतपूर्व सफलता देखकर वयस्क लोगोंको भी प्रोत्साहन मिला। सन् १९१७ को गुवाहाटीके साहित्य-प्रेमी वकील गौरीकान्त तालुकदारके घरमें असमके विभिन्न स्थानोंके साहित्यकारोंको बुलाकर अम्बिकागिरि रायचौधुरीने एक सभाका आयोजन किया। सूर्यकुमार भूञाकी अध्यक्षतामें सम्पन्न इस सभामें संख्यालघु विरोधियोंकी बातोंपर ध्यान न रख कर ऐसा निर्णय किया गया कि—उस वर्ष होनेवाले 'आसाम एसोसियेशन'के अधि-वेशनके साथही असमीया साहित्यके लिए भी एक सभा की जाय। गुवाहटीकी इस सभामेंही हर काममें अग्रणी, कर्मपटु चन्द्रनाथ शर्माको सचिव बनाकर एक व्यवस्था-समिति (Organising Co-mmittee) भी बनाई गई। आसाम एसोसियेशनका अधिवेशन उस वर्ष शिवसागरमें होनेवाला था। तदर्थ समिति या व्यवस्था-समितिने एसोसियेशनके सदस्यों, साहित्यकारों तथा शिवसागरकी स्वागत-समितिके सदस्योंसे इस विषयपर आवश्यकीय व्यवस्थाके लिए अपील की। शिवसागरके लोग इस प्रकारके कामोंमें सब समय उत्साह दिखाते हैं। इस बार शिवसागर के लोगों ने १९१७ के सितम्बरमें वैरिस्टर ताराप्रसाद चलिहाकी अध्यक्षतामें अनुष्ठित एक सभामें यह निर्णय किया—आसाम एसोसियेशनके वार्षिक अधिवेशनके उपरान्त उसी सभामंडपमें 'असम साहित्य सम्मिलन'का भी काम सम्पन्न किया जायेगा। साहित्य सम्मिलनकी अध्यक्षताके लिए मासिक पत्रिका 'बिजुली'के (१८९०—९२) और 'ऊषा'के (१९०७—१८) सम्पादक, उप-न्यासकार, कवि तथा नाट्यकार पद्मनाथ गोहाञिबरुवा चुने गये। स्वागत समितिके अध्यक्ष साहित्यप्रेमी गुंजानन बरुवा चुने गये।

कला व साहित्यप्रेमी लक्ष्मीकान्त बरुवा बी० एल० को स्वागत समितिके सचिवका भार सौंपा गया। अन्यान्य सदस्योंमें नाट्यशिल्पी इन्द्रेश्वर बरठाकुर,[2] शिक्षाव्रती राधिकानाथ शर्मा, सिद्धेश्वर गोहाञि प्रभृति शहरके बहुतसे सम्मानित लोग शामिल हुए।

शिवसागरके पासके शहर जोरहाटके कुछ प्रमुख साहित्य-प्रेमियोंने भी शिवसागरके इस प्रयासमें काफी सहयोग किया। जोरहाट नार्मल स्कूलके तत्कालीन अधीक्षक[3] शरतचन्द्र गोस्वामी और असमके एक प्रमुख राजनीतिज्ञ कुलधर चलिहाने[4] जोरहाटसे शिवसागर जाकर साहित्यसम्मिलनके काममें सहयोग किया।

ई० १९१५ के अप्रेल या मई किसी एक महीनेमें शरतचन्द्र गोस्वामीके प्रयाससे जोरहाटमें एक 'साहित्यसभा'का जन्म हुआ था। जोरहाटके 'विष्णुराम बरुवा हॉल'में अनुष्ठित इस सभाकी पहली बैठकमें जोरहाटके एक विशिष्ट नागरिक देवीचरण बरुवा सभापति थे। सभाकी बैठक हर महीनेमें हुआ करती थी। इस क्षेत्रमें गोस्वामी-जीके सहयोगियोंमें कुलधर चलिहा (वकील), देवेश्वर चलिहा बी० एल० और दुर्गेश्वर शर्मा (दार्शनिक कवि) प्रभृति प्रमुख व्यक्ति तो थेही, चन्द्रधर बरुवा[5] जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तिसे भी सहयोग मिला

---

[2]आप नाट्यकारके अतिरिक्त मूर्तिकला और चित्रकलामें भी पटु थे।

[3]इसके बाद गोस्वामीजी विद्यालयोंके सहायक परिदर्शक और बादमें परिदर्शक भी हुए थे।

[4]आप स्वतन्त्रता प्राप्तिके पूर्व दिल्लीकी व्यवस्थापिकाके कॉंग्रेसी सदस्य और स्वतन्त्र होनेके बाद असम विधान सभाके अध्यक्ष बने थे। पूर्वोक्त फणिधर चलिहाके पुत्र थे।

[5]बरुवाजी कवि, नाट्यकार और वकील थे। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्योंमें

था। इस प्रकार जोरहाटकी स्थानीय साहित्यसभाके सदस्योंके मनमें असम साहित्यसभाके संगठन विषयक विचार भी जागृत होने लगा था। इसलिए वे भी 'आसाम एसोसियेशन'के साथ शिवसागरमें अनुष्ठित होनेवाले 'असम साहित्यसम्मिलन'के काममें हाथ बटाने लगे।

इसके पूर्व तेजपुर, गुवाहाटी, नगाँव प्रभृति असम राज्यके बहुत से शहरोंमें कलकत्तेकी अ० भा० उ० सा० सभाकी शाखाएँ बन गई थीं। परन्तु अ० भा० उ० सा० के प्रतिष्ठाता सदस्योंके छात्रजीवन पूर्ण होने पर उनको कलकत्ता छोड़ना पड़ा। ऐसी स्थितिमें असमकी शाखाएँ भी निष्क्रिय सी होने लगी थी। असम साहित्यसभाका गठन होनेके बाद अ० भा० उ० सा० सभाकी ये शाखाएँ भी उसीमें शामिल हो गईं।

अ० भा० उ० सा० से पहले भी असमके अनेक स्थानोंमें साहित्यिक संस्था बनानेकी कोशिश हो रही थी। पाश्चात्य शिक्षा-संस्कृतिकी नयी किरणोंसे उद्भासित तथा नवीन शक्तिसे संजीवित उस समयके कलकत्ता शहरसे असमके शिक्षित वर्गका गहरा सम्पर्क था। अतः कलकत्ताके साहित्यिक आदर्शसे अनुप्राणित असमके शिक्षित लोगोंमें एक नयी चेतनाका संचार होना स्वाभाविक था। शिवसागरकी 'ज्ञानसभा, ऐसी संस्थाओंमें से एक थी। अरुणोदय पत्रिकाके प्रथम प्रकाशनके वर्षमेंही (ई० १८४६ में) यह संस्था बनी थी। ई० १८०८ में कलकत्तेमें बनी 'The society for the Acquisition of General Knowledge' नामक संस्थासे ज्ञानसभाका

आपकी रुचि थी। आप गोलमेज कॉन्फरेन्समें भी भाग लेने गये थे। बादमें 'साहित्यरत्न' उपाधिसे आप विभूषित हुए थे।

लक्ष्य मिलता-जुलता था। 'अरुणोदय' पत्रिकामें इस सभाका समाचार छपता था। ई० १८५८ में भी शिवसागरके कुछ उत्साही लोग 'आसाम देशहितैषी सभा' नामक एक संस्था चलाते थे। गंगागोविन्द फुकनने शिवसागरमें ही ज्ञानदायिनी सभाकी स्थापना की थी। उधर १८७२ ई० को कलकत्ताप्रवासी असमीया विद्यार्थियोंके द्वारा 'असमीया छातरर साहित्यसभा' नामक एक संस्था बनाई गई थी। इस प्रकार गुवाहाटी शहरके भी कुछ नेतृस्थानीय लोगोंने 'गुवाहाटी स्कूल-क्लब'का गठन किया था। असम साहित्यसभाके जन्मके पूर्व कुछ संस्थाएँ स्थानीय संगठनके रूपमें और एक-आध संस्था प्रादेशिक स्तरपर भी बनती-बिगड़ती रही थी। असम साहित्यसभाके जन्मके बाद तथा विकासके साथ साथ वे सभी संस्थाएँ धीरे धीरे लुप्त होने लगी और लोगोंका ध्यान असम साहित्यसभाकी ओर ही आकृष्ट होने लगा।

द्वितीय अध्याय

साहित्यसभाका जन्म और शैशव

शिवसागरमें साहित्यसभाका जन्म :—असमके जनगणकी संस्कृति, जातीयता और साहित्यका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्थाओंमें जो संस्था आज प्रमुख है, उसका शुभारम्भ ई० १९१७ के २६।२७ दिसम्बरको इतिहास प्रसिद्ध शिवसागर नगरमें हुआ। इस शहरसेही असमकी सर्वप्रथम पत्रिका 'अरुणोदय' अमरीकी बैपटिस्ट मिशनके छापेखानेमें छपकर १८४६ से करीब ४० वर्षोंतक चलती रही। यही शिवसागर हेमचन्द्र बरुवाका शिक्षा तथा साधनाका क्षेत्र था, जिस शिक्षा और साधनासे असमीया भाषाको सर्वप्रथम प्रामाणिक शब्दकोश और व्याकरण मिला। मिशनरियोंके लिखे व्याकरण और शब्दकोश पहले प्रयासके फल होनेके कारण काफी त्रुटिपूर्ण थे। उन त्रुटियोंको हटाकर हेमचन्द्र बरुवाने असमीया व्याकरण और शब्दकोशको पहलेकी अपेक्षा विकसित रूप दिया। अरुणोदय युगके बाद भी भाषा तथा साहित्यके संग्रामक्षेत्रमें एक सशक्त सेनानीकी भाँति लड़नेवाले साहित्यरथी बेज्बरुवाजीका भी घर शिवसागरमें था। उनका बचपन यहीं बीता और स्कूली शिक्षा भी उनको यहीं मिली[6]। यहाँकी बोल-चालकी भाषाही असमकी साहित्यिक भाषाका

---

[6] बेजबरुवाजी कलकत्तेमें शिक्षाजीवनके बाद भी व्यवसाय करते रह गये। आप

प्रमाप मानी जाती है। असमके पूर्वांचल और पश्चिमांचल सभी स्थानोंके प्रतिष्ठित साहित्य-सेवियोंके प्रयत्नसे संगठित असमीया साहित्य-की प्रमुख संस्था असम साहित्यसभाको भी यहीं प्रथम रूप मिला। शिवसागरका यह सम्मिलन मानो साहित्यसभाका जन्मोत्सव था।

इस साहित्यसम्मिलनके लिए [अधिवेशनको 'सम्मिलन' कहनेकी परम्परा साहित्यसभामें चली] जो सभापति चुने गये, वे भी वचपनमें हाईस्कूलकी शिक्षा इस शिवसागर शहरमें ही पाये थे। इस प्रकारके विविध कारणोंसे गौरवशाली शिवसागरमें 'असम साहित्य-सभा'का जन्म तथा प्रथम सम्मिलन हुआ, जिसके साथ साथ साहित्य-सभाका इतिहास भी प्रारम्भ हुआ।

असम साहित्यसभाका पहला सम्मिलन :—समुद्रसदृश विशाल तथा सौन्दर्यपूर्ण शिवसागर पोखरेके, तटपरस्थित जिस वास-भवनमें सन्मिलनके सभापति तेजपुरसे आकर रंगपुरमें ठहरे थे, उस भवनसे फणिधर चलिहाके नेतृत्वमें शोभायात्रा करते हुए विष्णुदौल, शिवदौल और देवीदौल (दौल-देवालय)का प्रदक्षिणा करवाकर सभा-

---

कभी हवड़ा और कभी उड़ीसाके सम्बलपुरमें लकड़ीके व्यवसायके कामपर रहते थे। कहा जाता है कि—उन्होंने एक हाथसे कलम और दूसरे हाथसे कुल्हाड़ी चलाई।

ई० १७२०में आहोम राजा शिवसिंहके शासनकालमें करीब आधा वर्गमील क्षेत्रका एक बड़ा तालाब बनावाया गया। उस तालाबके दक्षिणीतटपर शिव, विष्णु और देवीके तीन मन्दिर बनवाये। शिवसिंहके समयका बना इस तालबका नाम 'शिवसागर' पड़ा है। उसीके नामपर सम्पूर्ण शहर और जिलेका भी नाम शिस्सागर हुआ। अरुणोदयके संसालक मिशनरियोंका कार्यालय और कचहरी इस तालाबके किनारे हैं। आजकल मिशनरियोंका कार्यालय नहीं

मण्डपकी ओर सभापतिजीको ले गये। सभामंडपमें करीब आठ सौ दर्शकोंका समावेश हुआ था। हाँ आज जिस सभाकेलिए लाखोंकी संख्यामें दर्शक आते हैं, उस सभाके लिए आठ सौ लोगोंकी संख्या बहुत कम सी लगती है; परन्तु साठ वर्षोंके पहलेकी स्थिति बहुत भिन्न थी। उस समय शिवसागर शहरकी जनसंख्या भी पाँच हजारसे कुछ ही अधिक थी। अतः उस समयकेलिए ८०० की संख्या भी कम नहीं थी। सभापतिने सुदीर्घ छपा हुआ अभिभाषण पाठ किया। अन्यान्य लोगोंकी तरफसे भी चार निबन्ध पाठ किये गये।

(१) नगाँवके कवि रत्नकान्त बरकाकतीका निबन्ध—'असमीया भाषा'।

(२) शरतचन्द्र गोस्वामीका निबन्ध—'कीर्तनर साहित्य सौष्ठव' [कीर्तन मध्यकालीन असमके धर्मगुरु, समाजसुधारक, कवि, गायक तथा गीतकार और नाट्यकार महापुरुष शंकरदेवका भक्तिविषयक गेय साहित्य ग्रन्थ]।

(३) नगाँवके मोसलेहुद्दिन अहमदका निबन्ध—'असमीया साहित्य आरु मुसलमान'।

(४) गुवाहाटीके डॉ०विपिनविहारी दासका निबन्ध—'गोबर-रहस्य'।

सम्मिलनके सभापति गोहाञिबरुवाके ऐतिहासिक नाटक 'जयमती'का अभिनय मनोरंजनकेलिए किया गया था। कुछ प्रति-ष्ठित साहित्यकार, गीतकार और अभिनेता आदिने इसमें भाग लिया था। सम्मिलन दो दिन चलता रहा। साहित्यसभाकी नियमा-

---

है। एक नया गिर्जाही उनकी परम्पराका स्माराक बन कर खड़ा है। शिव-सागरके पासही आहोम राजाओंकी राजधानी पुराना 'रंगपुर' है। लोग शिवसागरको ही 'रंगपुर' कहते हैं।

बली यहीं बनाई गई और गृहीत हुई। असमके भिन्न भिन्न जिलोंके साहित्यकारोंको लेकर एक कार्यपालिका बनाई गई। इस कार्य-पालिकाके बहुत से सदस्य बादको असम साहित्यसभाके सम्मानित सभापति पदके लिए भी चुने गये। वे हैं—लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा, सत्यनाथ बरा, चन्द्रधर बरुवा, अम्बिकागिरि रायचौधुरी, मफिजुद्दिन अहमदहाजरिका, रत्नकान्त बरकाकती, अमृतभूषण अधिकारी और सिंहदत्तदेव अधिकारी। इनके अतिरिक्त असमीया साहित्यमें प्रतिष्ठित साहित्यसेवी दुर्गेश्वर शर्मा, गुंजानन बरुवा, राधानाथ फुकन, इन्द्रेश्वर बरठाकुर, कीर्तिनाथ शर्माबरदलै, महादेव शर्मा, रमणीकान्त बरुवा, प्रमथ चक्रवर्ती प्रभृति बहुत से प्रतिष्ठित साहित्यसेवी इस कार्यपालिकाके सदस्य चुने गये। शरतचन्द्र गोस्वामी कार्यपालिकाके 'प्रधान सम्पादक' [असममें मन्त्री अथवा सचिवके लिए भी सम्पादक' शब्दकाही प्रयोग होता है] और जोरहाटके वकील देवेश्वर शर्मा बी० एल० सहायक सम्पादक निर्वाचित हुए।

स० १६१८ में २५ अप्रेल को असम साहित्यसभाकी कार्य-पालिकाने जोरहाट साहित्यसभाको सर्वप्रथम शाखा सभाके रूपमें स्वीकृति दिया। उसके बाद गुवाहाटी, तेजपुर और नगांवकी अ० सा० उ० सा० सभाको क्रमशः ६-५-१८, १-८-१८ और १३-६-१८ को अपनी शाखाके रूपमें असम साहित्यसभाकी कार्यपालिकाने स्वीकृति दी। १३-६-१८ को उत्तर-लक्षीमपुर, नाजिरा, नलबारी और शिव-सागरकी साहित्यसभाभी असम साहित्यसभाकी शाखा मानी गई। इस पकार गौरीपुर गोलाघाट और मंगलदइ साहित्यसभाकी भी २६-६-१८ को स्वीकृति मिली। इनके अतिरिक्त उसीवर्षमें शिवसागरकी विमलालय सभा और डिब्रूगढ़की साहित्यसभा भी असम साहित्य-सभाकी शाखाएँ बनीं। रेवारेण्ड एस० ओ० डी० बग्स और

रेवारेण्ड सी० एच० टिलाडेन नामक दो यूरोपीय सज्जन भी असम साहित्यसभाके सदस्य इसी वर्ष बने।

दूसरा सम्मिलन :—ई० १६१८ में २७,२८ और २६ दिस-म्बरको गोवालपारा शहरमें पहलेकी भाँति 'असम एसोसियेशन'के साथही उसी सभामंडपमें असम साहित्यसभाका भी दूसरा सम्मिलन अनुष्ठित हुआ। उस सम्मिलनके लिए सभापति चुने गये थे हेमचन्द्र गोस्वामी ; पर एक आकस्मिक दुर्घटनाके कारण गोस्वामीजी वहाँ भाग लेनेमें असमर्थ हो गये। तब शरतचन्द्र गोस्वामी और कुलधर चलिहाके अनुरोध पर चन्द्रधर बरुवा गोस्वामीजीके स्थानपर कार्य संभालनेको राजी हुए। इस सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष जमींदार यतीन्द्रनारायण चौधुरी थे। कवि दुर्गेश्वर शर्मा और कालिराम मेधि उपदेष्टा थे। असम साहित्य सम्मिलनकी शाखा सभाओंसे तथा स्वीकृत सभाओंसे इसमें भागलेनेके लिए करीब सौ प्रतिनिधि आये थे। देशभक्त तरुणराम फुकन और चन्द्रनाथ शर्मा प्रभृति 'असाम ऐसोसियेशन'के कुछ विशिष्ट नेताओंने भी इस सम्मि-लनमें भाग लिया था।

उस समयतक असमकी ब्रह्मपुत्र उपत्यकाके जिलोंमें बंगाली भाषाका दबाव हट चुका था ; किन्तु बंगालसे सटे हुए गोवालपारा जिलेके लोगोंपर उस समय बंगालका प्रभाव काफी काम कर रहा था। ऐसी हालतमें गोवालपारा जिलेके मेछपाराके जमींदार यतीन्द्र-नारायण चौधुरीके द्वारा दिया हुआ स्वागतमसमितिके अध्यक्षका लिखित अभिभाषण असमीया भाषामें होना स्थानीय लोगोंकेलिए केवल नयी बातही नहीं थी, तात्पर्यपूर्ण भी माना गया। सचिवके प्रतिवेदनसे बीते वर्षका जो हिसाब मिला था, उसके अनुसार १६२

रुपये १२ आने ६ पाइ आय थी ओर १०६ रुपये ३ पाई व्यय था। यहाँ उल्लेखनीय यह भी है कि—प्रथम सम्मिलनमें डॉ हरेकृष्ण दासका दिया दस रुपयेका एक नोट ही 'असम साहित्यसभा'की पूँजीकेलिए सर्वप्रथम दान था। इस सम्मिलनमें पद्मनाथ गोहाञि बरुवाने पूँजीकी आवश्यकताके सम्बन्धमें एक हृदयस्पर्शी भाषण दिया। उस भाषणसे प्रभावित होकर २२४२ रुपये दानकी प्रतिश्रुति उपस्थित लोगोंने दी ; ६४० रुपये नकद भी मिले।

गोवालपाराके सम्मिलनमें गृहीत ये प्रस्ताव उल्लेखनीय हैं—

(१) कॉटन कॉलेजमें [उस समय असमका एकमात्र कॉलेज] असमीया भाषा-साहित्यके अध्यापनके लिए एक आंशिक सेवाके अध्यापकके [Part time lecturer] बदले पूर्णकालिक एक स्थायी अध्यापक नियुक्त करना चाहिए। अतः इस उद्देश्यसे असम सरकारके पास आवेदन किया जाय। इस विषयपर आगे भी साहित्यसभाके कुछ और सम्मिलनोंमें इस प्रस्ताव को दुहराना पड़ा। तभी कुछ वर्षोंके बाद कॉटन कॉलेजमें पूर्णकालिक असमीया विषयके एक अध्यापककी नियुक्ति हुई।

(२) असमीया भाषा-साहित्यके शिक्षादानकी व्यवस्था उच्चशिक्षाके स्तरपर होनेके साथ साथ प्राचीन असमीया साहित्यकी अप्रकाशित पोथियोंके संरक्षणकी भी व्यवस्था की जाय।

(३) असमीया पाठ्यपुस्तक समितिमें [Assam Text Book Committee] असम साहित्यसभाका कमसे कम एक सदस्य रखा जाय। कुछ बिलम्बके बाद यह प्रस्ताव भी सरकारकी तरफसे कार्यान्वित हुआ।

शिवसागरके सम्मिलनमें सभापतिपदपर आसीन 'पद्मनाथ गोहाञिबरुवा इस बार प्रधान सचिव निर्वाचित हुए।

तीसरा सम्मिलन :—ई० १९१९ में २६-२७ दिसम्बरको असमकी 'मथुरापुरी'[४] बरपेटामें असम साहित्यसभाका तीसरा सम्मिलन असमीया भाषातत्त्वविद कालिराम मेधिकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। यहाँ भी आसाम एसोसियेशनके साथही सम्मिलनकी व्यवस्था हुई थी। एक विशेषता यहभी थी कि—आसाम एसोसियेशनके इस अधिवेशनके सभापति असम साहित्यसभाके सचिव और प्रथम सम्मिलनके सभापति पद्मनाथ गोहाञिबरुवाको चुना गया था। एसोसियेशन और साहित्य सम्मिलन दोनोंकेलिए एकही स्वागत समिति थी। रामप्रसाद दास उस स्वागतसमितिके अध्यक्ष थे।

---

[४]ई० १६ वी शतीके वैष्णवधर्मगुरु महापुरुष शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव प्रभृति वैष्णवभक्तोंकी लीलाभूमि होनेके कारण बरपेटाको मध्ययुगीन तथा आधुनिक युगके भी एकाधिक लेखकोंने 'असमकी मथुरापुरी' कहा है। यहाँका कीर्तनघर असममें सबसे बड़ा कीर्तनघर है। असमके महापुरुषीया वैष्णवोंके हरिमन्दिर कीर्तनघर या नामघर कहलाते हैं। इसमें एक बहुत बड़ा आधुनिक हॉल जैसा खुला हिस्सा रहता है। इस खुले हिस्सेमें सौ या हजारकी संख्यामें लोग बैठकर हरि-नामका कीर्तन करते हैं। इसलिए इसका नाम भी कीर्तनघर या नामघर पड़ा। असमके महापुरुषीया वैष्णवोंकी धर्मपरम्पराके अनुसार संगठित संस्थाओंको 'सत्र' कहते हैं। बरपेटा असम-राज्यभरमें प्राचीन और बड़ा सत्र है। सत्रोंमें शिष्यों तथा भक्तों सहित धर्मगुरु रहते हैं। शिष्यों या भक्तोंके रहनेके स्थानको हाटी कहते हैं। कीर्तनघर बीचमें रखकर हाटियों सहित सम्पूर्ण स्थान सत्र नामसे परिचित होता है। कलाचर्चा, सामाजिक संगठन, भक्ति धर्मका प्रचार आदि अराजनैतिक सभी सामाजिक कार्योंका विधान वर्तमान युगके पहले सत्र करते थे।

बरपेटाके सुप्रसिद्ध कीर्तनघरमें व्यवहृत चन्द्रातपोंसे सभामंडप सजाया गया था। सत्रोंकी अपनी प्रथाके अनुसार हाटियोंमें यथा-विधि निमन्त्रण किया गया था और हाटियोंके युवक भक्तोंने सामूहिक श्रमदानसे सभागृह तथा अन्यान्य प्रयोजनकेलिये अस्थायी घर बना दिये थे।

कीर्तनघरके पासही दक्षिण हाटीमें सम्मिलनके सभापतिके लिए ठहरनेकी व्यवस्था की गई थी। सभापति मेधिजी को वहाँसे करीब एकमीलकी दूरीपर स्थित सभामंडपतक समदल गीत-वाद्य सहित शोभायात्रामें ले जाया गया। दोनों तरफ केलेके पेड़ोंसे बने तोरणोंकी कतारोंसे रास्ते सुसज्जित थे। सभापतिका लिखित अभिभाषण पाण्डित्यपूर्ण था और देशभक्त तरुणराम फुकनका भाषण श्रोतागण मन्त्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। इस सम्मिलनमें सत्यनाथ बरा प्रधान सचिव चुने गये। रातको आतिशबाजो, फुलझड़ी आदि तमाशे भी दिखाये गये। आकाशमें आतिशबाजीकी अग्निरेखासे बना असम साहित्यसभाका चमकता हुआ नाम सबकेलिए बड़ा आकर्षणका विषय था। इसके अलावा अम्बिकागिरि रायचौधुरीके 'जयद्रथबध' नाटकका अभिनय भी हुआ।

चौथा सम्मिलन :—ई० १९२० में २८,२९ दिसम्बरको तेजपुर शहरमें साहित्यसभाका चौथा सम्मिलन आसाम एसोसियेशनके मंडपमें

बड़े व सम्पन्न कुछ सत्रोंमें शिक्षा और चिकित्साकी भी व्यवस्था है। बरपेटा सत्रके कारण ही बरपेटा शहर बना है। अंग्रेजोंके आनेके बाद बरपेटा शहर कामरूप जिलेके एक सब डिवीजनका सदर बना। बरपेटाके अतिरिक्त पूर्वी असममें आउनीआटी और दक्षिणपाट प्रभृति बहुत सम्पन्न सत्र हैं।

ही सम्पन्न हुआ। इस वर्षके बाद आसाम एसोसियेशन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसमें शामिल हो जानेपर असम साहित्य सम्मिलनको उसके सहारेसे वंचित होना पड़ा। मानो बच्चा औरोंकी उँगली पकड़कर खड़ा होना छोड़कर अपने पैरोंपर खड़ा होने लगा।

चन्द्रकुमार आगरवाला और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाके सहकर्मी 'जोनाकी' पत्रिकाके एक प्रमुख कवि और बादके इतिहास तथा पुरा-तत्त्वके विषयोंपर अग्रणी निबन्ध लेखकोंमेंसे एक पण्डित हेमचन्द्र गोस्वामी इस सम्मिलनके अध्यक्ष चुने गये। स्वागत समितिके अध्यक्ष कर्मप्राण चन्द्र शर्मा थे। पद्मनाथ गोहाञिबरुवा, दण्डिनाथ कलिता, महादेव शर्मा प्रभृति साहित्यसेवी उनके सहायक थे। पण्डित गोस्वामीका अभि-भाषण केवल ऐतिहासिक तथ्य समृद्ध ही नहीं था, बल्कि उसमें साहित्यसभाके कर्तव्योंके सम्बन्धमें भी विचार किया गया था। सम्मिलनमें महामहोपाध्याय धीरेश्वराचार्य 'कविरत्न'द्वारा रचित संस्कृत पुस्तक 'वृत्तमंजरी'के प्रकाशनके लिए भी एक प्रस्ताव गृहीत हुआ था; पर वह प्रस्ताव कार्यान्वित न हो सका। कुछ वर्षोंके बाद इतिहास और पुरातत्त्व विभागनेही यह काम किया। शरतचन्द्र गोस्वामी द्वितीय बारके लिए प्रधान सचिव निर्वाचित हुए। तबतक ऐसा नियम था कि—प्रधान सचिव जहाँ रहेंगे, वहीं साहित्यसभाका केन्द्रीय कार्यालय भी रहेगा। पर इस वर्षसे स्थायी केन्द्रीय कार्यालय जोरहाटमें रखनेका निर्णय किया गया। तेजपुर सम्मिलनके बाद बीचमें दो वर्षोंतक लगातार सम्मिलन न हो सका।

ई० १९२१ से देशका सम्पूर्ण वायुमंडल असहयोग आन्दोलनकी ध्वनि-प्रतिध्वनिसे मुखरित होने लगा था। गान्धीजीके नेतृत्वमें कांग्रेसका प्रभाव देशके कोने-कोनेमें पहुँचानेके लिए जातीयतावादी नेता गण समर्थ हो सकते थे। इसलिए देशकी चिन्ताके अतिरिक्त

और किसी प्रकारकी सामाजिक चिन्ताके लिए लोगोंके मनमें जगह खाली नहीं थी। जोरहाटके राजभक्त पदाधिकारियों और कुछ कर्मचारियोंके मनमें भी स्थिरता नहीं रही। दूसरे प्रकारके लोगोंका भी साहित्य-संस्कृति सम्बन्धी विचारोंके लिए अवकाश नहीं था। ऐसी स्थितिमें १९२१ को होनेवाला असम साहित्यसभाका सम्मिलन कार्यपालिकाकी तरफसे बन्द रखना ही उचित समझा गया अधिक क्या, तेजपुरके सम्मिलनमें जितने काम हाथमें लेनेका प्रस्ताव गृहीत हुआ था, वे सारे काम ज्योंके त्यों अछूते ही पड़े रहे।

ई० १९२२ को तेजपुर सम्मिलनके अध्यक्ष हेमचन्द्र गोस्वामी स्थानान्तरित होकर जोरहाट आये। साहित्यसभाकेलिए यह आगमन लाभदायक हुआ। अब सचिव और सभापति दोनोंको एकही स्थानपर रहकर साहित्यसभाका काम करनेकी सुविधा मिलने लगी। अतः दो वर्षोंसे भी अधिक काल सम्मिलन [वार्षिक अधिवेशन] न होनेपर भी साहित्यसभाका काम दूसरे ढंगसे होने लगा। चन्द्रधर बरुवा, हेमचन्द्र गोस्वामी और शरतचन्द्र गोस्वामीके परामर्शके अनुसार जोरहाटसे करीब पचीस मीलकी दूरीपर बाटुलीपाराके निवासी राधानाथ गोस्वामीने अपनी माता कमला देवीके नामपर साहित्यसभाको भवननिर्माणके लिए दो हजार रुपयेका दान किया। इस धन प्राप्तिके क्षेत्रमें जोरहाटके वकील पूर्णनन्द शर्मापाठक का प्रयत्न उल्लेखनीय है। उस दानसे साहित्यसभाके लिए 'कमला देवी साहित्यमन्दिर' निर्माणका सिद्धान्त लिया गया। पर समयकी गतिने उसका रूप बदल दिया। जो हो, असम साहित्यसभाको इस दानसे पर्याप्त आर्थिक बल मिला।

पाँचवाँ सम्मिलन :—स० १९२३में ३१ मार्च और १ अप्रैलको असम साहित्यसभाका पाँचवा सम्मिलन जोरहाटमें बुलाया गया। अब आसाम एसोसियेशन जैसी संस्थाका सहारा साहित्यसभाकेलिए नहीं था। स्वागत समितिकी तरफसे सभामंडप न बनानेका निर्णय लिया गया। राजकीय उच्चविद्यालयके सभाभवनमेंही सभाका कार्य सम्पन्न हुआ। 'श्रीमन्नामघोषा'के लेखक [महापुरुष माधवदेवजीकी नामघोषाके टीकाकार][9] गोवालपारा जिलेके दलगोमा सत्रके अधिकारी (महन्त) अमृतभूषणदेव अधिकारी इस सन्मिलनके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सम्मिलनमें करीब एक हजार दर्शक उपस्थित थे। दानवीर राधाकान्त सन्दिकै स्वागत समितिके सभापति थे।[10] इस सम्मिलनमें पंजीयन विधि [Act XXI of 1960]के अनुसार असम साहित्य सभाको पंजीभूत करनेका प्रस्ताव लिया गया और राधानाथ गोस्वामीके दानसे जोरहाटमें केन्द्रीय कार्यालय निर्माण करनेका प्रस्ताव भी गृहीत हुआ। शरतचन्द्र गोस्वामी तीसरी बारके लिए प्रधान सचिव चुने गये। सम्मिलनके उपलक्ष्यमें 'जोरहाट नाट्य मन्दिर' में बंगाली भाषासे असमीयामें अनूदित 'देवलादेवी' नाटक अभिनीत हुआ।

---

[9] असमके प्रसिद्ध धर्मगुरु शंकरदेवके प्रमुख शिष्य और उत्तराधिकारी माधवदेव भी नाट्यकार, गीतकार और कवि थे। उनकी भक्तिविषयक पोथी 'नामघोषा' असमीया साहित्यका एक अमूल्य रत्न माना जाता है। सन्त विनोबाने भी इस नामघोषाके विषयमें 'नामघोषासार' और 'नामघोषा नवनीत' नामक दो पुस्तकें हिन्दीमें लिखी हैं।

[10] जिनके पाण्डित्यकी ख्याति भारतवर्षके अतिरिक्त यूरोपके देशोंमें भी है, उस कृष्णकान्त सन्दिकैके राधाकान्त सन्दिकै पिता थे। असम साहित्यसभा, गुवाहाटीके सन्दिकै गर्ल्स कॉलेज और पुरातात्त्विक अनुसन्धान संस्था प्रभृति बहुत सी संस्थाओंके लिए सन्दिकैजीने महत्त्वपूर्ण दान किया है। इस—

सन् १९२४के १७ मार्चको असम साहित्यसभाका पंजीयन कार्य सम्पन्न हुआ। सभाकी कार्यपालिकाके तत्कालीन जोरहाटवासी बीस सदस्योंने दलीलमें हस्ताक्षर किया। उसमें साहित्यसभाके उद्देश्यके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा गया था :—

(१) असमीया भाषा-साहित्यका सर्वांगीण उन्नतिसाधन करना।

(क) आधुनिक शब्दकोश और व्याकरणकी रचना तथा प्रकाशनकी व्यवस्था करना।

(ख) आहोम कालीन इतिहास प्रभृति अप्रकाशित प्राचीन ग्रन्थोंकी खोज, बरगीत[11], लोकगीत, लोकोक्ति आदिका संकलन और प्रकाशन कार्य करना।

(ग) असमीया साहित्यमें जिन विषयोंके ग्रन्थोंका अभाव है, उन विषयोंके ग्रन्थोंकी रचना, प्रकाशन तथा अन्योंको प्रोत्साहन प्रदान करना।

(घ) उपयोगी ग्रन्थप्रकाशनके क्षेत्रमें आर्थिक अभावग्रस्त साहित्यकारोंको आर्थिक सहायता पहुँचाना।

(ङ) असमके शुद्ध स्थानीय स्वरोंके ग्रामोफोन रेकार्ड प्रस्तुत करना और इनके अतिरिक्त संगीत तथा चित्रविद्याकी उन्नति, सभाकी एक मुखपत्रिका प्रकाशन की व्यवस्था, आमजनताके बीच साहित्यकी रुचि वृद्धि करना आदि भाषा और साहित्यकी उन्नतिसे सम्बन्धित बहुतसी बातोंका उल्लेख दलीलमें किया गया है।

लिए राधाकान्त सन्दिकै दानवीर कहलाए। उनका बचपन गरीबीमें बीता था; पर प्रतिभा और अध्यवसायने उनको काफी धनवान और दानी बनाया।

[11] शंकरदेव और माधवदेवके लिखे भक्तिविषयक शास्त्रीय गीत 'बरगीत' नामसे परिचित है।

जोरहाटमें कार्यालयका स्थायी भवन :—साहित्यसभाके स्थायी भवनके लिए रुपये की व्यवस्था तो हुई; तबतक जमीनकी व्यवस्था नहीं हुई थी। ई० १९२३ के नवम्बर महीनेको साहित्यसभाकी तरफसे एक शिष्टमंडल [Deputation] असमके तत्कालीन सार्वजनिक निर्माण विभाग (P.W.D.) के मुख्य अभियन्ता डिसेनी (O. H. Desenne) से मिले। शिष्टमंडलमें हेमचन्द्र गोस्वामी, शरत चन्द्र गोस्वामी और प्रमदाकिशोर राय प्रभृति प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होंने जोरहाटके कार्यवाही अभियन्ताके कार्यालयसे संलग्न भूमि साहित्यसभाके लिए माँगा और विधिपूर्वक आवेदन पत्रभी पेश किया। ई० १९२४ के ११ फरवरीको सरकारकी तरफसे यह वांछित भूमि साहित्य सभाको मिली। उसीवर्षके २२ मार्चको १ बीघा ४ कठा और २ लूसा जमीन साहित्यसभाने अपने दखलमें लिया और भवन-निर्माणका शुभारम्भ भी किया गया।

इससे कुछ दिनों पहलेही राधाकान्त सन्दिकैके उच्चशिक्षित दो पुत्र चन्द्रकान्त और इन्द्रकान्तकी अकाल मृत्यु हुई। दोनों कृष्णकान्तके भाई थे। इस घटनाके कारण शोकदग्ध पितृ राधाकान्तके मनमें शोकाग्नि प्रशमनके लिए एक विशिष्ट दान करनेकी इच्छा हुई। इस बातका पता चलनेपर असम साहित्यसभाके प्रधान सचिव शरतचन्द्र गोस्वामीने साहित्यसभाके भवन-निर्माणके लिए ही यह दान कार्य सम्पन्न करनेका सुझाव दिया। गोस्वामीके सुझावके अनुसार सन्दिकैने भी पचीस हजार रुपयेका दान [बादको तीस हजार रुपये कर दिये] अपने दोनों पुत्रोंके स्मृतिरक्षार्थ साहित्यसभाके सामने रखा। इसमेंसे पन्द्रह हजार रुपये दाताके इच्छानुसार 'चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन' नामसे साहित्यसभाके स्थायी कार्यालय निर्माणके काममें खर्च किया गया। राधानाथ गोस्वामीसे मिले दो हजार रुपये का उपयोग तब शिशु-साहित्य उन्नयनके

लिए करनेका जो सिद्धान्त साहित्यसभाने लिया, दाताने उसका सहर्ष समर्थन किया। अतः 'चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन'के नामसे असम साहित्यसभाके स्थायी कार्यालय-निर्माणमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं रही। वरन् पहले सोचनेकी अपेक्षा अच्छे स्थायी भवनकी सुविधा मिली।

इस प्रकार साहित्यसभाको दो महत्त्वपूर्ण दान मिलनेके अतिरिक्त शरतचन्द्र गोस्वामी और हेमचन्द्र गोस्वामीके अनुरोध तथा प्रयत्नके परिणाम स्वरूप साहित्यसभाको दक्षिणपाट[1] सत्रके अधिकार [महन्तको अधिकारी के बदले अधिकार कहा जाता है] नरदेव गोस्वामीसे भी पाँच हजार रुपये दानकी प्रतिश्रुति मिली थी ,और दाताके इच्छानुसार यह धन भी एक साहित्य मन्दिरके निर्माण कार्यमें खर्च करनेका विचार था। पर सन्दिकैजीके दानसे चन्द्रकान्त सन्दिकैभवन निर्माणकी व्यवस्था हो जानेपर साहित्यसभाके अनुरोधके अनुसार दानके रुपये गृहनिर्माणके बदले एक न्यास-पूँजीके रूपमें रखने तथा उसके व्याजसे संस्कृत और असमीया इन दोनों भाषाओंके ग्रन्थ प्रकाशन करनेका परामर्श दक्षिणपाटके गोस्वामीके द्वाराभी स्वीकृत हुआ। तदनुसार ई० १९२६ के १८ अगस्तको इस न्यास-पूँजी (ट्रस्टफंड) का पंजीयन कार्य भी सम्पन्न हुआ। आउनीआटी सत्रके अधिकार लीलादेव गोस्वामीसे भी पाँच हजार पाँचसौ रुपये दानकी

---

[1] ई० शती १७ वींके उत्तरार्धमें कुछ आहोम शासकोंने महापुरुष शंकरदेवकी परम्पराका वैष्णवधर्म ग्रहण किया। राजाओंने अपने गुरुओंको उसीपरम्पराके अन्यान्य गुरुओंकी अपेक्षा अधिक सुविधा प्रदान करते हुए चार बड़े सत्र बनवा दिये। ये सत्र हैं—आउनीआटी, दक्षिणपाट, गड़मूर और कुरुवाबाही। उन सत्रोंके महन्त राजाओंके गुरु होने के कारण उनके शिष्योंकी संख्यावृद्धि और समृद्धि भी अधिक होने लगी। आज-कल भी आउनीआटी और दक्षिणपाट सत्र अन्यान्य सत्रोंकी अपेक्षा वैभवशाली है।

प्रतिश्रुति मिली थी; किन्तु प्रतिश्रुति कार्यान्वित होनेसे पहलेही उनका स्वर्गवास हुआ। उनके उत्तराधिकारी और शिष्योंने प्रतिश्रुतिकी रक्षा नहीं की।

छठवाँ सम्मिलन :—ई० १९२४ के १९ और २० अप्रैलको डिब्रूगढ़ शहरके जॉर्ज हाईस्कूलमें असम साहित्यसभाका छठवाँ सम्मिलन अनुष्ठित हुआ। कनकलाल बरुवा सभापति निर्वाचित हुए। बरुवाजी 'जोनाकी' पत्रिकाके द्वारा असमीया साहित्यको नवरूप देनेके लिए प्रयास करनेवालोंमेंसे एक थे। इतिहास बरुवाजीके अध्ययनका प्रधान विषय था। आप बादमें असम मन्त्री सभाके सदस्य भी हुए थे।

शिवनाथ शर्मा स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। महात्मागान्धीके नेतृत्वमें असहयोग आन्दोलनमें भाग लेनेवाले बड़े सत्रोंके अधिकारोंमें अग्रणी पीताम्बर गोस्वामी भी इस सम्मिलनमें उपस्थित थे। आप गड़मूर सत्रके महन्त थे। वैभवशाली चार बड़े सत्रोंके महन्तोंमेंसे किसी एकको भी इस प्रकार आम जनताके बीचमें पाना तबतक बहुत बड़ी बात मानी जाती थी। डिब्रूगढ़के सम्मिलनकी और कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(१) साहित्य सम्मिलनके साथ संगीत सम्मिलन पहले पहल डिब्रूगढ़में हुआ। नाट्याचार्य इन्द्रेश्वर बरठाकुर इस संगीत शाखाके अध्यक्ष थे। अध्यक्षने अपने अभिभाषणमें भारतीय संगीतकलाका एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया। इस संगीत सम्मिलनको ही 'असम संगीत संघका पहला अधिवेशन माना गया।

(२) दूसरी विशेषता यह है—साहित्य-सम्मिलनके साथ पहले पहल यहीं एक प्रदर्शनीकी भी व्यवस्था की गई। प्रदर्शनीमें विविध

पुरानी अप्रकाशित पोथियों तथा चित्रोंके साथ हस्तशिल्पके नमूने भी दिखाये गये।

मूल अधिवेशनके सभापति कनकलाल बरुवाके अभिभाषणमें साहित्यसभाके कर्तव्यके सम्बन्धमें यह भी कहा गया था कि—केवल असमीया भाषामें लिखित साहित्यही नहीं, संस्कृत भाषाके और असम-वासी मुसलमानोंके घरोंमें संरक्षित अरबी तथा फारसी भाषाके साहित्यकी प्राचीन प्रतिलिपियोंका भी अनुसन्धान होना चाहिए। उनके विषयमें गवेषणा भी करनी चाहिए।

शरतचन्द्र गोस्वामी इस बार भी साहित्यसभाके प्रधान सचिव निर्वाचित हुए। सभामें गृहीत प्रस्तावके अनुसार उसी वर्षसे 'चन्द्रकान्त अभिधान' नामसे असमीया भाषाके एक शब्दकोश-रचनाका कार्य प्रारम्भ किया गया। उसकेलिए शब्द-संग्रहके कार्यमें रुद्रकान्त गोस्वामी, कुँहिराम दास, नकुलचन्द्र भूया, देवानन्द भराली प्रभृति कुछ व्यक्तियोंने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। चन्द्रकान्तके पिता तथा दाता राधाकान्त सन्दिकै और भाई कृष्णाकान्त सन्दिकैका सहयोग इस क्षेत्रमें चिरस्मरणीय है। इस वर्षका उल्लेखनीय दूसरा काम था—प्राचीन अप्रकाशित ग्रन्थोंकी खोज।

सातवाँ सम्मिलन :—स० १९२४ के दिसम्बर २७ से २९ तक गुवाहाटीके लताशिल मैदानमें असम साहित्यसभाका सातवाँ सम्मिलन बड़े उत्साह तथा आड़म्बरके साथ सम्पन्न हुआ। सत्यनाथ बरा स्वागत समितिके सभापति थे। लक्ष्मीनाथ शर्मा स्वागत समितिके प्रधान सचिव और सर्वेश्वर शर्माकटकी सहयोगी सचिव थे। उस समय बंगालमें रहकर भी असमीया भाषा और साहित्यके क्षेत्रमें पथ-प्रदर्शन करनेवाले साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा सम्मिलनके अध्यक्ष चुने गये। बेजबरुवाके प्रति लोगोंके मनमें जो श्रद्धा थी, शायद

उसनेही असमके विभिन्न स्थानोंके नवीन और प्रवीण सभी साहित्य-कारोंको वहाँ खींच लाया। इस सम्मिलनमें जितनी बड़ी संख्यामें साहित्यसेवी लोग उपस्थित थे, उतनी बड़ी संख्यामें उससे पहले किसी साहित्य सम्मिलनमें साहित्यसेवी लोग उपस्थित नहीं हुए थे।

सम्मिलनके सभापति बेजबरुवाका अभिभाषण विस्तृत विषय-वस्तु तथा विशिष्ट प्रकाश-भंगिमाके कारण साहित्य कलाकी दृष्टिसे भी महत्त्वपूर्ण था। संगीत शाखाके सभापति नगेन्द्रनारायण चौधुरी सभामें उपस्थित न हो सके। पर उनका भेजा हुआ लिखित अभिभाषण सभामें पढ़कर सुनाया गया। सम्मिलनकी मूलसभामें कुछ निबन्ध पाठ और कविता पाठ भी किये गये। असमीया भाषामें ऐतिहासिक उपन्यासकारोंसे अग्रणी रजनीकान्त बरदलैने संगीत शाखाके अध्यक्षका दायित्व सँभाला था।

सम्मिलनके प्रस्तावानुसार दाता राधाकान्त सन्दिकै, राधानाथ गोस्वामी और दक्षिणपाटके अधिकारको साहित्यसभाके हितैषी सदस्य (Patrons) मनोनीत किया गया। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा, हेमचन्द्र गोस्वामी, पद्मनाथ गोहाञिबरुवा, रजनीकान्त बरदलै, कालिराम मेधि, ईश्वरप्रसाद बरुवा और गंगाराम चौधुरीने सम्मिलनके तीसरे दिनकी आमसभामें असम साहित्यसभाके आजीवन सदस्य बननेकी प्रतिश्रुति दी। उसी वर्ष वे सभी आजीवन सदस्य भी बने। इनके अतिरिक्त ताराप्रसाद चलिहा, नन्देश्वर चक्रवर्ती और जितेण्द्र कुमार दास भी आजीवन सदस्य बने। वेणुधर शर्मा साहित्यसभाके प्रचारक नियुक्त हुए। प्रधान सचिव शरतचन्द्र गोस्वामी ही रहे। इस सम्मिलनमें गृहीत एक प्रस्तावके अनुसार असमीया भाषामें प्रथम प्रामाणिक शब्दकोष और व्याकरणके रचयिता हेमचन्द्र बरुवाकी स्मृति रक्षाकेलिए गुवाहाटीमें एक फलक स्थापित किया गया। सम्मिलनके अवसरपर एक रातको

मनोरंजनके लिए पुतलीका नृत्य दिखाया गया और दूसरी रातको कामरूप नाट्यसमितिकी तरफसे घनकान्त बरुवा रचित 'उषा' नाटकका अभिनय किया गया।

ई० १६२५ के २८ जनवरीको दानवीर राधाकान्त सन्दिकै से प्राप्त तीस हजार रुपयोंके 'चन्द्रकान्त-इन्द्रकान्त स्मारक न्यास'का पंजीयन हुआ। पंजीयनके दलीलमें उल्लिखित शर्तोंका सारांश इस प्रकार है—

(१) इस धनराशिका उपयोग असमीया भाषाकी चर्चा तथा उन्नतिके लिए करना होगा।

(२) सरकारसे प्राप्त जमीनपर सभाके द्वारा इनमेंसे पन्द्रह हजार रुपयोंके व्ययसे 'चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन' नामसे साहित्यसभाका भवन निर्माण करना होगा।

(३) भवननिर्माण व्ययके अतिरिक्त और जो पन्द्रह हजार रुपये बचेंगे, उन रुपयोंका उपयोग शुल्कमुक्त ऋणपत्र (Bond) खरीदकर उसके व्याज से चन्द्रकान्त शब्दकोशका संकलन तथा प्रकाशनका कार्य भी करना होगा। इसके बाद इन्द्रकान्तकी स्मृति-रक्षाके उद्देश्यसे 'असम बुरंजी' (असमका इतिहास)का प्रणयन अथवा वैसाही कुछ दूसरा काम करना होगा।

सन्दिकैजीके इस दानसे असम साहित्यसभाको आगे बढ़नेमें बहुत बल मिला। उसी वर्ष दक्षिणपाट सत्रके अधिकारसे प्राप्त न्यास-पूँजीके धनसे नीलकण्ठकृत 'श्रीश्रीदामोदरदेव चरित' नामक पुस्तकके सम्पादन और प्रकाशनकी व्यवस्था की गई। सभाने पूर्वप्रतिश्रुतिके अनुसार कमलादेवी न्यास-पूँजीके धनसे 'कमलादेवी शिशु साहित्य' प्रतियोगिताकी व्यवस्था की। प्रतियोगितामें रोषेश्वर शर्माको 'कथामहाभारत'शीर्षक पुस्तक रचना पर प्रथम पुरस्कार मिला। अगले वर्षकेलिए

महाराज नरनारायण, मणिराम देवान और मोमाइ तामुली बरबरुवा इन तीनों विषयोंपर जीवनी पुस्तकोंके लिए पचास-पचास रुपयोंके तीन पुरस्कारोंकी घोषणा की गई।

तृतीय अध्याय

विकासके पथपर

अबतक साहित्यसभाका संगठन काफी मजबूत हो चुका था। अपना स्थायी कार्यालय, न्यासपूँजी, प्रचार, प्रकाशन आदि कार्योंके द्वारा समाजमें सभाकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। समाजके विविध श्रेणियोंके लोगोंका सहयोग साहित्यसभाको मिला। ऐसे कुछ उदाहरण बादके सम्मिलनोंमें हम देखेंगे।

आठवाँ सम्मिलन :—सन् १६२५ में २७ से २६ दिसम्बर-तक नगाँव शहरमें साहित्यसभाका आठवाँ सम्मिलन हुआ। उपन्यासकार रजनीकान्त बरदलै सम्मिलनकी मूलसभाके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे—गुवाहाटीके आर्ल लॉ कॉलेजके अध्यक्ष

ज्ञानदाभिराम बरुवा । रामेश्वर बरुवा और विष्णुराम बरा संयुक्त सचिव थे। मतिराम बरा और समाजकर्मी हलधर भूयाकी सेवाभी इस क्षेत्रमें विशेष उल्लेखयोग्य है। मतिराम बरा स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद असमके वित्तमन्त्री बने थे। इस सम्मिलनकी कुछ विशेषताएं इस प्रकार है :—

(१) सभामंडप स्थानीय खद्दरोंसे [जो घरेलू करघेसे बुने भी गये थे] सजाया गया था और करीब डेढ़ हजार दर्शकोंमें काफी संख्यक महिलाएँ थीं।

(२) सम्मिलनके साथ इतिहासकी भी एक नई शाखा यहाँ शुरू की गई। इस शाखाके अध्यक्ष चुने गये थे इतिहासविद हितेश्वर बरबरुवा। बरबरुवाजी एक ऊँचे दर्जेके कवि भी थे।

(३) संगीत शाखाका तीसरा अधिवेशन इस सम्मिलनके साथ चन्द्रधर बरुवाकी अध्यक्षतामें हुआ। अध्यक्षका भाषण गाम्भीर्यपूर्ण था। गीतकार पद्मधर चलिहाने संगीतके सम्बन्धमें एक लेख पाठ किया। इनके अलावा और कुछ कला तथा साहित्य-प्रेमियोंने इसमें विशेष रूपसे भाग लिया। कवि रत्नकान्त बरकाकती और गीतकार कमलानन्द भट्टाचार्य आदिने इन कार्योंमें काफी सहयोगिता की थी।

(४) तीसरे दिनकी सभामें शशीचन्द्र बरबरुवाका व्यायाम-कौशल प्रदर्शन तथा जोरहाटके प्रख्यात व्यायामवीर बलिनारायण बरुवाका शारीरिक शक्ति प्रदर्शन एक महत्त्वपूर्ण मनोरंजनकी बात थी। बलिनारायण बरुवा चलती मोटर गाड़ी हाथसे पकड़कर रख लेनेमें समर्थ व्यक्ति थे। नगांवके बाद धुबुरीके सम्मिलनमें भी बरुवाने ऐसा चमत्कार का खेल दिखाया था। इन तमाशोंके अतिरिक्त रातको तीनों दिन नाटकोंका अभिनय भी हुआ था।

इस सम्मिलनमें गृहीत प्रस्तावके अनुसार बहुत दिनोंसे वांछित 'साहित्यसभा पत्रिका' [त्रैमासिक] चन्द्रधर बरुवाकी सम्पादनामें शकाब्द १८४९के आश्विनसे अगहनकी पहली संख्या [ई० १९२७को] निकली। कवि विनन्दचन्द्र बरुवाको 'महाराज नरनारायण' पुस्तकपर 'शिशुसाहित्य' का [बाल-साहित्यका] कमलादेवी पुरस्कार दिया गया।

सन् १९२९के दिसम्बर मासके २ तारीखको असमके गवर्नर सर जॉन कार [Sir John Kere]के द्वारा 'चन्द्रकान्त इन्सटिट्यूट'का गृहारम्भ करवाया गया। बादमें इसको 'चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन'के नाम से पुकारा जाने लगा।

नवम सम्मिलन :—स० १९१९के २९ व ३० दिसम्बरको बंगालकी सीमापर स्थित धुबुरी शहरमें साहित्यसभाका नवम सम्मिलन बुलाया गया। वेणुधर राजखोवा इस सम्मिलनके लिए सभापति चुने गये। राजखोवाजी भी चन्द्रकुमार आगरवाला और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाके साथ कलकत्तेमें काम करनेवालोंमेंसे एक थे। उनकी रचना 'खण्डवाक्यकोष' [मुहावरोंका कोश] असमीया भाषाके लिए विशेष महत्त्वकी वस्तु है।

सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष जमींदार रवीन्द्रनारायण चौधुरी थे। इस सम्मिलनमें भी शरतचन्द्र गोस्वामी लगातार छठे बारके लिए प्रधान सचिव चुने गये।

सभापति राजखोवाके लिखित सुदीर्घ अभिभाषणका एकांश कुछ बंगाली दर्शकोंके लिए असन्तुष्टिका कारण बन गया। परिस्थिति कुछ बिगड़ने जा रही थी; किन्तु कुछ होशियार लोगोंकी कोशिशसे वैसा होने न पाया। सभाका कार्य यथाविधि सम्पन्न हो सका।

देशभक्त तरुणराम फुकनका[13] ओजस्वी भाषण तथा लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा पठित 'गोवालपाराका अतीत गौरव' शीर्षक लेख सुनकर श्रोता-गण मन्त्रमुग्ध से चुप रह गये। इतिहास शाखाके अध्यक्ष अध्यापक सूर्यकुमार भूञा थे। भूञाजी बादको गुवाहाटी विश्वविद्यालयके उप-कुलपति भी बने। असमके इतिहासपर अन्वेषण और सम्पादन कार्यमें डॉ भूञाकी एक विशिष्ट भूमिका है। बंगाली भाषामें लिखित 'कोचविहारेर इतिहास' शीर्षक ग्रन्थके लेखक कोचबिहार कॉलेजके अध्यापक खान आमानुल्ला अहमद चौधुरीने एक तथ्यपूर्ण निबन्ध पाठ किया। इस बार सर्वप्रथम दर्शन शाखाका सम्मिलन हुआ। दर्शन शाखाके सभापति षड़ानन तर्कतीर्थ थे। इसके बाद केवल एक ही बार दर्शन शाखाका सम्मिलन १९३७में गुवाहाटीमें हुआ।

धुबुरी-सम्मिलनमें पहली रातको बरपेटाके नाट्यशिलिपयोंके द्वारा अम्बिकागिरि रायचौधुरी-रचित 'जयद्रथबध' नाटकका और दूसरी रातको असमके विभिन्न स्थानोंसे आए हुए अभिनेताओंके द्वारा लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाके 'जयमती कुँवरी' नाटकका अभिनय किया गया।

साहित्यसभाके प्रस्तावके अनुसार उसी वर्षसे असमकी सरकारने कॉटन कॉलेजमें असमीया भाषा-साहित्यके अध्यापनके लिए एक प्रवक्ता (लेकचरार) नियुक्त किया। पर साहित्यसभाको उससेही सन्तोष नहीं हुआ। सभाकी तरफसे एक प्रवाचक (प्रोफेसर) नियुक्तिकी माँग चलती रही। सन् १९२७के भीतर नीलकण्ठकृत "श्रीश्रीदेवदामोदर चरित"का प्रकाशन हुआ और कमलादेवी न्यास-पूँजीसे विनन्द

[13] सन् १९२६को गुवाहाटीमें जातीय काँग्रेसका अधिवेशन हुआ था। नवीन चन्द्र बरदलै और तरुणराम फुकन इस कार्यमें असमके अगुआ थे। इसमें दोनोंकी बहुत आर्थिक क्षति हुई। असममें बरदलैको कर्मवीर और फुकनको देशभक्त कहते हैं।

बरुवाकी 'महाराज नरनारायण'के प्रकाशनकी व्यवस्था भी की गई। उपन्यासकी प्रतियोगितामें श्रेष्ठ उपन्यास स्वीकृत होने पर 'साधना' उपन्यासके लेखक दण्डिधर कलिताको तीन सौ रुपयोंका पुरस्कार साहित्यसभाकी तरफसे दिया गया। स० १९२७ में २० मईसे शरत चन्द्र गोस्वामीको सरकारने शिक्षा विभागके सहायक परिदर्शक नियुक्त कर जोरहाटसे स्थानान्तर किया। तब साहित्यसभाकी कार्यपालिका सभाने पूर्णानन्द शर्मा पाठकको प्रधान सचिवका भार सौंपा। आगामी दो वर्षोंके सम्मिलनोंमें भी पाठकजी ही प्रधान सचिव चुने गये।

दसवाँ सम्मिलन :—स० १९२७के ८ और ९ अक्टूबरको देशभक्त तरुणराम फुकनके सभापतित्वमें गोवालपारा शहरमें सम्मिलन सम्पन्न हुआ। भोलानाथ चौधुरी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। असम सरकारकी तरफसे भी इस वर्षसे हजार रुपयोंका वार्षिक अनुदान मिलने लगा।

ग्यारहवाँ सम्मिलन :—स० १९२८को साहित्यसभाका सम्मिलन नहीं हुआ। १९२९के ३० और ३१ मार्चको जोरहाटमें देशप्रेमी तथा दार्शनिक कवि कमलाकान्त भट्टाचार्यके पौरोहित्यमें ११ वाँ सम्मिलन सम्पन्न हुआ। रायबहादुर शिवप्रसाद बरुवा (उस समय असमके भीतर सबसे धनी व्यक्ति) स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। धुबुरीके प्रमथनाथ चक्रवर्ती इतिहास-शाखाके सभापति थे। सम्मिलनके दूसरे दिन आलीगढ़ विश्वविद्यालयके प्राक्तन उपकुलपति डॉ जियाउद्दिन अहमद विशिष्ट अतिथि थे। उनका भाषण मनोग्राही था। सम्मिलनमें एक धन्यवाद सूचक प्रस्ताव भी पास किया गया। असमके गवर्नर लौरि हैमण्ड (Laurie Hammond) साहबने बंगालके मैमनसिंह जिलेसे

आकर असममें वसनेवाले लोगोंको असमीया भाषा अपनानेकी सलाह दी थी। इसलिए साहित्यसभाके इस सम्मिलनमें गवर्नर साहबको धन्यवाद ज्ञापन किया गया। सम्मिलनके उपलक्ष्यमें एक रात मित्रदेव महन्तके 'वैदेहीवियोग' नाटकका अभिनय जोरहाट नाट्यमन्दिरमें हुआ था।

बारहवाँ सम्मिलन :—सन् १९३०के ३० और ३१ मार्चको गोलाघाटमें साहित्यसभाका बारहवां सम्मिलन सम्पन्न हुआ। स्वागत समितिके अध्यक्ष ब्रह्मानन्द दत्त थे। सम्मिलनकी मूलसभाके सभापति कवि मफिजुद्दिन अहमद हाजरिका थे। इतिहास शाखाके सभापति रजनीकान्त पद्मपति थे। रातको दैवचन्द्र तालुकदारके ऐतिहासिक नाटक 'राधारुक्मिणी'का अभिनय हुआ था।

हजार रुपयोंका वार्षिक अनुदान सरकारने इस बार बन्द कर दिया। देशप्राण लक्ष्मीधर शर्माके प्रस्तावानुसार साहित्यसभाकी तरफसे काछार जिलेमें प्रचारके लिए लोकसाहित्यके अन्वेषक श्रीरामचन्द्र दासको भेजा गया। सम्मिलनमें निर्वाचित प्रधान सचिव कमलाकान्त बरुवाकी अकाल मृत्यु वर्षके मध्य भागमें ही होनेपर कार्यपालिकाने देवेश्वर चलिहाको प्रधान सचिवका भार सौंपा। वे बादके दो वर्षोंमें भी प्रधान सचिव चुने गये।

तेरहवाँ सम्मिलन :—स० १९३१के दिसम्बर महीनेके अन्तिम सप्ताहमें शिवसागरमें असम साहित्यसभाका तेरहवां सम्मिलन सम्पन्न हुआ। 'आवाहन' मासिक पत्रिकाके पृष्ठपोषक और कहानीकार जमींदार नगेन्द्रनारायण चौधुरी सम्मिलनके सभापति थे। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे—भारतीय जातीय कांग्रेसके कर्मी, समाजसेवक तथा शिक्षाव्रती भुवन चन्द्र गगै।

मूल सभाके सभापति चौधुरीका भाषण इतिहास, पुरातत्त्व, साहित्य आदि विविध विषयक तथ्योंसे पूर्ण था। इतिहास, शाखाके सभापति सोनाराम चौधुरीका भाषण भी तथ्य समृद्ध था। सम्मिलनके साथ जो प्रदर्शनी हुई, उसका उद्घाटन सैयद महम्मद सादुल्लाने किया था। सैयद सादुल्ला असमकी लीगमन्त्री सभाके प्रधानमन्त्री भी बने थे।

साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाको इस सम्मिलनमें 'रसराज'-की उपाधि दी गई। उस समय कलकत्ता विश्वविद्यालयकी हाइस्कूल परीक्षाके पाठ्यक्रममें संस्कृतको वैकल्पिक विषय बना दिया गया। उस विषयपर सम्मिलनने असन्तुष्टि प्रकट की और पुनः अनिवार्य विषयके रूपमें प्रवर्तन करनेकी माँग की गई। शामको विचित्रानुष्ठान गीतिकवि पार्वतिप्रसाद बरुवाके गीतात्मक नाटक 'कमता-कुँवरी'का गीताभिनय हुआ।

शिवसागरके सम्मिलनमें निर्वाचित कार्यपालिकाके कार्यकालमें ही स० १९३३में 'चन्द्रकान्त अभिधान' प्रकाशित हुआ। साहित्यसभाके प्रकाशित ग्रन्थोंमें यह अबतक सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ है, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु इसके कुछ शब्दोंकी व्याख्याने [विशेषकर जाति-उपजाति विषयक] कुछ दिनोंतक लोगोंमें वाद-विवादकी सृष्टि की थी।

चौदहवाँ सम्मिलन :—स० १९३३के २७ और २८ दिसम्बरको लक्ष्मीमपुरमें चौदहवां सम्मिलन बुलाया गया। सम्मिलनके अध्यक्ष थे ज्ञानदाभिराम बरुवा। प्रत्नतत्त्वविद सर्वेश्वर शर्माकटकी इतिहास शाखाके सभापति थे। साहित्यप्रेमी सर्वेश्वर बरुवा स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। आप विधान सभाके भी सदस्य बने थे।

इस सम्मिलनमें पद्मनाथ गोहाञि बरुवाको अभिनन्दन पत्रके द्वारा सम्मानित किया गया। साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाको

एक साहित्यिक पेन्शन देनेका अनुरोध एक प्रस्तावके द्वारा सरकारके पास भेजा था ; किन्तु शिक्षा विभागके द्वारा यह बताया गया कि—बेजबरुवाको साहित्यिक कृतित्वके कारण स्वीकृति मिलनी चाहिए ; पर खेदकी बात है—सरकार अर्थाभावके कारण इस प्रस्तावको कार्यान्वित नहीं कर सकेगी। अबतक 'चन्द्रकान्त अभिधान'के कुछ शब्दोंकी व्याख्याके सम्बन्धमें जो, तर्क-वितर्क हो रहा था, उसकी समाप्तिकेलिए एक संशोधित परिशिष्ट छापनेका सिद्धान्त भी सम्मिलनमें ग्रहण किया गया। साहित्यसभापत्रिकाके लिए आलोचक तथा कवि डिम्बेश्वर नेओग और निष्ठावान कर्मी पूर्णानन्द शर्मापाठक दोनोंको युग्म सम्पादक चुना गया।

पन्द्रहवाँ सम्मिलन :—स० १९३४के २६ और २७ दिसम्बरको असम साहित्यसभाका पन्द्रहवाँ सम्मिलन मंगलदई शहरमें सम्पन्न हुआ। उस समयतक लक्षीमपुर और मंगलदई दोनों शहरोंके लिए आने-जानेकी अच्छी सुविधा नहीं थी। दोनों शहर बहुत छोटे थे। केवल सवडिविजनल अफसरके कार्यालयके कारण ही शहर बना था, व्यवसाय-वाणिज्यकी दृष्टिसे महत्त्व नहीं था। तो भी लोगोंने काफी उत्साहके साथ सम्मिलनका कार्य पूरा किया। तपेश्वर शर्मा स्वागतसमितिके अध्यक्ष थे। सम्मिलनकी मूल सभाके अध्यक्ष कवि तथा आलोचक आनन्दचन्द्र आगरवाला थे। संगीत शाखाके अध्यक्ष 'कुलनि' शीर्षक संगीत ग्रन्थके रचयिता पद्मधर चलिहा थे। इतिहास शाखाके अध्यक्ष राजमोहन नाथ बी० ई० तत्त्वभूषण चुने गये थे ; वे किसी विशेष कारण वहा उपस्थित न हो सके। इसलिए उस शाखाकी कार्यसूची छोड़ दी गई। सम्मिलनकी मूलसभाके अन्तमें स्वागत समितिके एक विशिष्ट सदस्य रायसाहब रत्नेश्वर

दाशगुप्तने सभापति तथा अन्यान्य विशिष्ट अतिथियोंको अपने घर बुलाकर जलपान की व्यवस्था की। उस समय दाशगुप्तजीने आवेगभरे स्वरमें कहा था—"मइ यदि असमीया नहओ, तेनेहले असमीया कोन ?" [अगर मैं असमीया नहीं हूँ, तो असमीया और कौन है ?] दाशगुप्तकी उस आवेगगलित कण्ठध्वनि बहुत दिनोंतक श्रोताओंके कानोंमें गुँजती रही। इस प्रसंगमें ध्यान देनेकी बात यह है कि—असममें असमीया और गैरअसमीयाकी समस्या है। सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रमें असमके स्थायी वासियों और नवागत लोगोंमें कभी कभी खटपट भी हो जाती है। विशेषकर बंगाली भाइयोंसे ऐसा झगड़ा अधिक होता है। अधिकांश बंगाली असमके लोगोंसे मेल-मिलापकी कोशिश बहुत कम करते हैं—ऐसा कुछ लोग सोचते हैं। पर दाशगुप्त जैसे बंगालसे आए हुए लोग भी काफी हैं, जो अपनेको असमीया मान लेनेमें हिचकिचाहट नहीं दिखाते।

सम्मिलनमें आगेके लिए चन्द्रधर बरुवाको प्रधान सचिव निर्वाचित किया गया। सम्मिलनकी रातको तपेश्वर शर्मा-रचित 'शिवाजी' नाटकका अभिनय हुआ।

स० १९३५/३६की 'साहित्यसभापत्रिका'के लिए असम सरकारने ६०० रुपयोंका एक अनुदान मंजूर किया। ई० १९३५के २० नवम्बरको साहित्यसभाकी कार्यपालिकाने सोलहवें सम्मिलनके लिए अध्यक्ष लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाको निर्वाचित किया। साथ ही साथ यह भी निश्चय हुआ कि यदि बेजबरुवाजी सम्मत न हो, तो सभापति निर्वाचनके लिए मतग्रहणकी व्यवस्था की जाय। प्रस्तावके दूसरे अंशका विरोध करते हुए नीलमणि फुकनने समाचार पत्रमें एक विवृति दी थी ; पर उससे कुछ काम न बना। कार्यपालिकाके प्रस्तावानुसार मतग्रहणमें भी बेजबरुवा ही निर्वाचित हुए ; किन्तु बेजबरुवा इस बारभी अध्यक्ष

बनने को सहमत न हुए। अन्तमें स० १९३६के १६ मार्चको कार्य-पालिकाके सिद्धान्तके अनुसार 'विहगी कवि' रघुनाथ चौधारी[14] सभापति निर्वाचित हुए। इस प्रसंगमें एक बात उल्लेखनीय हैं कि—समाचार पत्रमें साहित्यसभाके अध्यक्षपदके सम्बन्धमें जो वादनुवाद हो रहा था, उसमें बेजबरुवाजीका परामर्श यह था कि—भाषातत्त्वविद और आलोचक डॉ० वाणीकान्त काकतिको साहित्यसभाकी ओरसे यह सम्मान मिलना चाहिए।

सोलहवाँ सम्मिलन :—स० १९३६के अप्रैलमें तेजपुरमें सम्मिलन बुलाया गया। आनन्दचन्द्र आगरवाला स्वागताध्यक्ष थे। संगीत शाखाके स्वागताध्यक्ष थे रूपकोंवर (रूपकुमार=कलाकार) ज्योतिप्रसाद आगरवाला,[15] जमींदार और मासिक पत्रिका 'आवाहन'के पृष्ठ-पोषक कहानीकार नगेन्द्रनारायण चौधुरी संगीत शाखाके सभापति रहे। मूल सभामें सर्वसम्मतिसे गृहीत एक प्रस्तावके अनुसार साहित्य-सभाके द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकोंमें अवांछित कुछ बातोंको स्थान मिलनेके कारण दोनोंका प्रचार बन्द कर दिया गया। [श्रीश्रीबनमाली-देवर चरित' और 'श्रीश्रीदेवदामोदर चरित' ये दोनों पुस्तकें नरदेव न्यासपूँजीके धनसे छपी थीं, दोनोंके सम्पादक थे शरतचन्द्र गोस्वामी]

---

[15] पक्षी विषयक बहुत सी कविताओंकी रचनाके कारण कवि चौधुरी 'विहगी-कवि' नामसे परिचित हैं।

[14] ज्योतिप्रसाद आगरवाला असमीया संगीत और नाटकके क्षेत्रमें युगान्तकारी कलाकार माने जाते हैं। स्थानीय स्वर और भाव वैशिष्टयके द्वारा उन्होंने असमके संगीतको एक नवीन रूप दिया। बंगालमें 'रवीन्द्र-संगीत'की भाँति असममें भी 'ज्योतिसंगीत'का एक अपना स्थान है। ई० स० १९३५ में ज्योतिप्रसादने असमीया भाषाका प्रथम चलचित्र भी बनाया था।

अगले वर्षके लिए देवानन्द शर्मा प्रधान सचिव चुने गये। शर्माके कार्यकालमें हजार रुपयोंका सरकारी वार्षिक अनुदान फिर मिला।

सत्रहवाँ सम्मिलन :—स० १९३७के दिसम्बरमें गुवाहाटीमें साहित्यसभाका सप्तदश सम्मिलन अनुष्ठित हुआ। असम कांग्रेसके प्रमुख नेता लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै [आप स्वतन्त्रता प्राप्तिके बाद प्रथम मुख्य मन्त्री बने थे] स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। शानदार वातावरणमें सभाका कार्य सम्पन्न हुआ। प्रथितयशा संस्कृत पण्डित, तत्कालीन असमके एकमात्र गैर सरकारी महाविद्यालय जोरहाटके जगन्नाथ बरुवा कॉलेजके अध्यक्ष कृष्णकान्त सन्दिकै मूलसभामें सभापति पदपर थे। सचमुच यह सम्मिलन पंडितोंका मिलनक्षेत्र बना था। इतिहास-विद कनकलाल बरुवा इतिहास-शाखाके अध्यक्ष थे। उनका भाषणभी पांडित्यपूर्ण था। कीर्तिनाथ शर्माबरदलै संगीत शाखाके सभापति थे। दर्शन शाखाके सभापति थे—राधिकानन्द चौधुरी। इतिहास, संगीत और दर्शन शाखाके अतिरिक्त इस सम्मिलनके साथ ग्रन्थागार और अर्थ-नीति विषयक भी दो शाखा सभाएँ हुई थीं। उनके अध्यक्ष थे क्रमशः रामेश्वर बरुवा और उमाकान्त गोस्वामी। साहित्यसभाकी स्वागत समितिकी तरफसे स्मृतिग्रन्थ प्रकाशन भी यहीं पहलेपहल हुआ। माधवचन्द्र बेजबरुवा द्वारा संकलित 'प्रबन्धसंग्रह' इस प्रकारका पहला स्मृति ग्रन्थ था। रामेश्वर बरुवा इस सम्मिलनमें प्रधान सचिव चुने गये। उनके कार्यकालमें संस्कृत 'सात्वत तन्त्र'की १७वीं शतीके भागवतमिश्रद्वारा अनूदित पोथीका प्रकाशन कार्य शुरू किया गया।

गुवाहाटीके सम्मिलनके बाद असम साहित्यसभामें कुछ ऐसे कारण उपस्थित हुए, जिसके परिणाम स्वरूप संगठन कार्यमें कुछ विघ्न उपस्थित होने लगा। आर्थिक संकट, प्रशासनीय दुर्वलता आदि बहुत

सी बातें उनमें हैं। उन बातोंके साथ साथ युद्धकालीन स्थितिने भी वातावरण को और खराब कर डाला। तो भी सम्मिलनका कार्य बिल्कुल बन्द नहीं हुआ।

चतुर्थ अध्याय

आँधीके चक्करमें

सन् १९३९के ४ जनवरीको असम साहित्यसभाकी कार्यपालिकाने एक विशेष अधिवेशन बुलानेका सिद्धान्त ग्रहण किया। सांगठनिक और आर्थिक विषयपर कुछ व्यवस्था ग्रहण करना इसका उद्देश्य था। इसके पहलेही १८ वां सम्मिलन बुलानेमें गोवालपाराने पुनः अक्षमता दिखाई। अतः १९३९के जनवरीकी कार्यपालिकाके सिद्धान्तके अनुसार उसी वर्षके ८ और ९ अप्रैलको चन्द्रकान्त सन्दिकै भवनमें १६ सदस्योंकी उपस्थितिमें रायबहादुर हेरम्बप्रसाद बरुवाकी अध्यक्षतामें विशेष अधिवेशनका काम सम्पन्न किया गया। इस सभामें असम साहित्यसभाके नियमोंका आमूल परिवर्तन किया गया। उपस्थित दोही सदस्योंने इस परिवर्तनकी विरोधिता की थी। दूसरे एक प्रस्तावके अनुसार

इस विशेष सम्मिलनने तेजपुर सम्मिलनमें गृहीत उस प्रस्तावको भी रद्द कर दिया, जिसमें साहित्यसभाके द्वारा नरदेवग्रन्थावलीके अन्तर्गत प्रकाशित 'श्रीश्रीबनमालीदेव चरित और श्रीश्रीदेवदामोदर चरित'का प्रचार निषिद्ध किया गया था। तीसरे एक प्रस्तावके अनुसार कार्यपालिकाका संगठन भी नया किया गया, जिसमें रामेश्वर बरुवा पुनः प्रधान सचिव निर्वाचित हुए। यह नयी समिति असम उपत्यकाके विद्यालय-परिदर्शक शरतचन्द्र गोस्वामीके द्वारा प्रस्तावित वर्तनी विषयक बातोंमें भी उलझ गई थी।

१९३९के १ जुलाईको कार्यपालिकाकी एक बैठकमें एक 'वार्षिक साधारण सभा बुलानेका प्रस्ताव ग्रहण किया गया। उस प्रस्तावके अनुसार यह प्रथम वार्षिक सभा स० १९४०के २७ और २८ जुलाईको जोरहाटके प्रधान कार्यालयमें जोरहाट राजकीय विद्यालयके प्रधान शिक्षक खान साहब जेहिरुद्दिन अहमदके सभापतित्वमें सम्पन्न हुआ। पूर्णानन्द शर्मापाठक प्रधान सचिव चुने गये।

उधर गोवालपारासे अधिवेशन (सम्मिलन) बुलानेकी आशा न देखकर साहित्यसभाकी दूसरी कार्यपालिकाके सदस्योंने भी जोरहाटमें ही सम्मिलन बुलानेकी इच्छासे एक स्वागत समिति बनाई। हेरम्ब प्रसाद बरुवा समितिके अध्यक्ष बनाए गये। १९४०के २६ जुलाईको इस प्रसंगमें जो कार्यपालिकासभा बैठी, वहीं ढाका विश्वविद्यालयके प्रवाचक (प्रोफेसर) असमके प्रथम पी० एच० डी० डॉ० मयिदुल इसलाम बरा सम्मिलनके लिए अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

२६ जुलाईकी सभाके उस प्रस्तावको जेहुरुद्दिन अहमदकी अध्यक्षतामें हुई सभाने भी ग्रहण किया; जिसमें डॉ० मइदुल इसलामबराकी अध्यक्षतामें सम्मिलन सम्पन्न करनेका विचार किया गया था। इस

प्रकार सन् १६४०के दिसम्बर महीनेमें जोरहाटमें साहित्यसभाका अठारहवाँ सम्मिलन सम्पन्न हो सका। इस सम्मिलनमें मणिपुर राज्यके महाराजा चूड़ाचन्द्रसिंहकी उपस्थितिने असम उपत्यकाके स्थायी निवासी और मणिपुरी लोगोंके बीच सम्प्रीतिके बन्धनको सुदृढ़ बनानेमें सहयोगिता की। पहलेके सम्मिलनोंकी प्रथाका अनुसरण सम्पूर्ण रूपसे इस सम्मिलनमें नहीं किया जा सका। यहाँ शाखासभाएँ नहीं हुईं और नयी कार्यपालिकाका चुनाव भी नहीं हुआ।

१६३६के ८ और ६ अप्रैलके विशेष अधिवेशन तथा १६४०के २७ और २८ जुलाईको अनुष्ठित प्रथम वार्षिक सभा या सम्मिलनकी वैधताके सम्बन्धमें भिन्न भिन्न स्थानोंसे विशेषकर शिवसागर शाखा साहित्यसभासे तीव्र प्रतिवाद हो रहा था। जोरहाटके इस सम्मिलनमें वैधताकी जाँचकेलिए एक समिति बना दी गई। जाँच समितिमें दो अवसर प्राप्त न्यायाधीश, दो अवसर प्राप्त विचारक और एक अधिवक्ता भी सदस्य रखे गये।

सम्मिलनके उपलक्ष्यमें जोरहाट नाट्यमन्दिरमें कवि गणेश गगैका 'शकुनिर प्रतिशोध' नाटक अभिनीत हुआ।

जाँच समितिके निर्णयके अनुसार १६३६के अप्रैल ८ और ६ तारीखके विशेष अधिवेशनमें गृहीत सभी प्रस्ताव अवैध घोषित हुए। स० १६४१के दिसम्बर महीनेके १८ तारीखको जाँचसमितिने अपना प्रतिवेदन पेश किया। ऊपर बताया गया है कि—१८ वें सम्मिलनमें नयी कार्यपालिका नहीं बनाई गई। जो विवादमान तथा विचाराधीन कार्यपालिका थी उसीने सन् १६४१ के २५ जुलाईको १२ सदस्योंकी उपस्थितिमें, [जिनमें दस सदस्य जोरहाटकेही थे] चन्द्रधर बरुवाके सभापतित्वमें द्वितीय वार्षिक सम्मिलन बुलाया था। इसकी वैधताके सम्बन्धमें भी शिकायत होनेपर जाँच समितिने सम्मिलनके सारे सिद्धा-

न्तोंको अवैध घोषित कर दिया। उसी प्रकार स० १६४१के २३ अक्टूबरको जाँच समितिको पता चला कि उस विवादमान समयमें दो सचिव काम चला रहे थे। तब दोनों सचिवोंकी [रामेश्वर बरुवा और पूर्णनन्द शर्मापाठककी] लिखित विवृत्तियोंकी जाँच की गई। विवादमान दोनों पक्षोंके बीच मध्यस्थता करनेवालोंनेभी यह मान-लिया कि—१६३६के ८ और ६ अप्रैलके विशेष अधिवेशनके सिद्धान्त ग्रहणीय नही हैं। तेजपुरके सम्मिलनमें गृहीत प्रस्तावोंको रद्द करना भी उसके लिए अवैध कार्य था। इसके वाद स० १६४२के ४ अप्रैलको कार्यपालिकाने एक जरूरी विशेष सभा-आह्वान किया। २१ सदस्योंकी उपस्थितिमें नीलमणि फुकनकी अध्यक्षतामें सम्पन्न इस सभामें जाँच समितिका प्रतिवेदन सर्वसम्मतिसे ग्रहण कर लिया गया। अतः स० १६३६के ८ और ६ अप्रैलके विशेष अधिवेशनका सम्पूर्ण कार्य अवैध घोषित हुआ। साथही साथ जाँच समितिकी रायके अनुसार गुवाहाटी सम्मिलनमें निर्वाचित प्रधान सचिव और सहायक सचिवको पूर्णानन्द शर्मापाठकसे सम्पादकीय कार्यभार ग्रहण करनेका निर्देश दिया गया। उसके अनुसार यह भी बताया गया कि अप्रैलके १५ तारीखके भीतर यह कार्यभार सौंपनेका काम हो जाय और एक महीनेके भीतर गुवाहाटीके सम्मिलनमें निर्वाचित कार्यपालिकाकी सभा बुलायी जाय। सभाके इस निर्देशके अनुसार रामेश्वर बरुवाको पाठकसे कार्यभार सौंपा गया।

जोरहाटके अठारहवें सम्मिलनके बादका समय शान्तिपूर्ण नहीं था। दूसरे विश्वयुद्धने जो सन्त्रास फैलाया, उसका शिकार असमका पूर्वांचल भी हुआ। जोरहाट भी सामरिक कार्यक्षेत्रका एक केन्द्र सा बन गया। असम साहित्यसभाका केन्द्रीय कार्यालय चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन सैनिकोंके अधीन रहा। इसके फलस्वरूप बहुत से

कागजात दुष्प्राप्य ग्रन्थ आदि बहुत सी चीजें नष्ट-भ्रष्ट हुई या खो गईं। अतः असम साहित्यसभाका केन्द्रीय कार्यालय उस समय आज यहाँ—कल वहाँ, इधर-उधर व्यक्ति विशेषके घर-घर घूमने लगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक तथा राजनैतिक वातावरण भी काफी गर्म था। ४२का राष्ट्रीय आन्दोलन साहित्यसभाकी अपेक्षा बहुत जोरसे लोगोंका मन खींचने लगा था। इस प्रकार १९४४ सन्‌तक साहित्यसभाको निष्क्रिय होकर चुप रहना पड़ा।

सन् १९४४के बाद राजनैतिक वातावरण कुछ शान्त सा होने लगा था; पर युद्धकी विभीषिका बनी हुई थी और स० १९४५के अगस्ततक साहित्यसभाके प्रधान कार्यालयकी भाँति सरकारी और गैर सरकारी बहुत से घर सामाजिक कार्योंके लिए व्यवहार किये जाने लगे थे। युद्धकी समाप्तिके बादही धीरे धीरे दो चार घर अपने मालिकको मिलने लगे। ऐसी सामाजिक स्थितिमें भी साहित्य-सभाका जन्मस्थान शिवसागर शहरके कुछ साहित्यप्रेमियोंने साहित्य-सभाको पुनः सक्रिय बनानेकी कोशिश की। इसमें संगीतकार और कवि पद्मधर चलिहाकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिवसागरमें असम साहित्यसभाका उन्नीसवाँ सम्मिलन बुलाया गया। स्वागत समितिके मन्त्री थे पद्मधर चलिहा। स्वागताध्यक्ष थे महम्मद महिबुल्ला साहब।

सम्मिलनका अध्यक्ष निर्वाचन पहले तो मेल-मिलाप से हो रहा था; पर इस बार सभाके इतिहासमें नई बात हुई। सभापति निर्वाचनका अभियान शुरू हुआ। दो दल निकले। एक दलने 'दैनिक बातरि'के द्वारा [दैनिक बातरिके सम्पादक थे नीलमणि फुकन] नीलमणि फुकनका पक्ष समर्थन किया। दूसरे दलने 'असम-राइज' नामक समाचार पत्रके माध्यमसे शरतचन्द्र गोस्वामीका पक्ष लिया। दोनों

ओरसे प्रचार कार्य चला। अन्तमें शरतचन्द्र गोस्वामीके द्वारा प्रार्थित्वका प्रत्याहार करनेपर नीलमणि फुकन निर्विरोध निर्वाचित हुए। चुनावकी जरूरत नहीं रही।

उन्नीसवाँ सम्मिलन :—सन् १९४४के अक्टूबर महीनेके पूजाकी छुट्टीमें [बंगालकी भाँति असममें भी दशहरके समय दुर्गाकी पूजा होती है। उसके उपलक्ष्यमें कॉलेज एक महीना और स्कूल करीब १०-१२ दिनोंतक बन्द रहते हैं] सम्मिलन बुलाया गया। सभापति फुकनका ओजस्वी भाषण सभाके लिए प्रेरणाप्रद था।[16] असमीया साहित्यके इतिहासके प्रणेता और कवि डिम्बेश्वर नेओग इस सम्मिलनमें प्रधान सचिव चुने गये। मूल सभाके बाद रातको महापुरुष शंकरदेवके अंकीया नाटक 'रुक्मिणीहरण'का अभिनय शहरके विशिष्ट नागरिकोंने किया था।[17]

---

[16] वक्ता और कवि दोनोंके अच्छे गुण होनेके कारण फुकनजी वाग्मीवर फुकन और वाग्मीकवि फुकन कहलाते हैं। बादको भारत सरकारके साहित्य अकादेमीसे सदस्य महत्तम [Fellow member]का सम्मान भी मिला। अधिक उम्रके कारण 'कका' अर्थात् पितामह शब्द भी उनके लिए प्रयोग होता है।

[17] ई० १६ वीं शतीमें शंकरदेवने असमीया भाषामें पहले पहल नाटक लिखे। उनकी रचना रीति और भाषामें विशेषता है। इस विशेषताके कारण इस ढंगके नाटकोंको अन्य नाटकोंसे भिन्न समझनेके लिए 'अंकीया नाटक' कहा गया है। इन नाटकोंमें व्यवहृत भाषा 'ब्रजावली'में असमीया वाक्यगठनके साथ उत्तर भारतीय बोलियोंके तथा प्राकृतके भी शब्द और वाक्य गठन रीतिका प्रभाव देख पाते।

शिवसागरके इस सम्मिलनमें सभाकी नियमावली संशोधन कर नयी तत्परता लानेका प्रयास किया गया। इसके पूर्व सभाका नाम 'आसाम साहित्यसभा [अंग्रेजीमें Assam Sahitya Sabha] था। इस सम्मिलनमें 'असम साहित्यसभा [अंग्रेजीमें Asam Sahitya Sabha] किया गया। इससे पहले सम्मिलनकी मूलसभाके सभापतिका दायित्व अगले वर्षकी कार्यपालिकासे सम्बद्ध नहीं था। सभाके नये विधानके अनुसार मूलसभाके सभापतिका दायित्व बढ़ गया। उनको आगामी वर्षके लिए भी कार्यपालिकाके अध्यक्षका भार सौंपा गया। अतः तबसे असम साहित्यसभाके मुख्य कार्यवाहक या प्रशासक अधिकारीके रूपमें सभापतिका स्थान ऊँचा हो गया। पहले कार्यपालिकाके मुख्य अधिकारी या प्रशासकीय क्षमता सम्पन्न व्यक्ति प्रधान सचिव थे। कार्यपालिकामें सभापतिके अतिरिक्त और पन्द्रह सदस्योंमेंसे छः सदस्य जोरहाटमे रखनेका नियम बना। उल्लेखनीय है कि इससे पहले कुल इक्कीस सदस्योंमें से करीब सभी जोरहाटकेही थे। यदि कुछ सदस्य बाहरके हो भी, तो वे कार्यपालिकासभामें प्रायः उपस्थित नहीं होते थे। शायद आने-जानेका व्यय सभाकी तरफसे न मिलनेके कारण वे समयपर आ नहीं पाते थे। सभाके अभिलेखमें (Records) जोरहाटके बाहरक ऐसे सदस्योंका नाम मिलता है। इस सम्मिलनमें 'असम साहित्यसभा-समिति' नामक एक परामर्शदाता समिति बनाई गई। कार्यपालिका सभाको परामर्श देना उस समितिका काम था। बादको वह समिति 'असम साहित्यसभापरिषद' नामसे परिचित हुई।

नयी कार्यपालिका सभाको अपने कार्यपालनमें बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ा। प्रधान कार्यालय चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन तबतक सैनिकोंके कब्जेमें था। प्राक्तन प्रधान सचिव रासेश्वर

बरुवाने नये प्रधान सचिवको कागजात, हिसाब और रूपये-पैसे भी नहीं सौंपे। पुराने सदस्योंमें से कुछ सदस्योंने समान्तराल और एक साहित्यसभा गठनकी चेष्टा की थी। इस पक्षमें प्राक्तन सभापति और सम्पादक चन्द्रधर बरुवाका नामभी मिलता है। ऐसी स्थितिमें जोरहाटके साहित्यप्रेमियोंको दो बार विशेष अधिवेशन बुला कर विचार-विमर्श करना पड़ा। पहला विशेष अधिवेशन स० १६४४के २६ दिसम्बरको खान बहादुर केरामत आलीकी अध्यक्षतामें जोरहाट नाट्य मन्दिरमें हुआ और दूसरा विशेष अधिवेशन स० १६४७के २७ अक्टूबरको जेहिरुद्दिन अहमदकी अध्यक्षतामें हुआ।

असम साहित्यसभाके प्राक्तन सदस्योंमेंसे जिन्होंने शिवसागरके सम्मिलनमें संशोधित नया विधान मानना नहीं चाहा, उन्हींके द्वारा यह दूसरा दल बनाया गया था। बादको स० १६४७के अप्रैल महीनेमें डिब्रूगढ़ शहरमें अनुष्ठित असम साहित्यसभाके बीसवें सम्मिलनमें कार्यपालिका सभाके जो सदस्य चुने गये, उनको स्वीकृति देनेके साथ साथ सारा विवाद मिट गया। ध्यान रहे कि जोरहाटका पहला विशेष अधिवेशन [१६४४ के २६ दिसम्बरका] शिवसागर सम्मिलनके सिद्धान्तोंके विपक्षमें था और दूसरा विशेष अधिवेशन [१६४७के २७ अक्टूबरका] डिब्रूगढ़ सम्मिलनके बाद होनेके कारण सपक्षमें आ गया।

शिवसागर और डिब्रूगढ़ सम्मिलनके बीचका कार्यकाल विरोधके सम्मुखीन होते हुए भी सबल सभापति और सचिवकी कर्मतत्परताके कारण महत्त्वपूर्ण सफलताका कार्यकाल मानना पड़ेगा। फुकन और नेओग दोनोंने खाली हाथसे कार्य प्रारम्भ किया और अन्ततक असमके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक घूम-घूम कर सौ आजीवन सदस्य बनाए तथा सदस्योंसे चन्देका धन संग्रह किया। इसके द्वारा दस-

हजार रुपये साहित्यसभाके हाथमें आए और एक 'अक्षय पूँजी'की [Endowment fund] व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त इन्होंने जरूरी खर्चके वादभी असम साहित्यसभाकी साधारण पूँजीमें ४६३१ रुपये १२ आने [४६३१'७५] ६ पाईकी जमा और प्रयोजनीय सारे कागजात सुसम्बद्ध रूपसे नवनिर्वाचित प्रधान सचिवके हाथमें सौंपे। असम साहित्यसभाके इतिवृत्तकी पाण्डुलिपि प्रस्तुत करना और असमीया साहित्यकी विवरणात्मक तालिका प्रस्तुत करना आदि कार्य भी उन्होंने इस समयके भीतरही किया।

फुकन और नेओगकी ऐसी सक्रियता देखते हुए भी ठीक समयपर सम्मिलन न होनेके कारण शाखा सभाएँ और साहित्यप्रेमीलोग असन्तुष्ट होने लगे। शिलांग का मुकुलसंघ समाचार पत्रके द्वारा प्रत्याह्वान करते हुए संश्लिष्ट व्यक्तियोंको इस क्षेत्रमें सक्रिय बनानेका प्रयास करता रहा। अन्तमें करीब तीन वर्षोंके बाद डिब्रूगढ़में सम्मिलन बुलानेका प्रबन्ध होने लगा। नीलमणि फुकनही इस सम्मिलनके लिए भी सभापति निर्वाचित हुए।

बीसवाँ सम्मिलन, डिब्रूगढ़ :—१६४७के ४, ५ और ६ अप्रैलको डिब्रूगढ़ शहरमें बीसवाँ सम्मिलन सम्पन्न हुआ। वेणुधर राजखोवा स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। इतिहासविद सर्वानन्द राजकुमार इतिहास शाखाके सभापति हुए। एन० के० रुस्तमजी [डिब्रूगढ़के तत्कालीन उपायुक्त] संगीत शाखाके सभापति बने थे। साहित्यसम्मिलनके साथ यहीं पहले-पहल विज्ञान शाखाका भी अधिवेशन हुआ था। जीवनराम फुकन इस शाखाके सभापति थे। सम्मिलनके साथ जो प्रदर्शनी हुई थी, उसका उद्‌घाटन रत्नकुमारी राजखोवानीने किया था। अगले बारकेलिए मुक्तानाथ बरुवा प्रधान

सचिव चुने गये। शिलांगके मुकुलसंघके प्रतिनिधि केशवनारायण दत्त सहायक सचिव चुने गये। आगे वे प्रधान सचिव भी निर्वाचित हुए थे।

इस सम्मिलनके वाद सभाकी कार्यपालिकाके कार्यकालमें विशेष उल्लेखनीय काम नहीं हुआ। जयपुरमें अनुष्ठित सर्वभारतीय सभा P. E. N.[18] के लिए प्रतिनिधि भेजा गया था। उतना ही उल्लेख योग्य काम था। साहित्यसभाके सभापति नीलमणि फुकन स्वयं प्रतिनिधिके रूपमें वहाँ भाग लेने गये थे। इस प्रकार निष्क्रियताके तीन वर्ष बीतनेके बाद ई० स० १६५०को मार्घेरिटा नामक एक कसवेमें [कोयले की खान होनेके कारण छोटासा बाजार बना] इक्कीसवाँ सम्मिलन बुलाया गया।

इक्कीसवाँ सम्मिलन :—सन् १६५०के ११ और १२ मार्चको असमके जातीयतावादी नेता, कर्मपटु तथा कवि अम्बिकागिरि रायचौधुरीके सभापतित्वमें असम साहित्यसभाका सम्मिलन या वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। सम्मिलनमें प्रतिनिधियोंकी संख्या बीससे भी कम थी। अगले वर्षके लिए चुनी हुई कार्यपालिकामें उपस्थित प्रतिनिधियोंके प्रायः सभीको कुछ न कुछ स्थान मिला। अभ्यर्थना समितिके सभापति विपिनचन्द्र बरगोँहाइ थे। इन्द्रेश्वर बरठाकुर संगीत शाखाके सभापति थे। मूलसभाके अध्यक्ष रायचौधुरीके उद्दीप्त भाषणसे भी साहित्यसभाके सदस्योंके मनमें नई प्रेरणाका संचार नहीं हुआ। हाँ एक महत्त्वपूर्ण कार्यका सूत्रपात इस सम्मिलनमें हुआ।

---

[18] पोयेट, प्लेयर्स, एसेइस्ट एण्ड नोवेलिस्ट [कवि नाट्यकार निवन्धकार और उपन्यासकारोंकी सभा]

असमीया भाषा असमकी राज्यिक भाषा होनी चाहिए—यह प्रस्ताव इस सम्मिलनमें गृहीत हुआ था। स० १६५०के १६ जुलाईको इस प्रस्तावके आधारपर 'सदौ असम राज्यभाषा दिवस' उत्साह-उद्दीपनाके साथ गैर असमीया भाषा-भाषियोंके सहयोगसे पालन किया गया।

स० १६५१के मार्च महीनेके १५ तारीखसे १८ तारीखतक दिल्लीके लालकिलेमें अनुष्ठित सर्वभारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन'में भाग लेनेके लिए असम साहित्यसभाकी तरफसे सभापति रायचौधुरी और प्रधान-सचिव केशवनारायण दत्त प्रतिनिधि भेजे गये। सहायक सचिव हेमचन्द्र दत्त सम्मेलनकी 'भाषामहल' प्रदर्शनीमें असमीया भाषा-साहित्य विषयक कक्षके दायित्वमें रहे।

असम साहित्यसभा पत्रिका युद्धकालीन स्थितिमें बन्द थी। इस कार्यपालिकाके कालमें पत्रिकाका प्रकाशन पुनः होने लगा। इसके अलावा 'The Asom Sahitya Sabha : A Brief History of The Association and Its Works' नामक एक अंग्रेजी पुस्तिका भी प्रधान सचिवके द्वारा लिखी गई और साहित्यसभाकी तरफसे प्रकाशित हुई। [स० १६५३में]

इस प्रकार फिर करीव तीन वर्षोंतक सभाका वार्षिक सम्मिलन नहीं हुआ। गारो पहाड़के आस-पासकी किसी एक जगहमें, काछार जिलेमें अथवा शिलांगमें सहित्यसभाका सम्मिलन बुलानेके लिए जो कोशिश की गई थी, उसके सम्बन्धमें रायचौधुरीकी तरफसे 'असम साहित्यसभापत्रिकामें विवृति दी गई थी। अन्तमें असमकी तत्कालीन राजधानी शिलांग नगरमें नेतृस्थानीय लोगोंकी तत्परताके कारण करीव साढ़े तीनवर्षोंके बाद साहित्य सभाका सम्मिलन बुलाया गया। शिलांगके इस सम्मिलनका एक महत्त्वपूर्ण स्थान असम साहित्यसभाके

इतिहासमें है। इससे साहित्यसभाके पथमें आँधीका अन्त हुआ। साहित्यसभाके प्राक्तन प्रधान सचिव, सभापति, कवि और प्रमुख नाट्यकार अतुलचन्द्र हाजरिकाके कथनानुसार 'शिलांगके सम्मिलनमेंही असम साहित्यसभाके लिए पुनः "सुदिनका पौफटा है।"

पंचम अध्याय

आँधीके बाद

बाईसवाँ सम्मिलन :—स० १६५३के नबम्बर ८ और ६ को कवि तथा इतिहासविद् डॉ सूर्यकुमार भूञाकी अध्यक्षतामें बाईसवाँ सम्मिलन शिलांग शहरमें सम्पन्न हुआ। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे वित्तमन्त्री मतिराम बरा। सैयद मुकिबुर रहमान स्वागत समितिके मुख्य सचिव थे। इनके अतिरिक्त मुकुल संघके सभापति तथा तत्कालीन मुख्य अभियन्ता हरिप्रसाद बरुवाने, कार्यकरी सभापतिके रूपमें स्वागत समितिके कार्योंमें अथक परिश्रम किया। सम्मिलनकी सफलताके लिए असम सरकार ने जो सहयोग दिखाया, वह भूलनेकी बात न थी। प्रतिनिधियोंके रहने-ठहरनेके लिए विधायकोंके वासभवन

और दूसरे सरकारी भवनोंकी व्यवस्था की गई थी। यों तो शिलांग असमीया भाषा-क्षेत्रका शहर नहीं है। यहाँकी लोकभाषा 'खासी' है और बंगाली तथा हिन्दी बोलनेवालोंकी संख्या भी शिलांगमें काफी है। तो भी सरकारकी सहानुभूतिके कारण सम्मिलनको बहुत बल मिला।

सम्मिलनके प्रारम्भमें ही एक प्रदर्शनीकी व्यवस्था की गई थी। असम राज्यके राज्यपाल जयराम दास दौलतरामने उसका उद्घाटन किया। मुख्यमन्त्री विष्णुराम मेधिने सम्मिलनकी मूलसभाका उद्बोधन किया। असम साहित्यसभाके प्रथम सम्मिलनमें भी मेधिजीने भाग-लिया था और बादको भी कई सम्मिलनोंमें आप उपस्थित थे। भारत-वर्षके प्रसिद्ध नेता और विद्वान काकासाहब कालेलकरने भी मुख्य अतिथिके रूपमें यहाँ सहयोग प्रदान किया था।

असम विधानसभाके तत्कालीन अध्यक्ष कुलधर चलिहा संगीत-समारोहके अध्यक्ष रहे। मनोरंजनके अन्यान्य कार्यक्रमोंमें गारो, खासी, मिजो और नगा प्रभृति पहाड़ी जनगोष्ठियोंके नृत्य-गीत तथा दक्षिणपाट सत्रके भक्तोंद्वारा अभिनीत 'पारिजात हरण' नाटक विशेष रूपसे उल्लेखनीय है।

इतिहास शाखाके सभापति थे इतिहासवेत्ता वेणुधर शर्मा और उसके उद्घाटन कार्यका सम्पादन किया था असम मन्त्रीसभाके एक सदस्य रूपनाथ ब्रह्मने। खासी विज्ञानी रेवरेण्ड बी० एम० प्यू [Rev. B. M. Pugh] विज्ञान शाखाके अध्यक्ष चुने गये।

इस सम्मिलनमें सभाके विधानका आमूल परिवर्तन किया गया। सभाकी व्यवस्था पहलेकी अपेक्षा अधिक गणतान्त्रिक बनाई गई। सभाकेलिए एक प्रतीक बनानेका भी सिद्धान्त हुआ। अतुलचन्द्र

हाजरिका अगले वर्षके लिए प्रधान सचिव चुने गये। बादके दो अधिवेशनोंमें भी वेही प्रधान सचिव रहे।

शिलांगमें निर्वाचित कार्यपालिकाके समयमें असम सरकारकी तरफसे मिले अनुदानका परिमाण ढाई हजार रुपयोंसे बढ़कर छः हजार रुपये हो गया। नरदेव न्यास पूँजीसे प्राकवैष्णवकालीन कवि [ई० १४ वीं १५ वीं शतीका] हरिवर विप्रका काव्य 'लव-कुश-युद्ध' डॉ० महेश्वर नेओगके द्वारा सम्पादित होकर निकला। 'चन्द्रकान्त अभिधान'के दूसरे संस्करणके प्रकाशनका काम गुवाहाटी विश्वविद्यालयको सौंपा गया। कार्यपालिकाने असमके केन्द्रीय शहर गुवाहाटी नगरीमें अपनी जमीन लेनेकी और उस जमीनपर अपना एक घर बनानेकी आवश्यकतापर एक प्रस्ताव ग्रहण किया। इनके अतिरिक्त सम्मिलनमें एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव यह भी लिया, जिसके आधारपर बादमें 'असम प्रकाशन परिषद' नामक एक सरकारी संस्था बनी। असमके लेख-कोंको ग्रन्थप्रकाशनके क्षेत्रमें आर्थिक सहायता देनेके लिए एक निर्दिष्ट योजना सामने रखते हुए सरकारसे अनुरोध किया गया था। असमके तत्कालीन सभी समाचार पत्रोंने इस योजना का समर्थन किया था। इससे करीब छः सात बर्षोंके बाद शिक्षामन्त्री देवेश्वर शर्माके समय 'असम प्रकाशन परिषद'की स्थापना हुई और शुरू-शुरूमें ही इस योजनाके अनुरूप काम करनेके लिए एक लाख रुपये दिये गये।

तेईसवाँ सम्मिलन :—ई० स० १९५४के ३१ दिसम्बर और १९५५के १ जनवरीको जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालय चन्द्रकान्त सन्दिकै भवनके सामने महिला कवि नलिनीवाला देवीकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। 'जोनाकी' पत्रिकाके समयसे साहित्य-क्षेत्रमें सक्रिय राधानाथ फुकन [असमके सर्व प्रथम एम० ए०] स्वागत समितिके अध्यक्ष थे।

सरकारी वकील देवेश्वर शर्मा, जो साहित्यसभाके कार्यमें शुरूसे जड़ित थे, वे कार्याध्यक्ष बने ।

बरपेटाके प्रसिद्ध संस्कृत पण्डित नारायण मिश्र 'भागवत वागीश' ने पहले दिनकी सभाका उद्घाटन किया । स्वागत समितिके अध्यक्ष फुकनका अभिभाषण भी मूलसभाके सभापतिकी तरह ज्ञानगर्भ और तथ्य-समृद्ध था । इस सम्मिलनमें महिला कवि धर्मेश्वरी देवीबरुवानीको 'काव्यभारती'की उपाधि दी गई । डॉ हिरण्यचन्द्र भूञाकी अध्यक्षतामें विज्ञान शाखा और सुरेशचन्द्र राजखोवाकी अध्यक्षतामें इतिहास शाखाकी सभा भी अनुष्ठित हुई । साहित्यसेवी महादेव शर्माके द्वारा प्रदर्शनीका उद्घाटन किया गया । 'बकुलवनरकवि' आनन्दचन्द्र बरुवाकी तत्परतासे जोरहाटके 'बाणीसम्मेलन'की तरफसे एक कविसम्मेलन भी हुआ । सम्मिलनकी पहली रातको स्थानीय कलाकारोंने एक विचित्रानुष्ठान की व्यवस्था की थी । दूसरी रातको 'प्राच्यवाणीसंघ'के सहयोगसे स्थानीय सत्रोंके कुछ अभिनेताओंने महापुरुष शंकदेवके द्वारा रचित रामविजयनाटकका अभिनय किया ।

साहित्यसभाके इस अधिवेशनमें निर्वाचित कार्यपालिकाके कार्यकालमें किये हुए कामोंमें ये उल्लेखनीय हैं—(१) राज्यपुनर्गठन आयोग [State Re organisation Commission] और सरकारी भाषा आयोग [Official Language Commission of Government of India]के पास स्मारक पत्र देना । (२) राज्यपुनर्गठन आयोगके पास जो स्मारक पत्र दिया गया, उसकों पुस्तकके रूपमें प्रकाश करना। यह पुस्तक अंग्रेजीमें हैं । [Assam's case before the State Reorganisation Commission, mainly from the Historical, Cultural and Linguistic view-points, May 1955] असम साहित्य-सभापत्रिका वर्ष १३, संख्या तीनमें भी इसका प्रकाशन

किया गया था । (३) असमीया भाषामें डॉ० सूर्यकुमार भूञाके द्वारा सम्पादित 'बुरंजीमूलक प्रबन्धरतालिका' [इतिहास विषयक निबन्धोंकी तालिका] नामक ऐतिहासिक निबन्धोंके विवरणात्मक पुस्तकका प्रकाशन असम सरकारके इतिहास और पुरातत्त्व विभागकी आर्थिक सहयोगितासे साहित्यसभाने किया । (४) शिवसागरके पहले सम्मिलनसे गोलाघाटके बारहवें सम्मिलनतक सभापतियोंके अभिभाषणोंका संकलन 'भाषणावली खण्ड १' नामसे निकाला और असम साहित्यसभा वार्षिकी' खण्ड १ [जोरहाटके उस सम्मिलनके भाषणोंका संग्रह और कार्योंका विवरण] नामसे ग्रन्थ रूपमें निकाला गया ।

चौवीसवाँ सम्मिलन :—स० १६५५के २६ और २७ दिसम्बरको गुवाहाटीमें असम साहित्यसभाका चौवीसवाँ अधिवेशन कवि यतीन्द्रनाथ दुवराकी अध्यक्षतामें हुआ । दुवराजी जोरहाट अधिवेशनके लिए ही चुने गये थे, किन्तु वे इसकेलिए तैयार न हुए। दूसरी बार भी विपुल संख्याधिक्यमें उनको निर्वाचित किया गया और वे भी सहमत हुए। स्वागत समितिके अध्यक्ष कहानीकार हलिराम डेका [प्राक्तन मुख्य न्यायाधीश] थे । स्वागत समितिके युग्म सचिव थे डॉ० महेश्वर नेओग और नाट्यशिल्पी प्रवीण फुकन ।

इनके अतिरिक्त कवि रघुनाथ चौधारी और असमके श्रेष्ठ चिकित्सक तथा कांग्रेसी नेता डॉ० भुवनेश्वर बरुवा जैसे लोगोंकी सहयोगिता भी उल्लेखनीय है ।

गुवाहाटीके इस सम्मिलनमें 'साहित्य अकादेमी'के सचिव प्रभाकर माचवे मुख्य अतिथिके रूपमें उपस्थित थे । इतिहास शाखाके अध्यक्ष थे गुवाहाटी विश्वविद्यालयके कलागुरु डॉ० विरिंचिकुमार बरुवा । विज्ञान शाखाकी अध्यक्षता रोहिणीकुमार बरुवाने की ।

सांस्कृतिक सम्मेलनके सभापति थे अभिनेता और नाट्यकार मित्रदेव महन्त। अन्यान्य कलात्मक कार्यसूचीके भीतर प्रवीण फुकनका 'मणिरामदेवान' नाटक अभिनीत हुआ। इस सम्मिलनमें फणीधर शर्माके ग्रन्थ 'असमकी जनजाति (खासी)' के लिए पाँच सौ रुपयोंका पुरस्कार दिया गया।

सभामें लिपिविषयक एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव ग्रहण किया गया। असमीया भाषाके लिए देवनागरीलिपि प्रयोगके सम्बन्धमें कुछ वर्षोंसे विचार विमर्श हो रहा था ; विशेषकर राजनैतिक नेताओंकी तरफसे ऐसा प्रस्ताव दिया जाता था। साहित्यसभाने इस विषयपर यह निर्णय किया कि—यदि बंगाली, तमिल आदि भारतवर्षकी अन्य भाषाओंके लिए यह सम्भव हो, यानी इन भाषाओंमें देवनागरी लिपिका प्रयोग पहले हो जाय, तो असमीया भाषा भी उसी रास्तेपर लड़खड़ाती हुई आगे बढ़नेकी कोशिश करेगी। इसके अतिरिक्त पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा लोक सभामें उत्थापित [स० ५५के १६ दिसम्बरको] प्रशासनीय कुछ विषयोंका विरोध किया गया था। जिनमें भारतवर्षको पाँच खण्डोंमें विभक्त करनेकी नीति, अरुणाचल [उस समय नेफा] की भाषा नीति और असमको द्विभाषी राज्य बनानेकी [असमीया और बंगाली दोनोंको राज्यभाषा स्वीकार कर] नीतिका विरोध किया गया। स० १९५६के ६ जूनको साहित्यसभाके द्वारा नेफामें [उत्तर-पूर्व सीमान्त एजेंसी] 'असमीया भाषा दिवस' पालन किया गया। इस विषयपर साहित्यसभाने शिष्टमंडलके जरीए एक बार राज्यपालके पास और दूसरी बार तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री गोविन्दवल्लभ पन्तके पासभी अपना विचार पेश किया था।

इस वर्षमें साहित्यसभाके भाषाणोंका संग्रह 'भाषणावली खण्ड २' और 'असम साहित्यसभा वार्षिकी खण्ड २'के भी प्रकाशनकी व्यवस्था

हुई। इसी वर्षके नवम्बरमें 'युनेस्को'के अधिवेशनके उपलक्ष्यमें भारत सरकारकी तरफसे दिल्लीमें जो प्रदर्शनी हुई थी, उसमें असम साहित्य सभाकी ग्रन्थप्रदर्शनीका भार तीर्थनाथ शर्माने लिया और इन्होंने तत्परतासे यह काम कर दिखाया ; जिससे प्रचारकी दृष्टिसे असमीया साहित्यका लाभ जरूर हुआ।

साहित्यसभाका रजतजयन्ती अधिवेशन :—सन् १९५६के २७ और २८ दिसम्बरको इतिहासवेत्ता वेणुधर शर्माके सभापतित्वमें धुबुरी शहरमें साहित्यसभाका पचीसवाँ सम्मिलन रजत जयन्ती सम्मिलनके रूपमें सम्पन्न हुआ। दर असलमें साहित्यसभाके जन्मसे पचीस वर्ष स० १९४२में ही पूर्ण हुआ था। पर उस समय वर्षगणनाके आधार पर रजतजयन्तीका उत्सव पालन करना सम्भव नहीं था। इसलिए अधिवेशनकी संख्याके आधारपर यह जयन्तीउत्सव मनाया गया। प्रमथनाथ चक्रवर्ती स्वागत समितिके अध्यक्ष थे।

असम राज्यके तत्कालीन स्वास्थ्य मन्त्री रूपनाथ ब्रह्मकी अध्यक्षतामें इतिहास शाखा, प्रथम असमीया भाषाके ग्रामोफोन रेकार्ड निर्माता और तत्कालीन संसदी सदस्य प्रफुल्लचन्द्र बरुवाके सभापतित्वमें संगीत शाखा और लक्ष्मीनाथ दासके सभापतित्वमें विज्ञान शाखा भी हुई। प्रदर्शनीका द्वार खोला विख्यात असमीया कहानीकार हरिप्रसाद गोर्खारायने। मनोरंजनके कार्यक्रमोंमें गोवालपाराके लोकगीत, लोकनृत्य, बड़ो और राभा जनजातिके गीत-नृत्य आदि विशेष आकर्षणकी वस्तुएँ थी। बीते हुए तीन वर्षोंमें प्रधान सचिवका कार्य सँभाले हुए अतुलचन्द्र हाजरिका उपसभापति चुने गये। शिवसागर कॉलेजके उपाध्यक्ष परागधर चलिहा प्रधान सचिव निर्वाचित हुए। चलिहाके कार्यकालमें नेफा [NEFA] विषयक कुछ काम किया गया। 'An out look on NEFA' और उसीका असमीया रूपा-

न्तर 'सीमान्तर सम्भेद' नामक अंग्रेजी और असमीया दोनों भाषाओंमें दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। 'This is Assam' नामक अंग्रेजी पुस्तक भी छपाई गई। नीलाचल पाठ नामक (आओ नगा प्राइमर) नगा उपजातिकी एक शाखा आओलोगोंकी भाषा विषयक और एक पुस्तक साहित्यसभाके द्वारा प्रकाशित हुई। उस समय असम साहित्यसभाने नेफाकी शिक्षानीति विषयपर अधिक ध्यान देना शुरु किया। उसी वर्षमें असमकी विभिन्न संस्थाओंकी तरफसे गैर सरकारी व्यवस्थामें असममें एक तेलशोधनागारकी माँग जोरोंसे चल रही थी। साहित्यसभाभी इस माँगका समर्थन करती थी।

बंगाली भाषा-भाषियोंकी संख्या अधिक होनेपर भी काछार जिलेमें असम साहित्यसभासे सम्बन्धित कुछ लोग हैं। जिलेका सदरस्थान शिलचरमें असम साहित्यसभाका एक अपना घर और उसके अहातेमें एक प्राथमिक विद्यालयभी है। काछार जिलेके अन्य कुछ स्थानोंमें भी इस प्रकारकी असमीया पाठशालाएँ हैं। प्राक्तन जिला न्यायाधीश भोलानाथ शर्मा, उपायुक्त कुसुम फुकन, धरणीधर चौधुरी आदि असम उपत्यकाके कर्मचारियोंसे मिलकर वहाँके विश्वनाथ राजवंशी और हरेशचन्द्र भट्टाचार्य आदि स्थानीय लोगोंने असम साहित्यसभाका काफी काम किया।

१९५८के १४ और १५ मार्चको शिलचर शहरमें असम साहित्यसभाकी कार्यपालिकाकी एक गुरुत्वपूर्ण बैठक हुई। यह बैठक करीब एक वार्षिक सम्मिलन जैसी ही थी। कार्यपालिकाकी इस बैठकके अतिरिक्त बंगाली और असमीया दोनों भाषा-भाषियोंमें मेल-मिलाप का काम भी हुआ। आस-पासके असमीया भाषी लोगोंके गाँवोंसे भी असम साहित्यसभाका सम्पर्क स्थापित हुआ।

छब्बीसवाँ सम्मिलन :—स० १९५८के २० और २१ अप्रैल को तिनिचुकीया शहरमें असम साहित्यसभाका छब्बीसवाँ सम्मिलन हुआ। कवि, नाट्यकार, अभिनेता, शिक्षासेवी और संगीतकार पद्मधर चलिहा सभापति चुने गये। कलागुरु विष्णुप्रसाद राभा सांस्कृतिक शाखाके सभापति थे। हरिप्रसाद बरुवा [असमके प्राक्तन मुख्य अभियन्ता], राजमोहन नाथ बी० ई० तत्त्वभूषण और हलिराम डेका [प्राक्तन मुख्य न्यायाधीश]के सभापतित्वमें क्रमशः विज्ञान, इतिहास और साहित्य-आलोचनाविषयक अन्यान्य शाखाओंकी सभाएँ सम्पन्न हुईं। असमराज्यके तत्कालीन वित्तमन्त्री देवेश्वर शर्माने प्रदर्शनीका द्वार खोला। मूलसभाका उद्बोधन उस समय असम कांग्रेसके सभापति महेन्द्रमोहन चौधुरीने [जो बादमें असमके मुख्यमंत्री तथा पंजाबके राज्यपाल बने] किया।

असमके एक प्रमुख्य वाणिज्य नगर तिनिचुकीयाके विशिष्ट नागरिक सोमेश्वर बरुवा स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। विधान सभाके प्राक्तन सदस्य यदुनाथ भूञा स्वागत समितिके कार्याध्यक्ष थे। अगले वर्षके लिए साहित्यसभाके प्रधान सचिव चुने गये– ध्वनिकवि बिनन्दचन्द्र बरुवा[19]।

इस वर्षमें ये प्रमुख कार्य सम्पन्न हुए। (१) गुवाहाटी केन्द्रकी आकाशवाणीके कार्य-क्रममें असमके चायबगीचे आदिमें जो लोग हैं, उनके लिए प्रचारित बातें हिन्दीमें बोली जाती थी। दर असलमें वैसे लोगोंकी मातृभाषा शुद्ध असमीया नहीं ; किन्तु उनकी अपनी बहुत सी उपभाषाओंका प्रयोग सामूहिक रूपमें सम्भब नहीं होता।

---

[19] शंखध्वनि, प्रतिध्वनि आदि कविता पुस्तकोंके कवि होनेके कारण बरुवाजी असमीया साहित्यमें ध्वनि कवि कहलाते हैं।

इसलिए वे सामूहिक कार्योंमें असमीया भाषाकाही प्रयोग करते हैं और बहुतसे लोगोंके लिए असमीया मातृभाषा भी हो गई है। ऐसी हालतमें हिन्दीके माध्यमसे उनके लिए जरूरी बातोंका प्रचार करना किसीके लिए लाभप्रद नहीं होता। वे लोग हिन्दीकी अपेक्षा असमीया भाषा ही अधिक समझ पाते हैं। तिनिचुकीयाके सम्मिलनमें इसलिए प्रस्ताव ग्रहण किया गया कि—यह कार्यक्रम हिन्दीमें न होकर असमीयामें होना चाहिए। प्रस्तावके अनुसार हिन्दीके बदले असमीयाका व्यवहार होने लगा।

(२) असम साहित्यसभाके द्वारा परिकल्पित 'प्रकाशन परिषद' असमके शिक्षामन्त्रीकी अध्यक्षतामें एक स्वायत्तशासित संस्थाके रूपमें इसी वर्षसे चालु हुई।

(३) इसी वर्षके ९ सितंबरका दिन सारे असममें 'असम साहित्य-सभादिवस'के रूपमें पहलीबार पालन किया गया।

(४) इस वर्षके १५ अगस्तके असम प्रदेश कांग्रेस कमेटिने उस समय के सभी जोवित प्राक्तन सभापतियोंको बुलाकर आम सभामें सम्वर्धना ज्ञापित किया।

(५) डुमडुमा शहरके निवासी हरिहर चौधुरीने नेफाके छात्रोंके-लिए एक पुरस्कारकी घोषणा की। प्रतिवर्ष साहित्य-प्रतियोगितामें पटुता दिखानेवाले छात्रको यह पुरस्कार मिलनेकी व्यवस्था की गई। इस योजनापर समर्पित धन साहित्यसभाने ग्रहण किया।

इस वर्षकी कार्यपालिका सभा 'असमीया विश्वकोश' प्रणयनके लिए भी सरकारसे आर्थिक सहयोग चाहती थी; पर सरकारकी मददसे प्रकाशन परिषदने यह काम अपने हाथमें लिया। अब भी वह काम चल रहा है।

सत्ताइसवाँ सम्मिलन :—स० १९५९के १९ और २० अप्रैल को नगांव शहरमें अतुलचन्द्र हाजरिकाके सभापतित्वमें साहित्यसभाका वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। कहानीकार महीचन्द्र बरा स्वागत समितिके अध्यक्ष थे और उस समय नगांव कॉलेजके उपाध्यक्ष तथा 'विहलङनि' नामक पत्रिकाके सम्पादक महेशचन्द्रदेवगोस्वामी स्वागत समितिके सचिव थे। स्वागत समितिकी तरफसे 'निबन्धावली' और 'सतीर्थ' शीर्षक दो पुस्तकें [जिसमें नगांवक साहित्यसेवियोंका परिचय दिया गया है] प्रकाशित हुईं। डॉ० सूर्यकुमार भूञाके द्वारा प्रदर्शनीका द्वार उद्घाटन किया गया।

सम्मिलनकी मूल सभामें नेफाक प्रतिनिधि 'टागं टाकि'का भाषण तात्पर्यपूर्ण था। सरकारकी तरफसे अपनाई हुई नेफाकी भाषा-नीति और शिक्षाके माध्यमके सम्बन्धमें टाकिने अपने भाषणमें खेद प्रगट किया।

अन्यान्य स्थानोंक साहित्य सम्मिलनकी भाँति यहाँ भी पद्मधर चलिहाकी अध्यक्षतामें सांस्कृतिक शाखाकी, डॉ० महेश्वर नेओगकी अध्यक्षतामें इतिहास शाखाकी, डॉ० पवनचन्द्र महन्तकी अध्यक्षतामें विज्ञान शाखाकी और यज्ञेश्वर शर्माकी अध्यक्षतामें एक कवि सम्मेलनकी व्यवस्था हुई थी। शामको हुई मनोरंजनकी कार्य-सूचीके भीतर जाजरि नामक स्थानके लोगोंके द्वारा महापुरुष शंकरदेव कृत 'रुक्मिणीहरण' अंकीया नाटकका अभिनय भी था। ध्यान रहे शंकरदेवका जन्मस्थान बरदोवा भी नगाँव शहरसे ९ मीलकी दूरी-परही है।

इस सम्मिलनमें अगले वर्षके लिए यतीन्द्रनाथ गोस्वामी प्रधान सचिव चुने गये। उनके कार्य-कालमें ये काम उल्लेखनीय हैं—

(१) आनन्दरामढेकियाल फुकनकी मृत्युशतवार्षिकी साहित्यसभाकी तरफसे मनाई गई। इसके उपलक्ष्यमें डॉ० महेश्वर नेओग द्वारा सम्पादित ढेकियालफुकनकी रचना 'A Few Remarks on the Assamese Language and on vernacular Education नामक पुस्तकका असमीया रूपान्तर 'असमीयाभाषा' प्रकाशित हुई। [मूल पुस्तकका रचना-काल था १८५३ ई० स०]

(२) असमके सभी सम्प्रदायोंके लोगोंके लिए पवित्र माने हुए स्थानोंके विवरण तथा ऐतिहासिक परिचयके साथ गुवाहाटी विश्वविद्यालयके असमीया विभागके अध्यापक डॉ० महेश्वर नेओगद्वारा सम्पादित 'पवित्र असम' नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ साहित्यसभाके द्वारा प्रकाश किया गया।

(३) स० १९५० से साहित्यसभाकी तरफसे असमके लिए असमीया 'राज्यभाषा'की माँग चलती आ रही थी। इस वर्ष यह माँग तेजीसे बढ़ी और एक प्रबल आन्दोलन बन गयी। परिणाम स्वरूप १९६० को असम राज्यभाषा कानुन विधान सभामें गृहीत हुआ।

(४) शिल्पी युगल दासके द्वारा बनाया हुआ साहित्यसभाका प्रतीकभी इसी वर्ष सामान्य संशोधनके साथ ग्रहण किया गया। स० १९२४ से इस विषयकी चर्चा साहित्य सभामें हो रही थी।

षष्ठ अध्याय

जनताकी गोदमें

राज्यभाषा-आन्दोलनने असमसाहित्य सभाको केवल साहित्यकारोंके भीतर आबद्ध रहनेकी स्थितिसे खुली हवाके बीच जनताके पास लानेका काम किया। जनताकी भाषाका समर्थन साहित्यसभाने किया। इस प्रकार साहित्यसभा जनताकी प्रिय संस्था बन गई। दूसरी बात यह भी है कि— पहले साहित्यसभाका वार्षिक अधिवेशन या सम्मिलन एक-आध स्थानको छोड़कर प्रायः जिलेके सदर स्थान अथवा सब-डिविजनके सदर स्थानोंमें ही होता था; किन्तु बादको साहित्यसभाके वार्षिक अधिवेशन कुछ कसबोंमें भी होने लगे और गाँवके लोग अपने स्वाभाविक कौतूहलसे देखने आने लगे। धीरे धीरे इस जमावने मेलेका रूप ले लिया। अट्ठाइसवें सम्मिलनसे इस प्रकार साहित्यसभाका नयारूप नजर आने लगा।

अट्ठाइसवाँ सम्मिलन :—स० १९६०के २८ और २९ अक्टूबरको गुवाहाटीसे करीब २० किलोमीटरकी दूरीपर मिर्जा या पलाशबारीमें साहित्यसभाका अधिवेशन हुआ। मिर्जा एक कसबा है। स्थानीय हाईस्कूलके प्रधान शिक्षक अवलाकान्त गोस्वामी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। ऐसे छोटे स्थानमें साहित्यसभाका वार्षिक सम्मिलन काफी आड़म्बरके साथ सुसम्पन्न करना उनके लिए कृतित्वकी बात थी। इसलिए सभीने स्वागत समितिकी प्रशंसा की।

सम्मिलनकी मूलसभाके सभापति थे – कहानीकार, आलोचक और नलवारी कालेजके अध्यक्ष त्रैलोक्यनाथ गोस्वामी[20]। इस सम्मिलनमें ही पहले पहल साहित्यसभाका पताका-उत्तोलन किया गया। सम्मिलनकी दूसरी विशेषता यह थी कि – कुछ चायबगीचोंके और कुछ काछारजिलावासी मणिपुरी लोगोंके प्रतिनिधि भी यहाँ भाग लेने आये थे। और एक विशेपता यह भी थी इस अधिवेशनमें पहले पहल कार्यपालिकासभाका कार्यकाल दो वर्ष किया गया। त्रैलोक्यनाथ गोस्वामी और डॉ० महेश्वर नेओगको सभापति और प्रधान सचिवके रूपमें पहलेपहल दो वर्षका कार्यकाल मिला।

मूल सभाका उद्बोधन विहगीकवि रघुनाथ चौधारीने किया और उड़ीसाके साहित्यकार किशन पटनायक और चायबगीचोंके मजदूर नेता रघुवा ताँती भी सभामें थे। प्रदर्शनीका उद्घाटन किया था नीलमणि फुकनने। इनके अतिरिक्त महिलाकवि नलिनीवाला देवीकी अध्यक्षतामें कविसम्मिलन हुआ। ध्वनिकवि विनन्दचन्द्र बरुवा उसके उद्बोधक थे। प्राग्ज्योतिष कॉलेजके अध्यक्ष और आलोचक तीर्थनाथ शर्माकी अध्यक्षतामें आलोचना चक्र भी हुआ था। राज्यिक मन्त्री राधिकाराम दासने उस आलोचना चक्रका उद्घाटन किया था। इस प्रकार सांस्कृतिक सम्मिलन धुबुरीके संगीतज्ञ श्रीमान गोविन्द चक्रवर्तीकी अध्यक्षतामें हुआ। कलागुरु विष्णुप्रसाद राभा उस सम्मिलनके मुख्य अतिथि थे।

इस वर्ष कार्यपालिकाने ये प्रमुख काम किए। (१) आमलोगोंके लिए विशेषकर गैर असमीयाभाषी लोगोंके लिए घरमें ही

---

[20] असमीया कहानी साहित्य सम्बधी आलोचना ग्रन्थके कारण उनको साहित्य-अकादेमीका पुरस्कार मिला।

असमीया सीख कर असमीया भाषाज्ञान परीक्षा में बैठानेकी व्यवस्था की गई। १९६१के २४ जूनको इस उद्देश्यसे कार्यपालिकाने भाषाज्ञान प्रमाण-पत्र परीक्षाके संचालन कार्यके लिए एक 'परीक्षा परिचालना समिति'की व्यवस्था की।

(२) असम शासकीय भाषा अधिनियम १९६० [Assam Official Language Act 1960] संशोधनके द्वारा काछार जिलेमें असमीया भाषा प्रचलनमें बाधा उपस्थित करनेकी व्यवस्था होनेवाली थी। साहित्यसभाने एक शिष्टमंडल भेजकर केन्द्रीय गृहमन्त्रीसे मिलकर उसे रद्द करवाया।

(३) नेफामें गैर असमीया भाषाके द्वारा शिक्षा दानकी जो नीति अपनाई गई थी, नेफाके युवक छात्रोंने उसका विरोध किया और साथ ही साथ यह माँग भी की कि—नेफाके विद्यालयोंमें असमीया भाषाको ही माध्यम बनाना चाहिए। इसके समर्थनमें साहित्यसभाने भी नेफाकी भाषा-नीतिका प्रतिवाद किया था।

(४) नेफाके टिराप सीमान्तमें [इस अंचलमें वांचु और नक्टे उपजातिके लोग रहते हैं] सम्प्रीति वर्धनके उद्देश्यसे साहित्यसभाके प्रधान सचिवके नेतृत्वमें एक भ्रमणकारी दल भेजा था।

(५) सभाके मुख्य कार्यालय चन्द्रकान्त सन्दिकै भवनमें दानवीर राधाकान्त सन्दिकैकी एक आवक्ष-कांस्यमूर्ति [Bronze की मूर्ति] प्रतिष्ठा की गई। इस कार्यमें पण्डित कृष्णकान्त सन्दिकै से प्राप्त सहयोगिता उल्लेखनीय है।

(६) इस वर्षसे शिलचरके तरुणराम फुकन मध्य अंग्रेजी [M.E.] विद्यालय और काछारमें स्थित अन्यान्य असमीया माध्यमकी पाठशालाओंके लिए आर्थिक अनुदान मंजूर किया गया और वह अनुदान अबतक चालू है।

(७) वर्षके भीतर निम्नलिखित पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं । (क) प्रधान सचिवद्वारा सम्पादित Assamese Language Question (ख) वेणुधर राजखोवा विरचित 'असमीया खण्डवाक्य-कोष' (ग) यतीन्द्रनाथ गोस्वामी द्वारा संकलित लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की 'मोर जीवन सोंवरण' [आत्मकथा] (घ) अतुलचन्द्र हाजरिका और यतीन्द्रनाथ गोस्वामी द्वारा सम्पादित 'असम साहित्यसभा-भाषणा-वली'खण्ड ३ (ङ) नकुलचन्द्र भूयाकी रचना 'राधाकान्त सन्दिकै डाङरीया' (च) हरिप्रसाद नेओग लिखित 'दानवीर राधाकान्त सन्दिकै' (छ) कमलेश्वर शर्माद्वारा लिखित 'कवि रघुनाथ चौधारी-देवर कविता' (ज) जनजातीय लेखक लंकाम टेरन की 'मिकिर जनजाति' ।

उनतीसवाँ सम्मिलन, :—सन् १९६१के ३१ अक्टूबर और १ नवम्बरको गोवालपारा शहरमें तीसरी बार साहित्यसभाका वार्षिक अधिवेशन हुआ । असम साहित्यसभाका वह २९वाँ सम्मिलन था । कार्यपालिकाका कार्यकाल दो वर्ष होनेपर बीते वर्षके सभापति त्रैलोक्य-नाथ गोस्वामी इस सम्मिलनके भी सभापति रहे । असम कांग्रेसके एक मुख्य नेता [बादको जो मुख्यमन्त्री और पंजाबके राज्यपाल भी हुए थे] महेन्द्रमोहन चौधुरीने सभाका उद्बोधन किया । रूपनाथ ब्रह्मने प्रदर्शनीका द्वार खोला । गीतिकार पार्वतीप्रसाद बरुवा संगीत शाखाके सभापति थे । असम राज्यिक संग्रहालय [Assam State Museum]-के और पुरातत्त्वविभागके संचालक प्रेमधर चौधुरी इतिहास शाखाके अध्यक्ष हुए थे ।

इस बारके गोवालपारा सम्मिलनके स्वागताध्यक्ष थे खगेन्द्रनाथ नाथ [तत्कालीन विधान सभाके सदस्य] । भवेन्द्रनाथ सिंह और

नजमुल हक दोनों स्वागत समितिके उपाध्यक्ष थे । समितिके सचिव थे हरिप्रसाद गोस्वामी । सम्मिलनके पहले सभापतिको साथ लेकर जो शोभायात्रा की गई थी, उसमें बड़ो लोगोंकी पोशाक सहित जो नाच दिखाया गया था, उसका दृश्य बड़ा आकर्षक था । नेफाकी 'आदि' जनजातिके दो छात्र इस सम्मिलनमें भाग लेने आये थे ।

दूसरे वर्षके कार्यकालमें भी प्रधानसचिव महेश्वर नओगके नेतृत्वमें दो शुभेच्छा दल नेफाके लोहित और सियांग सीमान्तमें भ्रमणके लिए गये । काछार, उत्तर काछार, कार्बिआंलंग, मिजोराम और गारोपहाड़की यात्राभी इस प्रकार की गई थी । सभाकी पूँजीसे राष्ट्रीय सुरक्षा पूँजीके लिए भी एक हजार रुपये दिये गये । क्योंकि इस कार्यकालके भीतरही सीमान्त-भूमिपर चीनसे भारतको लड़ना पड़ा था । उस आक्रमणके विरुद्ध जनमत-सृष्टिके लिए भी आह्वान किया गया था । 'रण झंकार' 'रणनिनाद' और 'अशान्त-हिमालयर आह्वान' शीर्षक तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं । देश-प्रेममूलक इन पुस्तकोंके अलावा लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाकी 'तत्त्वकथा', नगेन्द्रनारायण चौधुरीर गल्प [हेमन्तकुमार शर्मा द्वारा संकलित], मुकुन्द-माधव शर्मा रचित Assamese for All और उसीका हिन्दी अनु-वाद 'आपकी असमीया' [परेशचन्द्र शर्मा द्वारा अनूदित], मुकुन्दमाधव शर्मा द्वारा अनूदित संस्कृत पोथी राजशेखरकी कर्पूरमंजरी, रजनीकान्त देवशर्माद्वारा अनूदित विशाखदत्तका मुद्राराक्षस, प्रमोदचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित 'असमर जनजाति' और विश्वनारायण शास्त्रीद्वारा सम्पादित 'असमर जनजातीय साधु' ; महेश्वर नेओग-सम्पादित नेफाको शिक्षानीति विषयक 'नेफार शिक्षानीति' और नेफाकी संस्कृतिके सम्ब-न्धमें लिखित ग्रन्थ 'सीमान्तर शिक्षा आरु सांस्कृतिक नीति', नेओग द्वारा लिखित साहित्यसभा वार्षिकी, गोवालपारा सम्मिलन ; डॉ० सत्येन्द्र

नाथ शर्मा सम्पादित संस्कृत नाटक 'रूपकत्रयम्', लीला गगैकी रचना 'जयमती आरु मूलागाभरु' [यह पुस्तक कमलादेवी न्यास पूँजीसे] ये सभी पुस्तकें साहित्यसभाकी तरफसे प्रकाशित हुईं।

गुवाहाटीमें स्थित असम राज्यिक संग्रहालयके पास सरकारकी ओरसे साहित्यसभाको चार कठेसे अधिक जमीन मिली। प्रधान सचिव डॉ० नेओगसे घनिष्ठ मित्रताके कारण गीतकार कवि पार्वती-प्रसाद बरुवाले अपने बड़े भाई भगवतीप्रसाद बरुवाकी स्मृतिमें एक भवन निर्माणके लिए पचास हजार रुपये भी मिले। प्रो० हुमायूँ कबीर भारतके सांस्कृतिक मन्त्री रहते समय केन्द्रीय सरकारसे भी साहित्यसभाको पचास हजार रुपयेका एक अनुदान प्राप्त हुता। सन् १९६३के ७ अप्रैलको निम्नलिखित श्लोकखोदित पत्थरका स्थापन करते हुए भगवतीप्रसाद बरुवा स्मृतिभवनका शिलान्यास असमके राज्यपाल विष्णुसहायजीने किया।

सर्वज्ञं तदहं वन्दे परं ज्योतिस्तमोऽपहम्।
प्रवृत्ता यन्मुखाद्देवी सर्व-भाषा-सरस्वती॥
आर्य-वाणी-दुहितेयं भाषा प्राग्ज्योतिषोद्भवा।
माता नः कामरूपिणी सदा स्यात् श्रेयसे नृणाम्॥
सभैषासम-साहित्य-संस्कृति-संविवर्धनी।
नवीनं सदनमस्या रक्षतु तं सदा मुदा॥

[भावार्थ ऐसा है—जिसके मुखसे सर्वभाषा-सरस्वती देवीका उद्भव हुआ है; मैं उस अन्धकार-विनाशिनी सर्वज्ञ परमज्योतिकी वन्दना करता हूँ।

प्राग्ज्योतिषमें उद्भूत, आर्यभाषाकी दुहिता, हमारी मातृ कामरूपिणी यह भाषा मानवोंकेलिए कल्याणकारिणी हो।

असमकी साहित्य-संस्कृति-संवर्धनकारिणी इस सभाका यह नूतन भवन सदा सानन्द सुरक्षित रहे]

प्रथम श्लोक ई० १२ वीं शतीके कन्नड़देशीय व्याकरणवेत्ता नागवर्मा की रचना है। द्वितीय और तृतीय श्लोक विश्वविश्रुत भाषातात्त्विक डॉ० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्यायजीकी रचना है।

तीसवाँ सम्मिलन :—स० १९६३के अप्रैल १९ और २०को नाजिरामें असम साहित्यसभाका तीसवाँ अधिवेशन हुआ। कवि रत्नकान्त बरकाकती मूल सभाके अध्यक्ष चुने गये थे। आहोम शासनके समय राजधानी गड़गाँवके पास, नाजिरा आसाम टी कम्पनीके प्रधान कार्यालयके कारण एक छोटा शहर या कसबा बना। सभाके पहले दिनही मुख्यमन्त्री बिमलाप्रसाद चलिहाने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उत्सवका श्रीगणेश किया। शामको सांस्कृतिक कार्यक्रम था। २० तारीखको सुबह प्राक्तन सभापति त्रैलोक्यनाथ गोस्वामीके द्वारा साहित्य-सभाके पताका-उत्तोलनका कार्य सम्पन्न किया गया और उस दिनका कार्य भी शुरू हुआ। सभापति बरकाकती अस्वस्थ थे। रातको सांस्कृतिक कार्यक्रमके समय उनकी अस्वस्थता अधिक बढ़ गई और नगाँवके अपने घरको वापस जाने लगे; पर रास्तेमें ही [जोरहाटमें] उनकी वह यात्रा महायात्रामें परिणत हो गई।

नाजिरा सम्मिलनकी आलोचना शाखाकी अध्यक्षा थी जोरहाटके स्नातकोत्तर प्रशिक्षण महाविद्यालयकी अध्यक्षा इन्दिरा मिरि। संगीत शाखाके अध्यक्ष थे जनप्रिय गीतकार और गायक डॉ० भूपेन्द्रनाथ हाजरिका। डॉ० प्रतापचन्द्र चौधुरी और डिम्बेश्वर नेओग क्रमशः इतिहास शाखा और कवि सम्मिलनके सभापति थे। डॉ० महेश्वर नेओग पुनः प्रधान सचिव चुने गये। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे शिक्षाव्रती और कांग्रेसकर्मी वेदनाथ बरठाकुर।

इस वर्षके प्रकाशन कार्यमें ये पुस्तकें छपकर निकलीं। विश्वनाथ कविराजके संस्कृत अलंकार ग्रन्थ साहित्यदर्पणका असमीया अनुवाद—अनुवादक विश्वनारायण शास्त्री। 'साहित्य समीक्षा'—साहित्य तत्त्व-विषयक ग्रन्थ, डॉ० नेओग और हेमन्त शर्मा द्वारा सम्पादित। असम साहित्यसभावार्षिकी : नाजिरा सम्मिलन।

हाईस्कूल शेषान्त परीक्षाके असमीया विषयमें नेफाके जिस विद्यार्थीको सर्वाधिक अंक मिलेगा, उस विद्यार्थीको हरिहर चौधुरी पुरस्कार देनेका निर्णय इस वर्ष किया गया। गुवाहाटीके पास ब्रह्मपुत्र नदपर जो पुल बना है, उस पुलका नाम 'शराइघाट पुल' रखनेका प्रस्ताव ई० १९५९के नगाँव सम्मिलनमें गृहीत हुआ था। १९६३के ७ जूनको भारतके प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरूने इस 'शराइघाट पुल' नामसे ही उसका उद्‌घाटन किया। शराइघाट की विशेषता यह थी—ई० शती १७ वींके सप्तमदशकमें बादशाह औरंगजेबके सेनापति रामसिंहको यहाँ आहोम सेनापति लाचित बरफुकनने हराया था। असमके इतिहासमें यह युद्ध महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उस विजयकी स्मृतिमें पुलका नाम भी शराइघाट पुल रखनेकेलिए केन्द्रीय सरकारसे आवेदन किया गया था। जिस जगह वह युद्ध हुआ था, उसी जगहके पास ब्रह्मपुत्रपर यह पुल बनाया गया है। अबतक ब्रह्मपुत्रपर यह एक मात्र पुल है।

सभापति रत्नकान्त बरकाकतीकी परलोकप्राप्तिके बाद कार्यकरी सभापति मित्रदेव महन्त रहे। अगले सम्मिलनके लिए आप सभापति भी चुने गये।

इकतीसवाँ सम्मिलन :—स० १९६४के १८ और १९ अप्रैल को तेलका शहर दिगवई में लेटुग्राम सत्रके अधिकार, शिक्षासेवी, नाट्यकार और प्रसिद्ध अभिनेता मित्रदेव महन्तकी अध्यक्षतामें साहित्य-सभाका इकतीसवाँ अधिवेशन सम्पन्न हुआ। १८ अप्रैल-दोपहर बारह बजे नगालेण्ड विधानसभाके तत्कालीन सदस्य तथा असमीया साहित्यके कहानीकार गोविन्दचन्द्र पैराने साहित्यसभाके पताका-उत्तोलनके द्वारा सभाका शुभारम्भ किया। असमके राज्यपाल विष्णुसहायने मूल-सभाका उद्बोधन किया।

स्वागत समितिके सभापति थे दिगवईके प्रफुल्ल चन्द्र बरुवा। असम तेल कम्पनी के [A. O. C.] जेनरल मैनेजर ए० सी० गोवान [A. C. Gowan.] प्रभृति कम्पनीके कर्मचारियोंने इस क्षेत्रमें सक्रिय सहयोग दिखाया। आलोचनाचक्रके विषयसे संगति रखते हुए 'उपन्यास साहित्य' शीर्षक एक पुस्तक भी स्वागत समितिकी तरफसे प्रकाशित की गईं। आलोचनाचक्रके अध्यक्ष थे तत्कालीन असमके शिक्षामन्त्री देवकान्त बरुवा [बादको बरुवा बिहारके राज्यपाल, केन्द्रीय मन्त्रीसभाके सदस्य और भारतीय कॉंग्रेसके सभापति हुए]। आलोचना चक्रमें मुख्य अतिथि थे विख्यात कथाकार डॉ० मुल्कराज आनन्द। संगीत समारोहके अध्यक्ष थे—शान्तिनिकेतनके सुधीजन शान्तिदेव घोष। डॉ० भूपेन्द्रनाथ हाजरिका वहाँ मुख्य अतिथि थे। इस सम्मिलनमें गृहीत प्रस्तावके अनुसार ई० १९६८ को साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाके जन्माशतवार्षिकी उत्सव पालन करनेका निश्चय किया गया।

असम साहित्य सभाद्वारा प्रकाशित Assamese for All or Assamese Self taught' नामक पुस्तकके एकाधिक अनुवाद इस वर्ष प्रकाशित हुए। कुमारी डी० फ्रेंकलिनने उसका अनुवाद खासी भाषामें 'असमीया ला बारो लाने असमीया हिकाइकि' नामसे किया। हरेन्द्र डब्लिउ मरक [W. Marak]ने गारो भाषामें 'आतांगारि असमीयाको हिकियानि' नामसे अनुवाद किया। अन्यान्य प्रकाशन इस प्रकार हुए डॉ० विरिंचिकुमार बरुवा द्वारा सम्पादित [उस समय

बिरिंचि कुमार बरुवा गुवाहाटी विश्वविद्यालयके कलागुरु थे] और डॉ० महेश्वर नेओगकी सुदीर्घ भूमिका सहित 'अरुणोदयर धलफाट' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई। पुस्तककी मूल वस्तु अरुणोदय पत्रिकासे संकलित है। इसके अतिरिक्त 'रत्नकान्त बरकाकती' और 'असम साहित्यसभा-वार्षिकी : दिगबई सम्मिलन' शीर्षक पुस्तकें भी असम साहित्यसभाकी तरफसे प्रकाशमें आईं।

ई० सन १९६५के २ जनवरीको गुवाहाटीकी अपनी जमीनपर असम साहित्यसभाका बनवाया 'भगवती प्रसाद बरुवा भवन' प्रख्यात भारततत्त्वविद (इण्डोलॉजिस्ट) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवालके हाथोंसे उन्मोचन करवाया गया। डॉ० अग्रवालने स्वरचित निम्नोद्धृत श्लोक उच्चारण करते हुए भवनका द्वार खोला।

साहित्यं श्रुतिमधुरं विश्वदारा च संस्कृतिः।
कामरूपस्य देशस्य सायतिः प्रथतां सदा॥
भगवती प्रसादस्य वे श्मेदं कीर्तिकारकम्।
शारदाया' कवीनां च सततं सन्निधिंव्रजेत्॥

[भावानुवाद—साहित्य श्रुतिमधुर, संस्कृति विश्वव्यापिनी ; कामरूप देशकी वह संस्कृति सदा सर्वत्र फैले। यह गौरवमण्डित भगवतीप्रसाद भवनको सदा-सर्वदा सरस्वती देवी और कवियोंका सान्निध्य लाभ हो][21]

इस भवनके द्वार खोलनेके उत्सवमें डॉ० नेओग लिखित 'In memoriam : Bhagavatiprasad Baruva, Parvatiprasad Baruva' नामक पुस्तिका वितरण की गई थी। इस भवन-

[21] इस वर्षके जनवरीमें गुवाहाटी शहरमें प्राच्य विद्यासम्मेलनका बाईसवां अधिवेशन हुआ। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल उस सम्मेलनके सभापति थे। उसी अवसरपर उनसे साहित्यसभाने यह कार्य सम्पादन करवाया था।

निर्माण सम्बन्धी कार्योंमें साहित्यसभाके प्रधान सचिव डॉ० नेओगकी सक्रियता अविस्मरणीय मानी जायगी।

बत्तीसवाँ सम्मिलन :—ई० स० १९६५के जनवरी १७, १८को असमके भीतर संस्कृत शिक्षाके क्षेत्रमें प्रसिद्ध शहर नलबारीमें असम साहित्यसभाका बत्तीसवाँ अधिवेशन कवि तथा आलोचक डिम्बेश्वर नेओग की अध्यक्षतामें हुआ। सम्मिलनका पहला दिन 'शरतचन्द्र गोस्वामी तोरण'से शोभित प्रदर्शनी मंडपका द्वार खोलकर प्रारम्भ किया गया। धुबुरीके साहित्यप्रेमी प्रमथनाथ चक्रवर्तीने यह द्वार खोलकर सम्मिलनका शुभारम्भ किया।

नलबारी अधिवेशनकी स्वागतसमितिके अध्यक्ष थे—त्रैलोक्यनाथ गोस्वामी, जो पहले दो वर्षोंके लिए असम साहित्यसभाके सभापति रह चुके थे। स्वागत समितिकी तरफसे 'प्रबन्ध-चयन' शीर्षक एक पुस्तक भी प्रकाशित की गई थी। इस सम्मिलनमें अगले वर्षके लिए हरिप्रसाद नेओग प्रधान सचिव निर्वाचित हुए।

सम्मिलनके पहले दिन की कार्यसूचीमें प्रदर्शनी उद्घाटनके बाद स्वागत समितिकी तरफसे 'ज्योतिदिवस' [ज्योतिप्रसाद आगरवाला-मृत्यु-दिवसके उपलक्ष्यमें ज्योतितर्पण की व्यवस्था की गई थी। दूसरे दिन मूल सम्मिलनका उद्बोधन वयोवृद्ध साहित्यकार महादेव शर्माने किया। उड़ीसाके डॉ० हरेकृष्ण महताव उस दिन मुख्य अतिथि थे। उन्होंने एक सुदीर्घ और पाण्डित्यपूर्ण भाषण दिया। गुवाहाटीके ईसाई धर्मके याजक जार्ज जिलास्पी [George Gillespie]का असमीया भाषामें दिया हुआ भाषणभी उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त नेफाके असमीया लेखक लुम्मेरदाइ प्रेमथांगु और यांगटाकि भी इस सभामें भाग लेने आए थे। अधिवेशनके साथ जो आलोचना सभा हुई थी, उसमें

संसद-सदस्य तथा समाजवादी नेता हेमबरुवा सभापति थे। मुक्तिनाथ शर्माबरदलैकी अध्यक्षतामें संगीत शाखाकी सभा हुई थी। उस सभामें मुख्यन्यायाधीश गोपालजी मलहोत्राने असमीया गीतोंके सम्बन्धमें एक तथ्यपूर्ण भाषण दिया। इनके अतिरिक्त सर्वेश्वर बरुवाकी अध्यक्षतामें इतिहास शाखा और दैवचन्द्र तालुकदारकी अध्यक्षतामें कविसम्मिलनका काम भी सम्पन्न हुआ।

रातको सुरदेवी थियेटार पार्टीद्वारा 'हरिचन्द्र' नाटक अभिनीत हुआ और पुतली-नाच भी हुआ। दूसरी रात को आतिशबाजीका प्रदर्शन भी काफी मनोरंजक हुआ था।

इस सम्मिलनके गृहीत प्रस्तावोंमें एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव यह भी था कि—गुवाहाटी विश्वविद्यालयमें गवेषणाकार्यके लिए अंग्रेजीके साथ साथ असमीया भाषाको भी माध्यमके रूपमें स्वीकृति देनी चाहिए और उसके लिए सभाकी तरफसे विश्वविद्यालयसे अनुरोध किया जाय।

इस वर्ष प्रधान सचिव द्वारा सम्पादित 'असम साहित्यसभा वार्षिकी : नलवारी अधिवेशन' और 'असम साहित्यसभार चमुपरिचिति' नामक दो पुस्तकें प्रकाशमें आईं।

तैंतीसवाँ सम्मिलन :—ई० स० १९६६के ४, ५ और ६ मार्चको उत्तरलक्षीमपुरमें ध्वनिकवि विनन्दचन्द्र बरुवाके सभापतित्वमें असम साहित्यसभाका तैंतीसवाँ अधिवेशन सम्पन्न हुआ। गान्धीवादी नेता, लेखक और असमके प्राक्तन शिक्षामन्त्री अमियकुमार दासने प्रदर्शनीका द्वार खोला। अन्य एक गान्धीवादी नेता विजयचन्द्र भागवतीने मूल सभाका उद्बोधन किया। त्रैलोक्यनाथ गोस्वामीके सभापतित्वमें कविसम्मिलन, परागधर चलिहाके सभापतित्वमें सांस्कृतिक समारोह और करुणानन्द दत्तके [प्राक्तन उपशिक्षा संचालक] सभापतित्वमें इतिहास शाखाकी सभाएँ भी अनुष्ठित हुईं।

इस अधिवेशनमें नेफाके कुछ लोगोंने अंश ग्रहण किया। टिराप सीमान्तके वांगमाङ राजकुमार, सोवनशिरी सीमान्तके टेखिगेलि नेरमेधि [घारमरा सत्रके दफला जनगोष्ठीय शिष्य] और चायबगीचेके मजदूर समाजके व्यक्ति चेनिराम कुर्मी आदि इन लोगोंमें उल्लेखनीय हैं। नेफाके कलाकारोंके द्वारा दिखाया हुआ सांस्कृतिक समारोहका नृत्य-गीत और दफला वैष्णवोंके द्वारा अभिनीत महापुरुषीया [शंकरदेवकी परम्पराको महापुरुषीया कहते हैं] नाटकोंका अभिनय भाओना [महापुरुषीया नाटकोंके अभिनयको भाओना कहनेकी परम्परा है] उल्लेखयोग्य मनोरंजनके कार्यक्रम थे। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे स्थानीय महाविद्यालय के अध्यक्ष योगानन्द बरगोहाई और सचिव थे हरेन्द्रनाथ देवगोस्वामी।

इस वर्षके भीतर निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) असम साहित्यसभा वार्षिकी : उत्तर लक्षीमपुर सम्मिलन [हरिप्रसाद नेओग सम्पादित]।

(२) सेउजीपातर माजे माजे [नगेन शइकीया सम्पादित-चायबगीचोंके मजदूरोंके गीतोंका संकलन]।

(३) असमीया संस्कृति [लीला गगै और हरिप्रसाद नेओग सम्पादित]

(४) काछारमें साहित्यसभाके एकनिष्ठ सेवक विश्वनाथ राजवंशीकी जीवनी [हरिप्रसाद नेओग लिखित]

असमके प्राक्तन मुख्यमंत्री और तमिलनाडुके राज्यपाल विष्णुराम मेधिने बालसाहित्यके उन्नयनके लिए इस वर्ष दस हजार रुपया असम साहित्यसभाको दिया। जोरहाटके गोपालचन्द्र गोस्वामी की स्मृति में बाल-साहित्य प्रतियोगितामें पुरस्कार दिलवानेको उनकी पत्नी हिरण्मयी गोस्वामी और पुत्र अरुण कुमार गोस्वामीने डेढ़ हजार रुपया दिया।

चौंतीसवाँ सम्मिलन :—ई० सन् १९६६के ३१ दिसम्बर और स० १९६७के १ जनवरीको डिब्रूगढ़में नाट्यकार और कहानीकार नकुलचन्द्र भूयाकी अध्यक्षतामें यह सम्मिलन हुआ। मूल सभाके पूर्व ३० दिसम्बरको ही कवि शैलधर राजखोवाके सम्मानार्थ एक सभा अनुष्ठित हुई। मूल सभाके साथ पहलेकी भाँति डॉ० महेश्वर नेओग, प्रसन्नलाल चौधुरी और कालिनाथ शर्माकी अध्यक्षतामें क्रमशः आलोचनाचक्र, इतिहास, संगीत, कवि-सम्मेलन और विज्ञान शाखाओं की सभाएँ भी सम्पन्न हुईं। अतिथियोंमें अरुणाचलके [नेफाके] चौपाक गोहाँई, लुम्नेरदाइ, वांका लोवांग और गोरा पाटिन प्रभृति प्रतिनिधियोंके अतिरिक्त कुछ कलाकार तथा दर्शक भी थे। सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे डिब्रूगढ़ मेडिकेल कॉलेजके अध्यक्ष मथुरानाथ भट्टाचार्य। अश्विनीचरण चौधुरी समितिके सचिव थे।

इस वर्षके लिए भी गत वर्षके प्रधान सचिव हरिप्रसाद नेओग ही फिर चुने गए। सभाकी तरफसे उपन्यास सम्राट रजनीकान्त बरदलै और रोमान्टिक आन्दोलनके पथप्रदर्शक चन्द्रकुमार आगरवालाके जन्म शतवार्षिकी उत्सव क्रमशः २४ और २८ अक्टूबर १९६७को मनाया गया। इस वर्षके भीतर निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

(१) शशी शर्मा द्वारा सम्पादित—चन्द्रकुमार आगरवाला प्रतिभा।
(२) अतुलचन्द्र हाजरिका द्वारा सम्पादित—चन्द्रामृत [चन्द्रकुमार आगरवालाकी कविताओंका संकलन]।
(३) वीरेन बरकटकी सम्पादित—औपन्यासिक रजनीकान्त बरदलै।
(४) होमेन बरगोहाञि सम्पादित—विंशशतिकार असमीया साहित्य।
(५) असम साहित्यसभा वार्षिकी : डिब्रूगढ़ सम्मिलन।
(६) नलिनीवाला देवी की कविताओंका संकलन—अलकानन्दा।
(७) हेमन्तकुमार शर्मा सम्पादित 'रजनी बरदलै—रचना माला'।

(८) असम साहित्यसभार पंचाश बछर [हरिप्रसाद नेओग लिखित]
(९) डिम्बेश्वर नेओग-स्मृतिग्रन्थ।
(१०) अम्बिकागिरि रायचौधुरी-स्मृतिग्रन्थ।
(११) गोलाप खाउन्द लिखित—चाहबागिचार असमीया।
(१२) प्रमथनाथ चक्रवर्ती।

पैंतीसवाँ सम्मिलन :—ई० स० १९६८ के जनवरी २७ और २८ तारीखको तेजपुरमें असम साहित्यसभाका ३५ वाँ अधिवेशन ज्ञाननाथ बरा की अध्यक्षतामें हुआ। साहित्यसभाके उपसभापति डॉ० महेश्वर नेओगने २७ जनवरीके सुबह पताका उत्तोलनके द्वारा 'सम्मिलनका कार्य प्रारम्भ किया। उसके बाद लोकसभाके सदस्य और प्रतिष्ठित साहित्यकार हेम बरुवाने प्रदर्शनीका द्वार खोला। प्राक्तन सभापति अतुलचन्द्र हाजरिकाने उद्बोधन किया। सम्मिलनमें अनुष्ठित आलोचनाचक्रका विषय था—'उच्च शिक्षाके माध्यमके रूपमें क्षेत्रीय भाषाका प्रयोग'। गुवाहाटी विश्वविद्यालयके संस्कृत विभागाध्यक्ष पण्डित डॉ० योगीराज बसुने आलोचनाचक्रका संचालन किया। संगीत शाखाके अध्यक्ष थे कलाप्रेमी तथा लोकसभाके सदस्य प्रफुल्लचन्द्र बरुवा। इतिहास शाखाके अध्यक्ष जोरहाटके जगन्नाथ बरुवा कॉलेजके प्राक्तन अध्यक्ष गुणगोविन्द दत्त थे।

असम राज्यके राज्यपाल विष्णुसहाय और महाराष्ट्रके साहित्यकार श्रीपाद योशी मूलसभामें विशिष्ट अतिथिके रूपमें उपस्थित थे। असमके राज्यिक उपमंत्री छत्रगोपाल कर्मकारने चाय बगीचोंके मजदूरोंके बीच असमीया भाषाके विस्तृत प्रचारका परामर्श सभाके सामने पेश किया।

गुवाहाटी और डिब्रूगढ़ दोनों विश्वविद्यालयोंके सभी स्तरोंमें शिक्षाके माध्यमके रूपमें असमीया भाषाके प्रयोगकी माँग करते हुए

सभामें एक प्रस्ताव ग्रहण किया गया। २७ जनवरीकी रातको महापुरुष शंकरदेव-रचित अंकीयानाट 'पारिजात हरण'का अभिनय हुआ।

असम साहित्यसभासे इस वर्ष ये पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

(१) रघुनाथ चौधारी-स्मृतिग्रन्थ।
(२) नकुलचन्द्र भूञा-स्मृतिग्रन्थ।
(३) असम साहित्यसभा वार्षिकी : तेजपुर सम्मिलन।
(४) शिक्षार माध्यम—आंचलिक भाषा।

असम साहित्यसभाके द्वारा इस वर्ष बड़ी धूमधामसे लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा शतवार्षिकी मनाई गई। स० १९६८के ५ अक्टूबरको इस शतवार्षिकी उत्सवके उपलक्ष्यमें डाक-तार विभागके द्वारा चन्द्रकान्त सन्दिकै भवनके अहातेमें अस्थायी डाकखाना खोलकर बेजबरुवा-स्मारक डाकस्टाम्प निकाला। असमके राज्यपाल ब्रजकुमार नेहरूने लक्ष्मीनाथ बेजबरुवाका चित्रयुक्त स्मारक स्टाम्प सबसे पहले खरीद कर उसका उद्घाटन किया। साहित्यसभाकी तरफसे इस उपलक्ष्यमें निकाली हुई शोभायात्रा भी आकर्षक थी। शोभायात्राकी विशेषता यह थी कि असमीया लोगोंके साथ बंगाली, पंजाबी आदि सभी सम्प्रदायोंके लोगोंने इसमें सहर्ष भाग लिया था।

असम साहित्यसभाके अध्यक्ष ज्ञाननाथ बराकी अध्यक्षतामें जो सार्वजनिक सभा हुई थी, उसमें बंगालके अन्नदाशंकर रायने भी विशिष्ट अतिथिके रूपमें भाषण दिया था असम साहित्यसभाके केन्द्रीय कार्यालयका स्थान होनेके कारण जोरहाटमें और बेजबरुवाके अपने घरका स्थान होनेके कारण शिवसागरमें बेजबरुवा जन्मशतवार्षिकी उत्सवका पालन विशेष रूपमें किया गया। इनके अतिरिक्त असमके अन्य शहरों और डिब्रूगढ़ तथा गुवाहाटीके विश्वविद्यालयोंमें भी यह उत्सव अपने अपने ढंगसे मनाया गया। असमके

बाहर भी यह शतवार्षिकी उत्सव साहित्यसभाकी प्रेरणासे मनानेकी व्यवस्था हुई। उनमें डॉ० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्यायकी अध्यक्षतामें कलकत्तेका, काकासाहब कालेलकरकी अध्यक्षतामें नई दिल्लीका और उड़ीसाके सम्बलपुरका शतवार्षिकी उत्सव विशेष महत्त्वपूर्ण था। दिल्लीके मावलंकर हॉलमें हुई सभामें भारतके राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसेइनने भी भाषण दिया था। उड़ीसाके सम्बलपुरमें काठके व्यवसायके सम्बन्धमें बेजबरुवाजीने कुछ वर्ष विताया था। इसलिए वहांके कोशल साहित्य समाजके द्वारा भी बेजबरुवा-स्मृति सभाका आह्वान किया गया था।

अक्टूबर ६ तारीखको 'असमर लक्ष्मीनाथ' नामक वृत्तचित्रका भी गुवाहाटीमें उद्घाटन हुआ। असम साहित्यसभाकी तरफसे अतुलचन्द्र हाजरिकाद्वारा संकलित और सम्पादित 'बेजबरुवा ग्रन्थावली' भी दो बड़े जिल्दोंमें गुवाहाटीके प्रकाशक 'साहित्य प्रकाशन'ने निकाला। बेजबरुवाकी कहानियोंका संग्रह 'केहोकलि' तथा 'असमीया भाषा आरु साहित्य' नामक और दो पुस्तकें दूसरे प्रकाशकोंके द्वारा प्रकाशित की गईं। साहित्यसभाने भी ये पुस्तकें निकालीं। (१) Religion of Love and Devotion [डॉ० महेश्वर नेओग द्वारा सम्पादित—बरोदाके गायकवाड द्वारा निमंत्रित होकर दिए हुए भाषणोंका तथा अन्यान्य भक्ति बिषयक निबन्धोंका संग्रह] (२) पत्रलेखा [बेजबरुवा के लिखे और बेजबरुवाके लिए औरोंके लिखे पत्रोंका संग्रह] (३) बेजबरुवार दिनलेखा [बेजबरुवाकी दिनचर्या या डायरी] (४) चित्रलेखा [बेजबरुवा सम्बन्धी चित्रोंका संग्रह] (५) प्रबन्ध बाछनि [निबन्धोंका संग्रह—यतीन्द्रनाथ गोस्वामी द्वारा संकलित] (६) साहित्यरथी बेजबरुवा [यतीन्द्रनाथ गोस्वामी लिखित] (७) आमार लक्ष्मीनाथ [विनन्द

चन्द्र बरुवा लिखित] (८) बेजबरुवा प्रतिभा [महेशचन्द्र देवगोस्वामी सम्पादित बेजबरुवा सम्बन्धीय निबन्धावली]।

डॉ० महेश्वर नेओग और असम साहित्यसभाके प्रचारसचिवके द्वारा लिखी हुई बेजबरुवा विषयक दो अंग्रेजी पुस्तकें छापी गईं। रोहितेश्वर शइकीयाकी बेजबरुवा विषयक हिन्दीपुस्तक भी साहित्यसभासे प्रकाशित हुई।

छत्तीसवाँ सम्मिलन :—स० १९६९ के ७, ८, और ९ फरवरीको बरपेटामें यह सम्मिलन कवि और नाट्यकार आनन्दचन्द्र बरुवाकी२२ अध्यक्षतामें हुआ। महेन्द्रमोहन चौधुरी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। यह सम्मिलन भी काफी धूमधामसे हुआ। सार्वजनिक सभाका उद्‌घाटन किया असमके राज्यपाल ब्रजकुमार नेहरूने। उत्कल साहित्य समाजके सभापति श्रद्धाकर सूपकार मुख्य अतिथिके रूपमें आये थे। शाखा सम्मिलनकी अध्यक्षता नलिनीबाला देवीने की थी। महेन्द्र बराकी अध्यक्षतामें आलोचना चक्र, लक्ष्मीप्रसाद दत्तकी अध्यक्षतामें इतिहास सम्मिलन और गहनचन्द्र गोस्वामीकी अध्यक्षतामें सांस्कृतिक समारोह सम्पन्न हुए।

प्रख्यात असमीया उपन्यासकार तथा कहानीकार साहित्य अकादमीसे पुरस्कृत लेखक सैयद आब्दुल मालिक [वर्तमान राज्यसभाके सदस्य] इस वर्ष असम साहित्य सभाके प्रधान सचिव चुने गये। गत वर्षके प्रकाशन कार्यमें अत्यधिक खर्च होने पर यह वर्ष साहित्य सभाके लिए खाली हाथका वर्ष सिद्ध हुआ। क्योंकि प्रकाशन कार्यमें खपे हुए धन को वापस आनेमें देरी लगती है। इस प्रकार आर्थिक अभावके कारण साहित्य सभा-पत्रिकाका प्रकाशन

सन् १९७८ को साहित्य अकादेमीका पुरस्कार भी उनको मिला।

भी बन्द रहा। फिर भी गुवाहाटीमें बेजबरुवा-जन्म शतवार्षिकी का समापन उत्सव धूमधामके साथ सम्पन्न हुआ। असम भ्रमणके समय भारतके राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसेनका असम साहित्य सभाकी तरफसे अभिनन्दन किया गया।

सैंतीसवाँ सम्मिलन :—स० १९७० के १३, १४ और १५ फरवरी को नगाँव जिलेके धिंग नामक कसबेमें असम साहित्य सभाका यह अधिवेशन उपेन्द्रचन्द्र लेखारुके सभापतित्वमें सम्पन्न हुआ। लेखारुजी उस समय वैष्णव विश्वविद्यालय-वृन्दावनके [इन्सटिट्यूट आफ इण्डियन फिलॉसफी] अध्यापक थे। १३ तारीखको आवाहन पत्रिकाके सम्पादक डॉ दीननाथ शर्मा और कलाकार महेन्द्रनाथ डेकाफुकनके सम्मानार्थ भी एक सभा हुई। १४ फरवरीको आनन्दचन्द्र-बरुवा द्वारा पताका उत्तोलनके बाद असम कृषि विश्वविद्यालयके उप-कुलपति डॉ सत्यरंजन बरुवाने प्रदर्शनीका उद्‌घाटन किया। वह वर्ष गान्धी शतवार्षिकीका वर्ष था ; इसलिए 'गांधी तर्पण' भी किया गया।

शंकरदेवके जन्मस्थान बरदोवासे धिंग सात मीलकी दूरीपर है। सम्मिलनके सभापति लेखारुजी बरदोवामें आकर रहे। वहाँसे सभामंडपतक सात मीलका रास्ता मंगल तोरणोंसे सजा हुआ था। नगाँवके उपायुक्तकी देख-रेख में शोभायात्रामें सभापतिको बरदोवासे सभामण्डप तक लाया गया। शोभायात्रामें एकसौ सत्तर मोटरें थीं। गायन-वादन आदि तो थे ही।

देवकान्त बरुवाने सार्वजनिक सभाका उद्बोधन किया। भुवनचन्द्र सन्दिकै की अध्यक्षतामें इतिहास शाखा, प्रसिद्ध अभिनेता फणी शर्माकी अध्यक्षतामें संगीत शाखा, विपिनकुमार बरगोहाँईकी अध्यक्षतामें आलोचनाचक्र कवि नवकान्त बरुवाकी अध्यक्षतामें कवि सम्मिलन भी अनुष्ठित हुआ। सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष

चन्द्रकान्त बरकाकती और कार्याध्यक्ष मौलवी इद्रिस थे। इस सम्मिलनमें निर्वाचित प्रधान सचिव यतीन्द्रनाथ गोस्वामी आगे और दो वर्षोंमें भी निर्वाचित होते रहे।

ई० १९७० के ३० अगस्तमें सभाने कवि मफिजुद्दिन अहम्मद हाजरिकाका जन्म शतवार्षिकी उत्सव पालन किया। अवतक साहित्य सभाको और तीन नये दान मिले। जिनसे वनमाली शइकीया पूँजी, दिगवई साहित्य सभा पूँजी और मोहनचन्द्र शर्मा पूँजीकी व्यवस्था की गई। इन पूँजिओंसे चायबगीचोंके मजदूर विद्यार्थियोंको पुरस्कार देनेका निर्णय किया गया। इस वर्षसे गुवाहाटी और डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालयसे भी सभाको एक-एक हजार रुपएका अनुदान मिलने लगा। फिर भी सभाकी आर्थिक स्थिति तब तक अच्छी नहीं हुई थी।

इस वर्ष साहित्य सभाने ये पुस्तकें प्रकाशित कीं।

१—असम साहित्य सभा वार्षिकी : बरपेटा सम्मिलन [सैयद आव्दुल मालिक सम्पादित]

२—असम साहित्य सभा वार्षिकी : धिंग सन्मिलन [यतीन्द्रनाथ गोस्वामी सम्पादित]

३—मफिजुद्दिन अह्मद हाजरिका-रचनावली [आव्दुल छात्तार सम्पादित]। इन पुस्तकोंके प्रकाशनके अतिरिक्त असम साहित्य सभा-पत्रिकाका पुनर प्रकाशन होने लगा। अरुणाचलमें शिक्षाका माध्यम असमीयाके बदले अंग्रेजी प्रवर्तन करने पर सभाने असन्तुष्टि प्रकट की।

अड़तीसवाँ सम्मिलन :—ई० १९७१ के अप्रैल २३, २४ और २५ तारीख को डिब्रूगढ़ जिलेके माकुम नामक कस्बेमें तीर्थनाथ शर्माकी अध्यक्षतामें असम साहित्य सभाका यह अधिवेशन हुआ। स्वागत समितिके अध्यक्ष थे रमेशचन्द्र बरुवा [आप असम विधान

सभाके अध्यक्ष भी हुए थे] और कार्याध्यक्ष थे त्रिवेणी प्रसाद सिंह। मुख्यमंत्री महेन्द्रमोहन चौधुरीने मूल सभाका उद्बोधन किया और बाग्मीवर नीलमणि फुकनने प्रदर्शनीका उद्घाटन किया। डॉ० प्रमोद भट्टाचार्यकी अध्यक्षतामें आलोचना चक्र, कमलेश्वर चलिहाकी अध्यक्षतामें कवि सम्मिलन और कमलनारायण चौधुरीकी अध्यक्षतामें सांस्कृतिक सम्मिलन अनुष्ठित हुए।

इस वर्ष सभाके द्वारा पद्मनाथ गोहाञिबरुवा और हेमचन्द्र गोस्वामीके जन्म शतवार्षिकी उत्सव पालन किए गए। हरिचन्द्र भट्टाचार्य सम्पादित 'गोहाञिबरुवा प्रतिभा', वेणुधर शर्मा सम्पादित 'हेमचन्द्र गोस्वामी रचनावली' और 'परमाचार्य हेमचन्द्र गोस्वामी' नामक ग्रन्थभी सभाने प्रकाशित किए। पद्मनाथ गोहाञिबरुवाकी रचनावलीके प्रकाशनका दायित्व 'असम प्रकाशन परिषद'ने लिया और अच्छी तरह उसका पालन भी किया।

उनतालीसवाँ सम्मिलन :—ई० १९७२ के ७, ८ और ९ अप्रैलको तीसरीबार धुबुरीमें असम साहित्य सभाका सम्मिलन हुआ। असमीया और अंग्रेजी दोनों भाषाओंमें सधेहुए लेखक राजनीतिज्ञ और लोकसभाके प्राक्तन सदस्य हेम बरुवा सभापति हुए। स्वागत समितिके अध्यक्ष दीनेशचन्द्र सरकार थे। स्वागत समितिकी तरफसे सम्मिलनके उपलक्ष्यमें शिवानन्द शर्मा सम्पादित एक स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। गोवालपाराकी भाषा-संस्कृति और ऐतिह्य सम्बन्धी तथ्योंसे वह स्मृतिग्रन्थ समृद्ध था। मूल सभाका उद्बोधन त्रैलोक्य नाथ गोस्वामीने किया और तत्कालीन मुख्यमंत्री शरतचन्द्र सिंहभी मुख्य अतिथिके रूपमें उपस्थित थे। शाखा सम्मिलन और उनके अध्यक्ष ये थे—इतिहास सम्मिलन—अध्यक्ष थे गुवाहाटी विश्वविद्यालयके इतिहास विभागके अध्यक्ष हेरम्बकान्त बरपुजारी; कवि सम्मिलन

के सभापति थे वैकुण्ठनाथ तर्कतीर्थ ; आलोचना चक्रके सभापति खनीन्द्र नाथ बरुवा थे और सांस्कृतिक समारोहके अध्यक्ष थे अन्नदाचरण दास। गांधीवादी नेता तथा लेखक और प्राक्तन शिक्षामंत्री अमिय-कुमार दास को इस अधिवेशनमें अभिनन्दित किया गया।

इस वर्ष सभाके द्वारा कनकलाल बरुवा और वेणुधर राजखोवा जन्म-शतवार्षिकी उत्सव मनाया गया। इसके उपलक्ष्यमें साहित्य सभाने दो ग्रन्थ प्रकाशित किए।

१—'Studies in the Early History of Assam' [कनकलाल बरुवाके ऐतिहासिक निबंधोका संकलन महेश्वर नेओग द्वारा सम्पादित]

२—'कनकलाल बरुवा रचनावली' [नन्द तालुकदार सम्पादित]।

इस वर्ष आंचलिक (राज्यिक) भाषाको उच्चशिक्षाका माध्यम बनानेके सम्बन्धमें विश्वविद्यालयोंके छात्रोंने जो आन्दोलन किया था, साहित्य सभाने उसका समर्थन किया था।

चालीसवाँ सम्मिलन :—ई० १९७३ के फरवरी १०, ११ और १२ तारीख को रंगियामें असम साहित्य सभाका सम्मिलन हुआ। शिक्षाव्रती गिरिधर शर्मा सभापति चुने गये। सम्मिलनकी मूल सभाका उद्बोधन मुख्यमंत्री शरतचन्द्र सिंहने किया और उन्होंने आलोचना चक्रमेंभी भाग लिया। इतिहास शाखाका उद्बोधन शिक्षा मंत्री हरेन्द्रनाथ तालुकदारने किया। उस शाखाके सभापति थे—असम राज्यिक संग्रहालयके व्यवस्थापक (क्यूरेटर) मुरारिचरण दास। आलोचना चक्रका उद्बोधन प्राक्तन शिक्षा संचालक दिवाकर गोस्वामी द्वारा किया गया। उसके सभापति थे हिन्दी और असमीया दोनों भाषाओं के लेखक और 'पूर्वज्योति' नामक पत्रके सम्पादक छगनलाल जैन। अम्बेश्वर चेतियाफुकन कवि सम्मिलनके सभापति थे और कलाकार युगल दासने प्रदर्शनीका उद्घाटन किया था। अन्य एक कलाकार गजेन बरुवा सांस्कृतिक समारोहके अध्यक्ष थे।

रंगिया सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे- रमणीकान्त शर्मा। इस सम्मिलनमें निर्वाचित असमसाहित्यसभाके प्रधान सचिव नगेन शइकीया अगले दो वर्षोंके लिये भी फिर निर्वाचित होते रहे।

इस वर्ष ही कनकलाल बरुवा जन्म-शतवार्षिकी-पालन समितिके द्वारा [१९७४ के ८ जनवरीको] साहित्यकार, इतिहासविद् और प्राक्तन मंत्री [स्वतन्त्रता प्राप्तिके पूर्व असम मंत्री सभाके मंत्री थे] रायबहादुर कनकलाल बरुवाके गुवाहाटीके अपने वासभवनके अहातेमें एक कांस्य मूर्ति स्थापित की गई। मूर्ति उन्मोचनका कार्य असमके राज्यपाल लालनप्रसाद सिंहने सम्पन्न किया।

प्रकाशनके क्षेत्रमें निम्नलिखित काम इस वर्षके भीतर हुए।

१—असम साहित्य सभा वार्षिकी : रंगिया सम्मिलन।

२—असमीया ग्रन्थ-पंजी [लीला गगै और डॉ० केशवानन्द गोस्वामी द्वारा संकलित ; ई० १९७० तक प्रकाशित ग्रन्थोंके विषयोंके परिचय सहित]।

३—असम साहित्य सभार भाषणावली। ३६ वें सम्मिलनसे ३९ वें सम्मिलन तक मूल सभाके सभापतियोंके भाषणोंका यतीन्द्रनाथ गोस्वामी द्वारा संग्रह]

इस वर्ष सभापति गिरिधर शर्माके विशेष प्रयाससे विविध विषयोंके ३९ ग्रन्थ लिखवाए गए थे। पर उनमेंसे ये ही प्रकाश किए जा सके।

१—असमीया जातिर इतिवृत्त।

२—नाट्य साहित्य [डॉ० शैलेन भराली]।

३—जीवनी साहित्य [गोविन्दप्रसाद शर्मा]।

४—प्लेटो [अध्यक्ष शरतचन्द्र गोस्वामी]

५—चक्रेटिस [डॉ० कालिचरण दास]
६—स्वप्नवासवदत्ता [डॉ० मुकुन्दमाधव शर्मा द्वारा अनूदित]
७—सेमुवेल जॉनसनर जीवनी [यतीन्द्रनाथ गोस्वामी]
८—एकादशी [छगनलाल जैन द्वारा हिन्दीसे अनूदित ग्यारह कहानियोंका संग्रह]
९—राभाजनजाति [राजेन राभा]

असम साहित्य-सभा-पत्रिका त्रैमासिक के वदले मासिक करनेका निर्णय लिया गया था ; पर आर्थिक अभावके कारण नौ महीनेके बाद उसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। ई० १९६८ से लेखक शिविर चलानेका विचार साहित्य सभामें हो रहा था। ई० १९७३ के २६ दिसम्बरसे १९७४ के १ जनवरी तक लेखक शिविरका आयोजन पहली बार इस कार्यपालिकाके कार्यकालमें किया गया। डॉ० महेश्वर नेओगके संचालनमें यह शिविर गुवाहाटी शहरमें सम्पन्न हुआ। असमीया जिन लेखकोंकी मातृभाषा हैं, उन लेखकोंके साथ वैसे अन्य जनजातिकी भाषाबोलनेवाले लेखकोंने भी इस शिविरमें भाग लिया था। इस प्रकार कुल ७० लेखकोंकी सहयोगिता इस शिविर को मिली थी। शिविरमें युद्धोत्तर कालीन असमीया साहित्यकी विभिन्न दिशाओंके सम्बन्धमें विस्तारसे विचार-विमर्श हुआ। एक्य और राष्ट्रीयताकी ओर भी ध्यान दिया गया था। प्रथम लेखक शिविर के सम्बन्धमें यतीन्द्रनाथ गोस्वामी सम्पादित 'स्मृतिग्रन्थ'में और नगेन शइकीया सम्पादित 'आधुनिक असमीया साहित्यर अभिलेख' शीर्षक ग्रन्थमें कार्योंका विवरण दिया गया है।

इकतालीसवाँ सम्मिलन :—८, ९ और १० फरवरी १९७४ को मंगलदइमें असम साहित्य सभाका ४१ वाँ अधिवेशन गुवाहाटी विश्वविद्यालयके असमीया बिभागाध्यक्ष प्रतिष्ठित आलोचक डॉ० महेश्वर

नेओगके सभापतित्वमें हुआ। ठहरनेके स्थानसे सभामंडप तक शोभा-यात्रा कर सभापतिको ले जानेका दृश्य विशेष आकर्षक था। ४१ वाँ सम्मिलन होनेके कारण ४१ संख्यापर विशेष ध्यान रखा गया था। शोभायात्राकी विशेष आकर्षणीय वस्तुओंमें ये प्रमुख थीं—४१ सुसज्जित हाथी ; स्थानीय पोशाक और सुसज्जित जापि× पहनी हुई हाथमें संगनवटसहित ४१ कन्याएँ ; शराइ* हाथमें लिये हुई ४१ महिलाएँ और ढोल, मृदंग आदि वाद्योंके साथ बड़ो लोगोंका 'खेराई' नृत्य। वह समदल अभूतपूर्व था। उसे देखकर असमके राज्यपाल लालनप्रसाद सिंह और उड़ीसा के प्रसिद्ध साहित्यकार कालिन्दीचरण पाणिग्राही बड़े आनन्दित तथा विस्मित हुए। सम्मिलनमें ये दोनों विशिष्ट अतिथि थे।

सम्मिलनकी मूल सभाके सभापतिकी अध्यक्षतामें ९ फरवरीके शामको अनुष्ठित आलोचना सभामें बीते हुए वर्षमें (१९७२-७३ में) प्रकाशित असमीया कहानी, नाटक, कविता आदि विविध विषयोंके ग्रन्थोंके सम्बन्धमें भी चर्चा की गई थी। यह आलोचना सभा अधिवेशनकी मूल सभाका एक अंश मान ली गई। इस आलोचना सभाके अतिरिक्त समालोचक मुनीन बरकटकीके संचालनमें भी एक आलोचना सभा हुई थी। नारायणचन्द्र बेजबरुवाकी अध्यक्षतामें सांस्कृतिक समारोह, कवि भवानन्द राजखोवाकी अध्यक्षतामें कवि सम्मिलन और सदानन्द चलिहाकी अध्यक्षतामें इतिहास शाखाकी सभा आदि शाखा सभाएँ भी अनुष्ठित हुईं। असमीया भाषाकी मर्यादा-रक्षाके लिए प्राणोत्सर्ग करनेवालोंका श्रद्धातर्पण भी

× जापि—वर्षाके पानीसे सिर बचानेकलिए छाता जैसी एक वस्तु है, जिसको टोपीकी भाँति सिरमें पहनते हैं और जिसको पकड़नेके लिए दंडा नहीं रखते।

*शराइ—एक प्रकारका वर्तन, जिसका उपयोग सम्मान-प्रदर्शनके कार्यमें किया जाता है। इसके ऊपरके और जमीनके हिस्से थाली जैसे हैं। बीचका हिस्सा पकड़नेके लिए दंडा जैसा रखा जाता है।

नीलमणि फुकनके पौरोहित्यमें किया गया।

उड़ीसाके प्रसिद्ध उपन्यासकार पाणिग्राहीने मूलसभाका उद्बोधन किया। मुख्यमन्त्री शरतचन्द्र सिंह सभाके विशिष्ट अतिथि थे। सभामें सांवादिक लक्ष्मीनाथ फुकन, लोकसाहित्य की खोजमें तत्पर श्रीरामचन्द्र दास, तपेश्वर शर्मा (पीछलीबार मंगलदई अधिवेनके तपेश्वर शर्मा स्वागताध्यक्ष थे), और मंगलदई के इतिहासके प्रणेता दीनेश्वर शर्माको अभिनन्दित किया गया। इस सम्मिलनकी स्वागत समितिके अध्यक्ष थे बहादुर वसुमातारी और सचिव थे रमेश चन्द्र सहरीया। ये दोनों असम विधान सभाके भी सदस्य थे। सम्मिलनके उपलक्षमें स्वागत समितिकी तरफसे तफज्जुल आलि द्वारा सम्पादित "मध्यविंशशतिकार असमीया साहित्य" और 'दरंगस्मृति' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

ई० १६७४ के नवम्बर ६ तारीख से ६ तारीखतक डॉ महेश्वर नेओगके संचालनमें असमकी जनजातीय भाषाओंकी लिपिके सम्बन्धमें और असमीया भाषाकी लिपिके सरलीकरणके सम्बन्धमें आलोचनाके लिए एक लेखक शिविरका आयोजन गुवाहाटीमें किया गया। शिविरमें बड़ो साहित्यसभाके सभापति रामदास बड़ो प्रभृति जनजातीय लेखकोंने भी भाग लिया। 'असमर लिपि समस्या' शीर्षक नगेन शइकीया-सम्पादित पुस्तकमें शिविरमें आलोचित विषयोंका वर्णन मिलता है। पूर्वोत्तर भारतके लोगोंमें ऐक्य तथा संहतिके लिए प्रयास करते हुए इस वर्षमें जिन पुस्तकोंका प्रकाशन कार्य सम्पन्न किया गया है, उनके नाम नीचे दिये गए हैं।

(१) कार्बि जनगोष्ठी [लंकाम टेरण द्वारा लिखित] (२) देउरी चुतीया [ले० पवनचन्द्र शइकीया] (३) विष्णुपुरीया मणिपुरी [खुमल महीदेव सिंह द्वारा लिखित मणिपुरी भाषाविषयक पुस्तक] (४) करमपूजा आरु भुमुर गीत [ले०—रुक्मधर गोहाँइ] (५) मपिन

उत्सव [अरुणाचलके आदी जनजातिका उत्सव विशेष, [ले०—वीरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य] (६) टाइभाषा [विमलाकान्त बरुवा द्वारा लिखित] (७) गारो संस्कृतिर रूपरेखा [ले०—धीरेन्द्र नारायण मजुमदार] (८) गोवालपरीया लोकगीत संग्रह [संग्राहक और सम्पादक—बीरेन्द्र नाथ दत्त] (६) चाह बागिचार सांस्कृतिक जीवनत एभुमुकि [ले०—नारायण घाटोवार] इनके अतिरिक्त बड़ो, तिवा, कोच राजवंशी, मिचिं और अरुणाचल तथा नगाभूमिके सम्बन्धमेंभी पुस्तक प्रकाशनकी योजना बनाई गई थी, पर वह कार्य सम्पन्न न हुआ।

जातीय संहतिमूलक साहित्य प्रकाशनके अतिरिक्त साधारण साहित्यके क्षेत्रमें निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए १—आनन्दचन्द्र आगरवाला (जीवनी), लेखक—तिलकचन्द्र काकती, २—चन्द्रधर बरुवा ग्रन्थावली, नगेन शइकीया और यतीन्द्रनाथ गोस्वामी सम्पादित, ३—चन्द्रधर बरुवा मानुहजन, लेखक—डिम्बेश्वर शर्मा, ४—आनन्दचन्द्र आगरवाला ग्रन्थावली; महेन्द्र बरा और यतीन्द्रनाथ गोस्वामी सम्पादित, ५—रामायण लंका काण्ड [तुलसीदासके रामचरित मानसके आधारपर रचित १८ वीं शतीके शेषार्धके श्रीकान्त सूर्य विप्रका पद्यग्रन्थ] सम्पादक—डॉ महेश्वर नेओग ६—असमर लिपि समस्या, सम्पादक नगेन शइकीया ७—चुटिगल्प, उदय दत्त लिखित [छोटी कहानी विषयक आलोचना] ८—मंगलदइ; नगेन शइकीया सम्पादित [मंगलदइ सन्मिलनके भाषण तथा विवरण का संग्रह] ६—Presidential Address to Assam Sahitya Sabha [डॉ महेश्वर नेओगके अभिभाषणका अंग्रेजी अनुवाद]

योगेन्द्र नारायण भूञा संगृहीत तथा सम्पादित 'रत्नेश्वर महन्त रचनावली' के प्रकाशन का दायित्व असम प्रकाशन परिषदको देनेका सिद्धान्त कार्यपालिका द्वारा लिया गया।

* पहलेका नेफा अब 'अरुणाचल' नामसे परिचित हुआ।

ई० १९७४ के ५ और १५ अक्टुबरमें दो प्राक्तन सभापतियोंके जन्म शतवार्षिकी उत्सव साहित्य सभाने पालन किया। ये दो सभापति थे आनन्द चन्द्र आगरवाला और चन्द्रधर बरुवा। इन अग्रणी लेखकोंके नामपर गुवाहाटी और डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में भी स्मारक भाषणकी व्यवस्था की गई।

प्रतिवर्ष २९ जनवरीका दिन साहित्य सभाकी तरफसे जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालयमें दानवीर 'राधाकान्त सन्दिकै दिवस' मनाया जाता है। उस दिवस-पालनमें खर्च करनेके लिए उनके पुत्र पण्डित कृष्णकान्त सन्दिकैने अढ़ाई हजार रुपएकी एक न्यासपूँजीकी व्यवस्था कर दी। चन्द्रकान्त सन्दिकै भवनके अग्निबीमाके लिए भी पाँच-हजार रुपयोंकी न्यासपूँजीका धन कृष्णकान्त सन्दिकैने दिया।

१९७५ के २९ जनवरीमें असम-सरकारने साहित्यसभाके परामर्शके आधारपर ६ साहित्यकारोंको साहित्यिक पेन्सन देनेकी बात भी घोषित की।

बयालिसवाँ सन्मिलन :—ई० १९७५ सनमें २१, २२ और २३ फरवरीको जोरहाटसे करीब २० किलो मीटर दूर तिताबर नामक कसबेमें असम साहित्यसभाका ४२ वाँ अधिवेशन हुआ। स्वागत समितिके अध्यक्ष तिताबर महाविद्यालयके अध्यक्ष चक्रेश्वर शइकीया थे। स्वागत समितिकी तरफसे दो ग्रन्थ प्रकाशित हुए। उनमेंसे एक है 'स्मृतिग्रन्थ' और दूसरा है आब्दुल छात्तार सम्पादित 'सप्तम दशकर असमीया साहित्यर इतिवृत्त'।

गुवाहाटी विश्वविद्यालयके भारतीय भाषाविभागके अध्यक्ष डॉ सत्येन्द्रनाथ शर्मा मूलसभाके सभापति थे। ४१ वें अधिवेशनकी भाँति इस अधिवेशनमें भी मूलसभाके सभापतिके सभापतित्वमें तथा मूलसभाके अंश रूपमें एक आलोचनाचक्र अनुष्ठित हुआ था। इसका

आलोच्य विषय था—असमीया भाषा-संस्कृतिमें जनजातीय उपादान। २२ फरवरीको मूल सभाका उद्बोधन पंजाबके मुख्यमन्त्री डॉ कृपालसिंह नारंगने किया। उनके भाषणमें पंजाब और असमके सांस्कृतिक ऐक्यकी झलक दिखाई पड़ती थी। २३ फरवरीकी मूलसभामें असम-मुख्यमन्त्री शरतचन्द्र सिंह विशिष्ट अतिथि थे। अधिवेशनकी प्रदर्शनीका द्वार शिक्षामन्त्री हरेन्द्रनाथ तालुकदारने खोला। नाटयशिल्पी सत्यप्रसाद बरुवाकी अध्यक्षतामें हुई संगीत सभाका उद्बोधन असमके संस्कृति तथा गृहमन्त्री हितेश्वर शइकीयाने किया। अन्यान्य शाखा सभाएँ इस प्रकार थीं—गीतकार तथा कवि केशव महन्त की अध्यक्षतामें कविसम्मिलन हुआ। संवादसेवी और उपन्यासकार वीरेन्द्रनाथ भट्टाचार्यके सभापतित्वमें असमीया संवाद-साहित्यके सम्बन्धमें एक आलोचना सभा हुई।

हरिप्रसाद गोर्खाराय की अध्यक्षतामें एक सम्वर्धना सभा भी हुई थी, जिसमें नवकान्त बरुवा, सीतानाथ ब्रह्मचौधुरी, दण्डिधर फाटोवाली, दीननाथ शर्मा, गोविन्द चन्द्र पैरा, तरुणचन्द्र पामेगाम, राजेन राभा, लंकाम टेरन, मणिराभा, अतुल चन्द्र बरुवा और रिपुनाथ बुढ़ागोहाँई सम्वर्धित हुए। संगीत सभामें भी युगलदास प्रभृति पाँच कलाकार सम्वर्धित हुए।

इस वर्षके भीतर तीन वरेण्य साहित्यकारोंका जन्मशतवार्षिकी उत्सव पालन किया गया।

१९७५ के जून १४ और १५ तारीखको जोरहाटमें तत्त्वदर्शी राधानाथ फुकन का जन्मशतवार्षिकी उत्सव पालन किया गया। ७ नवम्बरको असमके सभी स्थानोंमें कर्मवीर नवीन चन्द्र बरदलै का जन्मशतवार्षिकी उत्सव पालन किया गया। इस उपलक्षमें जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालयकी तरफसे आयोजित स्मारक भाषणके वक्ता थे गान्धीवादी राजनीतिज्ञ तथा लेखक विजयचन्द्र भागवती। 'भारतके

स्वाधीनता आन्दोलनकी रूपरेखा' शीर्षक उनका भाषण पुस्तकके रूपमें बादमें प्रकाशित हुआ। १९७६ के १३ जनवरी से १८ जनवरीतक विस्तृत कार्यसूची के अनुसार कवि और इतिहासविद् हितेश्वर बरबरुवा का जन्मशतवार्षिकी उत्सव भी जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालयने पालन किया। इस उपलक्षमें नगेन शइकीया द्वारा सम्पादित 'हितेश्वर बरबरुवा-स्मृति माल्य' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई। प्राच्यविद्यार्णव आनन्दराम बरुवाके १२५ वाँ जन्मवर्षके उपलक्षमें १९७५ के २७ और २८ अक्तुबरको गुवाहाटीमें स्मारक भाषणावलीकी व्यवस्था की गई, जिसमें काशी विश्वविद्यालयके अध्यापक डॉ० ठाकुर प्रसाद वर्माने प्राचीन कामरूपकी लिपिके सम्बन्धमें तीन भाषण दिये। उनके भाषणोंको मिलाकर 'Development of scripts in Ancient Kamrup' नामक एक छोटी पुस्तक प्रकाशित की गई इन पुस्तकोंके अतिरिक्त इस वर्ष निम्नलिखित पुस्तकें भी साहित्यसभाकी तरफसे प्रकाशित हुईं।

Annals of Assam Sahitya Sabha, [डॉ महेश्वर नेओग द्वारा लिखित], तितावरर सोँवरण [तितावरमें अनुष्ठित साहित्य सभाके अधिवेशनके भाषण सहित कार्य विवरण], तिवासम्प्रदाय परिचय [सदौ असम तिवा युवछात्र सम्मिलनके द्वारा संकलित], सुफी आरु सुफीवाद [सैयद अब्दुल मालिक द्वारा लिखित], जगन्नाथ बरुवा [ले०—यतीन्द्रनाथ गोस्वामी , देशभक्त तरुणराम फुकन [ले०—जितेन्द्र कुमार बरुवा], सागरर कथा [ले०—रमेशगोस्वामी, कमला देवी पुरस्कार प्राप्त], स्नेहर अरुणाचल [डॉ० महेश्वर नेओग] और चन्द्रधर बरुवा, बेजबरुवार दिनलेखा, अध्ययनचक्र [तृतीय लेखक शिविरका विवरण] प्रभृति पुस्तकें।

१९७५ के २५ और २६ दिसम्बरको जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालयमें तृतीय लेखकशिविर अनुष्ठित हुआ। 'असमका पुरातत्त्व

और इतिहासका अध्ययन' विषयक आलोचना-सभाका संचालन पुरातत्त्वविभागके संचालक डॉ० प्रतापचन्द्र चौधुरीने किया। दूसरा विषय था—'असमीया साहित्य और साहित्य-समालोचना'। सैयद आब्दुल मालिकने इस सभाका संचालन किया। तीसरा विषय 'लेखक और प्रकाशककी समस्या' सम्बन्धी था। विपिनकुमार बरगोहाँइ इस सभाके संचालक थे। 'आधुनिक असमीया संगीतकी धारा—ज्योति संगीत' विषयक चौथी आलोचना सभाका संचालन डिब्रूगढ़ आकाशवाणीकेन्द्रके संचालक संगीतज्ञ वीरेन फुकनने किया।

तैंतालीसवाँ सम्मिलन :—१, २ और ३ फरवरी १९७६ में टिहु नामक कसबेमें असम साहित्य सभाका ४३ वाँ अधिवेशन हुआ। नगाँव महाविद्यालयके अध्यक्ष यज्ञेश्वर शर्मा सम्मिलनकी मूलसभाके सभापति हुए। असमके तत्कालीन राजस्वमन्त्री डॉ० भूमिधर बर्मण स्वागतसमितिके अध्यक्ष थे। भारत गणराज्यके राष्ट्रपति फखरुद्दिन आलि अह्मदने सम्मिलनका उद्बोधन किया। बंगाली साहित्यकार सुभाष मुखोपाध्याय और असमके मुख्यमन्त्री शरतचन्द्र सिंह मुख्य तथा विशिष्ट अतिथि थे। प्रदर्शनीका द्वार कवि तथा प्राक्तन सभापति विनन्दचन्द्र बरुवाने खोला। नाट्यकार सारदाकान्त बरदलने सांस्कृतिक समारोहका संचालन किया। महिलाकवि डॉ० निर्मलप्रभा बरदलैकी अध्यक्षतामें अनुष्ठित कविसम्मिलनका उद्घाटन किया कवि नवकान्त बरुवाने। इस आलोचना चक्रका विषय था—'आधुनिक असमीया साहित्यमें समाज-चेतना और मनःसमीक्षण'। आलोचना चक्रका संचालन किया सैयद आब्दुल मालिकने। स्वागत समितिकी तरफसे प्रकाशित स्मृतिग्रन्थका उन्मोचन किया कहानीकार रमादाशने। असम साहित्यसभाकी तरफसे प्रकाशित ग्रन्थोंका उन्मोचन परागधर चलिहाने किया। अन्यान्य और कुछ ग्रन्थोंका

उन्मोचन नवकान्त बरुवाने किया। इस सम्मिलनमें कवि कालिदास खाटनियार साहित्य-सभाकी तरफसे सम्वर्धित हुए और डॉ० हेमन्त कुमार शर्मा साहित्य सभाके प्रधान सचिव चुने गये। इस वर्षके विशेष उल्लेखनीय काम ये हैं—

१—असम और आस-पासके क्षेत्रोंकी भाषा तथा-संस्कृतिके अध्ययन-केन्द्रके रूपमें जोरहाटके केन्द्रीय कार्यालयके साथही "राधाकान्त सन्दिकै भवन" निर्माणके लिए असम-सरकारसे दो लाख रुपएका अनुदान असम साहित्य सभाको मिला।

२—१९७६ के २४ और २५ दिसम्बरको तेजपुर शहरमें चतुर्थ लेखक शिविरका काम सम्पन्न हुआ। शिविरका पहला आलोच्य विषय था—"साम्प्रतिक साहित्यमें रुचि, आदर्श तथा सामाजिक दायित्व" और दूसरा विषय था—"असमीया संवादपत्र पत्रिकाओंकी समस्याएँ और उनके मान (स्टेण्डर्ड)। तीसरा आलोच्यविषय शब्दोंका वर्णविन्यास सम्बन्धी था। इस शिविरके विवरण ग्रन्थकी तैयारी हो रही है।

३—१९७६ के ५ और ६ जूनको सर्वप्रथम असम राज्यके बाहर नगालैंडके डिमापुर शहरमें असम साहित्य सभाकी कार्यपालिकाकी बैठक हुई। उस अवसरपर कार्यपालिकाके सदस्योंने नगाभूमिके और कुछ स्थानोंमें जाकर नगालोगोंसे सम्प्रीति स्थापनका कार्य किया था। नगाभूमिके लोगोंनेभी असम साहित्य सभाके सदस्योंका स्वागत किया था। इसके अतिरिक्त अरुणाचल, मेघालय और नगा-भूमि आदि क्षेत्रोंमें सम्प्रीति वृद्धिके उद्देश्यसे साहित्य सभाकी तरफसे शुभेच्छा दल भी इस वर्ष भेजे गए। यहाँ ध्यान देनेकी बात यह भी है कि अरुणाचल और नगा राज्यके लोगोंकी अपनी अपनी छोटी छोटी बहुत बोलियाँ हैं; पर वे आपसमें अपना भाव प्रगट करनेके लिए असमीया भाषाकाही उपयोग करते आए हैं।

बाजारोंमें हिन्दीका भी कुछ प्रभाव है; किन्तु अंग्रेजोंके शासनका अन्त होनेपर भी, स्वतन्त्र भारतकी नई शासन व्यवस्थामें वहाँ अंग्रेजीके पैर जमने लगे। नगालोगोंमें प्रचलित असमीया बोल-चालकी भाषा भी "नागामिज" (नगा आसामिज) नामसे परिचित हो रही है, जिसमें असमीयाकी अपेक्षा अंग्रेजीका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हर जगह हाईस्कूलकी शिक्षाके द्वारा भारतीय भाषाको दबा-कर अंग्रेजीका प्रचार किया जा रहा है। ऐसी हालतमें लोगोंके बीच ऐक्य तथा संहतिके लिए साहित्यसभाकी भाँति गैरसरकारी प्रयास की आवश्यकता है।

४—१९७७ के २२ और २३ जनवरीको गुवाहाटीमें असमसाहित्य सभाकी तरफसे देशभक्त तरुणराम फुकन-जन्मशतवार्षिकी उत्सव का पालन किया गया। उत्सवके उपलक्षमें 'तरुणराम फुकन स्मृतिमाल्य' शीर्षक अतुलचन्द्र हाजरिका सम्पादित पुस्तक प्रकाशित हुई। तरुणराम-फुकन स्मारकवक्तृता पुस्तक भी प्रकाशित होनेवाली है।

इस वर्षके भीतर साहित्य सभाने ये पुस्तकें प्रकाशित की—

१—ध्वनि आरु रसतत्त्व [ले० डॉ० मुकुन्दमाधव शर्मा] २ असमीया संगीतर ऐतिह्य [ले०- डॉ वीरेन्द्रनाथ दत्त] ३—नृतत्त्वर चमु आभास ले०—डॉ० भुवनमोहन दास] ४—चिकित्साविज्ञानर इतिहास—[ले०—असम मेडिकेल कॉलेज डिब्रूगढ़के प्राक्तन अध्यक्ष डॉ० मथुरानाथ भट्टाचार्य] ५—चाहर कथा [ले०—डॉ० दीननाथ बरुवा] ६—सेक्सपीयेर [ले०- तारिणीकान्त भट्टाचार्य] ७—कामेंग-सीमान्तर साधु, ८—कार्बि साधु, १०—बड़ो साधु, ११—देउरीसाधु १२—नेपाली साधु १३—रहीम-रूपवानर साधु १४—मिसिं साधु १५—सिखधर्मीय साधु १६—जातकर साधु १७—चाहबनुवार माजत प्रचलित साधु १८—कामरूपी लोकगीतिसंग्रह १९—टिहु-रुक्मिमी

[टिहुके अधिवेशनका विवरण] २०—नगाभूमि २१—असमीया गल्प-गुच्छ। *

प्राक्तन सभापति विहगीकवि रघुनाथ चौधारी और वाग्मीवर नीलमणि फुकन द्वारा लिखित सभी पुस्तकोंका स्वत्व इस वर्ष साहित्य सभाको दिया गया। नीलमणिफुकन, अम्बिकागिरि राय चौधुरी और संगीतकार कवि उमेशचन्द्र चौधारीके व्यक्तिगत ग्रन्थागारके ग्रन्थसमूह भी साहित्य सभाको दान किये गये।

चौवालीसवाँ सम्मिलन :—१६७७ के ५ और ६ फरवरी को अभयापुरी नामक कसबेमें जनप्रिय कहानीकार और उपन्यासकार आब्दुल मालिककी अध्यक्षतामें असम साहित्य सभाका ४४ वाँ अधिवेशन सम्पन्न हुआ। असमके समाज कल्याण मन्त्री उत्तमचन्द्र ब्रह्म स्वागताध्यक्ष थे। सम्मिलनकी मूल सभाका उद्बोधन पहले दिन मुख्यमन्त्री शरतचन्द्र सिंहने और दूसरे दिन अरुणाचलके मुख्यमन्त्री प्रेमखान्दु थुंगनने किया। बंगालके प्रख्यात कथाकार सुनील गंगोपाध्याय मुख्य अतिथि थे। वीरेन बरकटकीकी अध्यक्षतामें अनुष्ठित कवि सम्मिलनका उद्बोधन फणी ब्रह्मने किया था। सांस्कृतिक समारोहके अध्यक्ष थे कलाकार चन्द्रधर गोस्वामी और प्रदर्शनीका उद्घाटन किया था असमके गृह, तथ्य तथा संस्कृति विषयक मन्त्री हितेश्वर शइकीयाने।

'युद्धोत्तर कालके असमीया समाज और सृष्टिशील साहित्यमें परिवर्तन'—इसविषयपर आलोचना चक्र अनुष्ठित हुआ। उसके संचालक थे कहानीकार योगेश दास और उद्बोधक थे—रायहानशाह।

* साधु शब्द 'लोककथा' के अर्थमें असमीया भाषामें प्रयोग होता है। असम और आस-पासके राज्योंमें बसे हुए विभिन्न उपजातियोंके लोगोंमें प्रचलित कथाएँ यहाँ साधु नामसे अभिहित की गई हैं। कामरूप ब्रह्मपुत्र उपत्यकाका पुराना नाम है। वर्तमान कामरूप वह जिला है, जहाँ गुवाहाटी, बरपेटा और नलबारी शहर हैं।

मूल अधिवेशनमें डॉ० भवेन्द्रनाथ शइकीया, होमेन बरगोहाञि और भृगुमुनि कागयुं तथा संगीत समारोहमें डॉ० भूपेन हाजरिका, प्रतिमा पाण्डे और राजेन पाम सम्बर्द्धित हुए। इस सम्मिलनमें आब्दुस छात्तार प्रधान सचिव निर्वाचित हुए।

असम साहित्य सभाका पंचम लेखक शिविर इस वर्ष शिवसागरके रंगपुर साहित्य सभाके आमन्त्रणमें अनुष्ठित हुआ। अक्टूबर महीनेके २४ और २५ तारीख को अनुष्ठित इस शिविरमें ये दो विषय लिए गए थे—(१) असमीया साहित्यका इतिहास प्रणयन—समस्याएँ और मान (स्टेण्डर्ड)। इस विषयके संचालक थे—डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालयके असमीया विभागाध्यक्ष डॉ० महेन्द्र बरा। (२) वर्तमान स्कूलकी पाठ्य पोथियोंकी समस्याएँ और मान; संचालक थे—साहित्यसभाके प्राक्तन सभापति तीर्थनाथ शर्मा। कलकत्ता-विश्वविद्यालयके प्राक्तन अध्यापक डॉ० आशुतोष भट्टाचार्यने इस शिविरका उद्बोधन किया। इस शिविरके उपलक्ष्यमें नाहेन्द्र पादुन सम्पादित एक उच्च मानयुक्त स्मृति-ग्रन्थका भी प्रकाशन स्वागत समितिकी तरफसे हुआ।

इस वर्षके भीतर प्रकाशित पुस्तकें ये हैं—१ Anandaram Dhekial Phukan : Plea for Assam & Assamese. (Edited & compiled by Dr Maheswar Neog) २—बातरि विभूति [नीलमणि फुकन सम्पादित 'बातरि' नामक पत्रके चुने हुए सम्पादकीय लेख, सम्पादक-संग्राहक— वेणुधर शर्मा] ३— शताब्दीर अर्घ्य [अतुल चन्द्र हाजरिकाका कविता-संकलन, इस संकलनका सम्पूर्ण स्वत्व लेखकने साहित्य सभाको दिया] ये तीनों पुस्तकें इस वर्षके हीरकजयन्तीके उपलक्ष्यमें प्रकाशित की गई और उनका उन्मोचन भी हीरक जयन्तीमें किया गया। ४—असमर खनिज सम्पद [लि०—डॉ० शिशिर दत्त, एस० के० भट्टाचार्य, स्वप्ना बरदलै] ५—असमर

वनौषध [ले० शान्तनु तामुली, डॉ० दीननाथ बरुवा] ६—रासायनिक आविष्कार आरु आमि [ले० योगेन बरुवा] ७—किंवदन्तीर साधु [ले०—डॉ० हेमन्त कुमार शर्मा] ८—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन [ले०—बापचन्द्र महन्त] ९—प्रबन्ध-संचयन [सं०—नगेन शइकीया] १०—आधुनिक असमीया कविता [ले०—डॉ० चन्द्र कटकी] ११—कामरूपी लोकगीति संचयन [ले०—हेमन्त शर्मा] १२—बौद्ध जातकर साधु ले० -शासन-वंश भिक्षु]।

॥ हीरक जयन्ती उत्सव ॥

ई० १९१७ के २६ दिसम्बर से १९७७ के २६ दिसम्बर को ५९ वर्ष पूरे होकर ६० वें वर्षमें पैर रखनेपर ई० सन् १९७७ के २६ और २७ दिसम्बरको असम साहित्य सभाका गौरवोज्ज्वल हीरक जयन्ती उत्सव मनाया गया। केन्द्रीय कार्यालय जोरहाटमें इस उत्सवका कार्यक्रम इस प्रकार था। २६-१२-७७ को सुबह साहित्य-सभाके सभापति सैयद आब्दुल मालिक स सभाके पताका उत्तोलन के द्वारा उत्सवका श्रीगणेश किया गया। इसके बाद शहीदतर्पण और प्रकाशित ग्रन्थोंका उन्मोचन कार्य सम्पन्न हुआ। हीरकजयन्तीके उपलक्ष्यमें प्रकाशित ग्रन्थोंका उन्मोचन प्राक्तन सभापति, लेटुग्राम सत्राधिकार मित्रदेव महन्तने किया।

दोपहरको एक आकर्षक तथा जोरहाटमें शायद अभूतपूर्व लम्बी शोभायात्रा हुई। करीब तीन बजे हीरक जयन्ती स्मारक वक्तृताके प्रथम वक्ता डॉ० महेश्वर नेओगने 'असमीया समालोचना साहित्यर समालोचना' विषयपर अपना भाषण दिया। शामको कवि आनन्द चन्द्र बरुवाके संचालनमें एक कविसम्मेलन अनुष्ठित हुआ। 'पूर्वभारतीय सांस्कृतिक ऐक्य'—इस विषयपर सांवादिक डॉ० बीरेन्द्र-

कुमार भट्टाचार्य, रायहान शाह और विश्वनारायण शास्त्रीने अपना अपना विचार प्रकट किया।

२७ दिसम्बरको दोपहर १ बजे सार्वजनिक सभा असम साहित्य सभाके अध्यक्ष सैयद आब्दुल मालिककी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुई। वहाँ इलाहाबाद विश्वविद्यालयके अंग्रेजी विषयके वाचक डॉ० जयकान्त मिश्र विशिष्ट अतिथि थे। मिश्रने मैथिली भाषासे असमीया भाषाका गहरा सम्पर्क दिखाते हुए एक लम्बा लिखित भाषण दिया। सभाका एक आकर्षक कार्यक्रम था वाग्मीकवि नीलमणि फुकनकी सम्वर्धना। साहित्य सभाकी सर्वप्रथम कार्यपालिका सभाके ४३ सदस्योंमें फुकन भी थे। अबतक फुकनके अतिरिक्त उनमें से और कोई जीवित नहीं। साढ़े सतान्नबे वर्ष की उम्रवाले फुकन असम साहित्य सभासे आजीवन सम्बन्धित थे; दो वर्ष साहित्य सभाके सभापति भी रह चुके थे। सम्बर्धनाके उत्तरमें आध्यात्मिक भावनासे प्रेरित होकर उद्दीप्त भाषणके द्वारा फुकनने असमवासियोंके प्रति अपनी अन्तिम वाणी सुनाई तथा कृतज्ञतासे सिर नवाया। हीरकजयन्ती उत्सव समितिके अध्यक्ष थे—देवप्रसाद बरुवा और सचिवका दायित्व बहन किया था श्रीमती अवला गोहाइने। उत्सवके अन्तमें सांस्कृतिक समारोह भी हुआ।

हीरक जयन्तीके उपलक्षमें निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गईं। १—असम साहित्य सभार सुवचनी [पहले सम्मिलनसे ४४ वाँ सम्मिलनतक अध्यक्षोंके भाषणोंसे विशेष उद्धृतियोंका संकलन, प्रधान और सहायक सचिव द्वारा सम्पादित] २—असम साहित्य सभार रूपलेखा [साहित्य सभाका इतिवृत्त विषयक ग्रन्थ, लेखक—अतुलचन्द्र हाजरिका] ३—असम साहित्य सभार प्रकाशनर वर्णनामूलक तालिका [ई० १९२७ से १९७७ के बीच साहित्य सभा द्वारा प्रकाशित १४८ ग्रन्थोंकी विषयवस्तु सहित तालिका, सम्पादक—

यतीन्द्र नाथ गोस्वामी] ४—असम साहित्य सभाका अभिलेख [साहित्य सभाके कार्यपालिकाके विशेष सिद्धान्त तथा कार्योंका परिचय यहाँ दिया गया है। सम्पादन कार्य प्रधान सचिव आब्दुल छात्तार और सहायक सचिव वसन्तकुमार गोस्वामीने किया]
५—असम साहित्य सभार शाखा सभार परिचय [असम साहित्य सभाकी शाखा और स्वीकृत सभाओं तथा आजीवन सदस्योंका परिचयात्मक पुस्तक, संकलन किया है - प्रधान सचिव अब्दुल छात्तारने]

इनके अतिरिक्त 'असम साहित्य सभाका इतिवृत्त' हिन्दीमें प्रकाशनकी व्यवस्था की गई ; पर हीरक जयन्ती उत्सवके समयतक वह काम पूरा न हुआ। अतः बादको करना पड़ा। असम साहित्य सभा पत्रिकामें प्रकाशित २५ निबन्धोंका एक संकलन प्राक्तन प्रधान सचिव नगेन शइकीयाने किया ; पर उसका भी प्रकाशन तबतक सम्भव न हुआ।

ई० १९७७ के २६, २७ दिसम्बरसे १९७८ के २६, २७ दिसम्बर तक एक वर्ष हीरक जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है। अतः इसके बीचमें गोलाघाटमें जो ४५ वाँ सम्मिलन हुआ, वहाँभी हीरक जयन्ती वर्षका सम्मिलन हुआ। इस सम्मिलनमें नई कार्यपालिका बनी। उसका कार्यकाल १९७९ तक है। अतः अब तक असम साहित्य सभाने जो काम किया है, वही हमारी पुस्तक का विषय है। १९१७ के पहले सम्मिलनसे अबतक जो प्रगति असम साहित्य सभाकी हुई है, उसका चित्र यहाँ भरसक उपस्थित किया गया है। नई कार्यपालिका जरूर पहलेकी त्रुटियोंसे अपनेको बचाकर आगे बढ़नेकी चेष्टा करेगी।

उपसंहार :—ई०, सन् १९७७ तक असम साहित्य सभाकी ४९२ शाखा सभाएँ बनीं। उनके अतिरिक्त १८ स्वीकृत सभाएँ हैं। एक शाखा सभा उड़ीसा राज्यमें भी है। आजीवन सदस्योंकी

संख्या अबतक ८४४ और साधारण सदस्योंकी संख्या करीब ४२ हजार हैं। सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकोंकी संख्या अबतक [दिसम्बर १९७७ तक] १४८ हैं। मार्च १९७८ तक और १०।१२ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। ई० १९२९ से 'असम साहित्य सभा पत्रिका' भी चालू है। ये सब कुछ होते हुए भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि साहित्य सभाने अबतक बहुत करनेयोग्य काम नहीं किया है। इस प्रसंगमें हीरकजयन्ती उत्सवके अवसरपर मूलसभाके अध्यक्ष सैयद आब्दुल मालिकके अभिभाषणकी उक्तिसे ही हम भी अपना विचार इस प्रकार व्यक्त करना चाहते हैं—"खेदकी बात है कि—आज भी असम साहित्य-सभा सरकारके अनुदानपर निर्भरशील है। असमके लेखकोंके मौलिक ग्रन्थ, शोधग्रन्थ, अनूदित ग्रन्थ आदिके प्रकाशनके लिए यथायोग्य व्यवस्था साहित्य सभाके द्वारा आजतक नहीं हुई। उसके लिए आवश्यकीय आर्थिक बल साहित्य सभाको अबतक नहीं मिला। सभाका एक अपना अच्छा मुद्रण यन्त्र भी नहीं है। नई साहित्यधाराकी सृष्टिमें भी साहित्य सभाने अंशग्रहण नहीं किया। समाजकेलिए अहितकर अपसाहित्यके प्रसार तथा प्रचारके विरोधमें भी सबल आन्दोलनका प्रयास साहित्य-सभाने अबतक नहीं किया। × × × निस्वार्थ भावसे प्रेरित होकर साहित्य-सृष्टिमें आत्मनियोगके लिए लेखकोंको जैसा वातावरण चाहिए, वैसा वातावरण भी साहित्य सभाके द्वारा सृष्टि करना आजतक सम्भव नहीं हुआ *।" आशा है—सभाके सभापतिके इस स्वीकारोक्तिके बाद असम साहित्य सभा इन कमियोंको दूर कर नई प्रेरणासे प्रेरित होकर आगे बढ़नेका प्रयास करेगी।

* सभापतिके भाषण की असमीया उक्तिका हिन्दी भावानुवाद दिया गया है।